



भारत का राजपत्र The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 45]
No. 45]

नई दिल्ली, शनिवार, नवम्बर 9, 1985/कार्तिक 18, 1907
NEW DELHI, SATURDAY, NOVEMBER 9, 1985/KARTIKA 18, 1907

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (II) PART II—Section 3—Sub-section (II)

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों द्वारा जारी किये गये सार्वजनिक आदेश और अधिसूचनाएं
Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the
Ministry of Defence)

कामिक और प्रशिक्षण, प्रशासनिक सुधार
और लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय
(कामिक और प्रशिक्षण विभाग)
नई दिल्ली, 28 अक्टूबर, 1985

का. अ. 5137.—केन्द्रीय सरकार, सरकारी स्थान (अप्राधिकृत अधि-
चोरीयों की वेदखली) अधिनियम, 1971 (1971 का 40) की धारा
3 द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, नीचे सारणी के स्तम्भ (1)
में वर्णित अधिकारियों की, जो सरकार के राजपत्रित अधिकारी की पंक्ति
के समतुल्य अधिकारी हैं, उक्त अधिनियम के प्रयोजनों के लिए संपदा
अधिकारी नियुक्त करती है, जो उक्त सारणी के स्तम्भ (2) में विनि-
विष्ट सरकारी स्थानों की बाबत अपनी अपनी अधिकारिता की स्थानीय
सीमाओं के भीतर उक्त अधिनियम द्वारा या उसके अधीन संपदा अधि-
कारियों को प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग और उन पर अधिरोपित कर्तव्यों
का पालन करेंगे।

सारणी

अधिकारी का पदनाम	सरकारी स्थानों के प्रभु और अधिकारिता की स्थानीय सीमाएं
(1)	(2)
1- पुलिस अधीक्षक मुख्या- लय, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो मुख्य कार्यालय	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधि- ग्रहीत किए गए ऐसे सरकारी स्थान जो संघ राज्य क्षेत्र दिल्ली के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।

1	2
2- पुलिस अधीक्षक काबी- गुडा, हैदराबाद	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिये गए या अधिग्रहीत किए गए ऐसे सरकारी स्थान जो बांध प्रदेश राज्य के भीतर, विशाखापट्टनम शाखा के सामने वर्णित क्षेत्रों को छोड़कर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।
3- पुलिस अधीक्षक शिलांग	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहीत किये गये ऐसे सरकारी स्थान जो अरुणाचल प्रदेश संघ राज्य क्षेत्र और मणिपुर तथा त्रिपुरा राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।
4- पुलिस अधीक्षक, कोचीन	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहीत किये गये ऐसे सरकारी स्थान जो केरल राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।
5- पुलिस अधीक्षक कलकत्ता	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहीत किए गए ऐसे सरकारी स्थान जो पश्चिमी बंगाल राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।

(1)	(2)
6- पुलिस अधीक्षक, भुवने- श्वर	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधि- ग्रहित किये गए सरकारी स्थान जो राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।
7- पुलिस अधीक्षक, बिशाखापट्टनम	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिये गये या अधिग्रहित किये गये ऐसे सरकारी स्थान जो आन्ध्र प्रदेश राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।
8- पुलिस अधीक्षक, बंगलौर	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधि- ग्रहित किये गये ऐसे सरकारी स्थान जो कर्नाटक राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।
9- पुलिस अधीक्षक, मन्नार	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधि- ग्रहित किये गये ऐसे सरकारी स्थान जो तमिल नाडु राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।
10- पुलिस अधीक्षक, बीनगर	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिये गये या अधि- ग्रहित किये गये ऐसे सरकारी स्थान जो जम्मू कश्मीर राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।
11- पुलिस अधीक्षक, सिलचर	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधि- ग्रहित किये गये ऐसे सरकारी स्थान जो अरुणाचल प्रदेश संघ राज्य क्षेत्र और मणिपुर और त्रिपुरा राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।
12- पुलिस उप-अधीक्षक, राउरकेला।	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहित किये गए ऐसे सरकारी स्थान जो उड़ीसा के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।
13- पुलिस अधीक्षक, सिलीगुडी	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधि- ग्रहित किए गए ऐसे सरकारी स्थान जो पश्चिमी बंगाल राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।
14- पुलिस उप-अधीक्षक, जम्मू यूनिट।	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहित किये गए ऐसे सरकारी स्थान जो जम्मू- कश्मीर राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।
15- पुलिस उप-अधीक्षक, हंफाल	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधिग्रहित किये गए ऐसे सरकारी स्थान जो अरुणाचल संघ राज्य क्षेत्र और मणिपुर और त्रिपुरा राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।

(1)	(2)
16- पुलिस उप-अधीक्षक, मोहाटी।	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के या उसके द्वारा या उसकी ओर से पट्टे पर लिए गए या अधि- ग्रहित किये गये ऐसे सरकारी स्थान जो असम राज्य के भीतर केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं।

[सं. 204/6/84- ए. पी. जी. (II)]

के. जी. गोयल, उप सचिव

MINISTRY OF PERSONNEL AND TRAINING, ADMINISTRATIVE REFORMS AND PUBLIC GRIEVANCES AND PENSION

(Department of Personnel & Training)
New Delhi, the 28th October, 1985

S.O. 5137.—In exercise of the powers conferred by section 3 of the Public Premises (Eviction of Unauthorised Occupants) Act, 1971 (40 of 1971), the Central Government hereby appoints the Officers mentioned in column (1) of the Table below, being the officers equivalent to the rank of a gazetted officer of Government to be estate officers for the purposes of the said Act who shall exercise the powers conferred and perform the duties imposed on estate officers by or under the said Act within the local limits of their respective jurisdiction in respect of the public premises specified in column (2) of the said Table.

TABLE

Designation of the Officer.	Categories of public premises and local limits of jurisdiction
1	2
1. SP, Headquarters, CBI, Head Office.	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the Union Territory of Delhi.
2. SP, Kachiguda, Hyderabad.	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation which are under the administrative control of the CBI within the State of Andhra Pradesh excluding the areas mentioned against Vishakapatnam Branch.

1	2	1	2
3. SP, Shillong	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of the CBI within the Union Territory of Arunachal Pradesh and State of Manipur and Tripura.	9. SP, Madras	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of Tamil Nadu.
4. SP, Cochin	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of Kerala.	10. SP, Sri Nvagar	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of Jammu & Kashmir.
5. SP, Calcutta	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of West Bengal.	11. SP, Silchar	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the Union Territory of Arunachal Pradesh and State of Manipur & Tripura.
6. SP, Bhubaneswar	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of Orissa.	12. DSP, Rourkela	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of Orissa.
7. SP, Vishakapatnam	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of Andhra Pradesh.	13. DSP, Siliguri	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of West Bengal.
8. SP, Bangalore	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of Karnataka.	14. DSP, Jammu Unit	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the State of J. & K.

1	2	3
15. DSP, Imphal	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the administrative control of CBI within the Union Territory of Arunachal Pradesh and State of Manipur and Tripura.	
16. DSP, Gauhati	Public premises belonging to or taken on lease or requisitioned by or on behalf of Central Bureau of Investigation and which are under the Administrative control of CBI within the State of Assam.	

[No. 204/6/84-AVD.II]
K. G. GOYAL, Dy. Secy.

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

नई दिल्ली, 30 सितम्बर, 1985

आयकर

का. आ. 5138—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 10 के खंड (23ग) के उपखंड (v) द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा उक्त धारा के प्रयोजनार्थ, "श्री महालिंगस्वामी देवस्थानम्, तिरुविदेमरूर" को कर-निर्धारण वर्ष 1980-81 से 1982-83 तक के अन्तर्गत आने वाली अवधि के लिए अधिसूचित करती है।

[सं. 6448/का. सं. 197/125/85-आ.क. (नि-I)]

आर. के. तिवारी, अवर सचिव

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

New Delhi, the 30th September, 1985

INCOME-TAX

S.O. 5138.—In exercise of the powers conferred by sub-clause (v) of clause (23C) of Section 10 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Government hereby notifies "Sri Mahalingaswami Devasthanam, Thiruvaidaimarur" for the purpose of the said section for the period covered by the assessment years 1980-81 to 1982-83.

[No. 6448/F. No. 197/125/85-IT(AI)]

R. K. TEWARI, Under Secy.

नई दिल्ली, 10 सितम्बर, 1985

आयकर

का. आ. 5139.—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 2 के खंड (44) के उपखंड (III) का अनुसरण करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा नीचे स्तम्भ 3 में उल्लिखित अधिसूचना का आंगिक संशोधन करते हुए नीचे स्तम्भ 2 में उल्लिखित कर वसूली अधिकारी के स्थान पर नीचे स्तम्भ 1 में उल्लिखित व्यक्ति को, जो केन्द्रीय सरकार के राजपत्रित अधिकारी है, उक्त अधिनियम के अन्तर्गत कर वसूली अधिकारी (अधिकारियों) की शक्तियों का प्रयोग करने के लिए प्राधिकृत करती है।—

उन व्यक्तियों के नाम जिन्हें कर वसूली अधिकारी (अधिकारियों) की शक्तियों का प्रयोग करने के लिए प्राधिकृत किया जाना है	उन कर वसूली अधिकारी (अधिकारियों) के नाम जिनके स्थान पर स्तम्भ 1 में उल्लिखित व्यक्तियों को प्राधिकृत किया जाना है	पुरानी अधिसूचना की संख्या और तारीख जिसके अन्तर्गत स्तम्भ 2 में उल्लिखित कर वसूली अधिकारी अधिसूचित किये गये थे
---	---	---

1	2	3
श्री जी० कृष्णमूर्ति	श्री एम० पी० लक्ष्मी-कांतन	सं० 6184/का० सं० 398/8/85-आ० क० (ब०) दिनांक 10-4-1985.

2. यह अधिसूचना तत्काल लागू होगी और जहाँ तक स्तम्भ 1 में उल्लिखित व्यक्ति का संबंध है, यह अधिसूचना उनके द्वारा कर वसूलो अधिकारों के रूप में कार्यभार ग्रहण किये जाने की तारीख से लागू होगी।

[सं० 6416/का० सं० 398/8/85-आ० क० (ब०)]

बी० ई० अलेक्जेंडर, अवर सचिव,

New Delhi, the 10th September, 1985

INCOME-TAX

S.O. 5139.—In pursuance of sub-clause (iii) of clause (44) of section 2 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) the Central Government hereby authorises the person mentioned below column 1, being the Gazetted Officers of the Central Govt. to exercise the powers of Tax Recovery Officer(s) under the said Act in place of the Tax Recovery Officers mentioned below in column 2 in partial modification of the Notification mentioned below in column 3 :

Name of the persons to be authorised to exercise powers of Tax Recovery Officer(s)	Name of Tax Recovery Officer(s) in place of whom the persons mentioned in column one are to be authorised	Old Notification No. and date under which T.R.O. mentioned in Column 2 was notified
--	---	---

1	2	3
Shri G. Krishna-moorthy	Sh. M.V. Lakshmi-mikanathan	No. 6184/F. No. 398/1/85-IT(B) dt. 10-4-85.

2. This Notifications shall come into force with immediate effect and in so far as persons mentioned in column 2 from the date(s) take over charge(s) as Tax Recovery Officers.

[No. 6416/F. No. 398/8/85-IT(B)]

B. E. ALEXANDER, Under Secy.

नई दिल्ली, 15 अक्टूबर, 1985

प्रधान कार्यालय संस्थापन

का. आ. 5140.—केन्द्रीय राजस्व बोर्ड अधिनियम, 1963 (1963 का संख्याक 54) की धारा 3 की उपधारा (2) द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा अधिस्तरीय राजस्व

सेवा (आयकर) के अधिकारी श्री हीरा सिंह को, जो पिछले दिनों पटना में आयकर आयुक्त के पद पर तैनात थे, 3 अक्टूबर, 1985 को अपराज से केन्द्रीय प्रत्यक्ष-कर बोर्ड के सदस्य के रूप में नियुक्त करती है।

[फा० सं० ए-19011/11/85-प्रशा०-I]

जे० एम० त्रेहन, अवर सचिव

New Delhi, the 15th October, 1985

HEADQUARTERS ESTABLISHMENT

S.O. 5140.—In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of Section 3 of the Central Boards of Revenue Act, 1963 (No. 54 of 1963), the Central Government hereby appoints Shri Hira Singh, an officer of the Indian Revenue Service (Income-tax), Patna, as Member of the Central Board of Direct Taxes with effect from the afternoon of the 3rd October, 1985.

[F. No. A-19011/11/85-Adm. I]

J. M. TREHAN, Under Secy.

केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

नई दिल्ली, 20 सितम्बर, 1985

आयकर

का.आ. 5141.—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 121क की उप-धारा (1); धन कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) की धारा 9क; धन कर अधिनियम, 1958 (1958 का 18) की धारा 8क द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और इस संबंध में पूर्ववर्ती सभी अधिसूचनाओं का अधिसूचना करते हुए केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड एतद्वारा निदेश देता है कि नीचे दी गई अनुसूची के स्तम्भ (1) में विनिर्दिष्ट अधिकार क्षेत्रों के आयकर आयुक्त (अपील) अनुसूची के स्तम्भ (2) और (3) की तत्संबंधी प्रविष्टियों में विनिर्दिष्ट आयकर धाबों, परिमंडलों, जिलों और रेंजों में ऐसे व्यक्तियों के संबंध में कार्य करेंगे जिन पर आयकर या अतिकर या ब्याजकर या होटल प्राप्त कर या धन कर और धन कर लगाया गया हो और जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 246 की उप-धारा (2) के खंड "क" से "ज" में; कंपना (लाभ) अतिकर अधिनियम, 1964 (1964 का 7) की धारा 11 की उप-धारा (1) में; ब्याज कर अधिनियम, 1974 (1974 का 45) की धारा 15 की उप-धारा (1) में; अनिवार्य जमा योजना (आयकर वासा) अधिनियम, 1974 (1974 का 38) की धारा 12 की उप-धारा (2) में; होटल प्राप्त कर अधिनियम, 1980 (1980 का 54) की धारा 18 की उप-धारा (1) में; धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) की धारा 23 की उप-धारा (1क) के खंड (क) से (घ) में; धनकर अधिनियम, 1958 (1958 का 18) की धारा 22 की उप-धारा (1क) के खंड (क) से (घ) में उल्लिखित किसी भी आदेश से व्यपित हुए हैं और ऐसे व्यक्तियों के वर्गों की बाबत भी कार्य करेंगे जिनके लिए बोर्ड ने आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 246 की उप-धारा (2) के खंड (1); धन कर अधिनियम, 1957 की धारा 23 की उप-धारा (1क) के खंड (ड.) और धन कर अधिनियम, 1958 की धारा 22 की उप-धारा (1क) के खंड (डू०) के उपबंधों के अनुसार निदेश दिया है या भविष्य में निदेश दें।

अनुसूची

अधिकार-क्षेत्र और प्रधान कार्यालय	आयकर धाबें तथा परिमंडल, निरीक्षी सहायक आयुक्त (कर-निर्धारण)	निरीक्षी सहायक आयुक्त (अपील)
1	2	3
1. आयकर आयुक्त (अपील)-1, बंगलौर	1. कंपनी परिमंडल-I और III, बंगलौर	नि०सं०आ०, रेंज- V, बंगलौर

1	2	3
	2. कंपनी परिमंडल-VII, बंगलौर	नि०सं०आ०, रेंज-VII, बंगलौर
	3. नि०सं०आ०, रेंज-VI (कर-निर्धारण) बंगलौर	
	4. नि०सं०आ०, कर-निर्धारण-I, बंगलौर	नि०सं०आ०, कर-निर्धारण-I, बंगलौर
	5. नि०सं०आ० (केन्द्रीय), कर-निर्धारण, बंगलौर	नि०सं०आ० (केन्द्रीय) (कर-निर्धारण), बंगलौर
	6. केन्द्रीय परिमंडल-I, II तथा III, बंगलौर	नि०सं०आ० (केन्द्रीय), बंगलौर
	7. बेतन परिमंडल, बंगलौर	नि०सं०आ० रेंज (III) बंगलौर
	8. व्यास परिमंडल, बंगलौर	
	9. फिल्म परिमंडल, बंगलौर	
	10. मैसूर परिमंडल, मैसूर	नि०सं०आ०, मैसूर रेंज
2. आयकर आयुक्त (अपील)-II, बंगलौर	1. नि०सं०आ०, कर-निर्धारण-II, बंगलौर	नि०सं०आ०, कर-निर्धारण-II, बंगलौर
	2. नि०सं०आ०, रेंज-V (कर-निर्धारण), बंगलौर	नि०सं०आ०, रेंज-V, बंगलौर
	3. कंपनी परिमंडल-II तथा IV बंगलौर	
	4. विदेश अनुभाष, बंगलौर	नि०सं०आ०, रेंज-VI बंगलौर
	5. हसन परिमंडल, हसन	नि०सं०आ०, मैसूर रेंज
	6. माण्ड्या परिमंडल, माण्ड्या	"
	7. शिमोगा परिमंडल, शिमोगा	"
	8. तुमकूर परिमंडल, तुमकूर	"
	9. चिकमनगलूर परिमंडल, चिकमनगलूर	नि०सं०आ०, मंगलौर रेंज
	10. मंगलौर परिमंडल, मंगलौर	"
	11. उर्वीपी परिमंडल, उर्वीपी	"
	12. केन्द्रीय परिमंडल, IV तथा V, बंगलौर	नि०सं०आ० (केन्द्रीय), बंगलौर
	13. परिमंडल II, बंगलौर	नि०सं०आ०, रेंज-II, बंगलौर

1	2	3	1	2	3
2. आयकर आयुक्त (अपील)-II, बंगलौर ज़ारी	14. कोलार परिमंडल, कोलार	नि०स०आ०, रेंज-II बंगलौर	7. पणजी परिमंडल, पणजी	वि.वा.आ., गोंया रेंज, पणजी	
	15. गडग परिमंडल, गडग	नि०स०आ०, धारवाड रेंज	8. मार्गांधो परिमंडल, मार्गांधो	"	
	16. रायचूर परिमंडल, रायचूर	नि०स०आ०, बेलगाम रेंज	टिप्पणी :— सम्पदा-शुल्क अधिनियम, 1953 (1953 का 34) की धारा 4 की उपधारा (2क) द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार ने आयकर आयुक्त (अपील-II) बंगलौर को 3 जनवरी, 1983 से सम्पदा शुल्क अपीलीय नियंत्रक, बंगलौर नियुक्त किया है (देखिए 28-12-1982 की-अधि-सूचना सं० 57/82-सं० शु०-फा० सं० 307/11/82-सं०) केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, नई दिल्ली द्वारा जारी किए गए दिनांक 28-12-1982 की अधिसूचना सं० 58/82-फा० सं० 307/11/83 सं. शु. के अनुसार, 3-1-1983 से सम्पदा शुल्क नियंत्रक बंगलौर क्षेत्राधिकार के भीतर आने वाले सभी सम्पदा शुल्क सहायक नियंत्रकों द्वारा पारित आवेशों के खिलाफ सम्पदा शुल्क अपीलों पर अपीलीय नियंत्रक, सम्पदा शुल्क, बंगलौर का क्षेत्राधिकार होगा।		
3. आयकर आयुक्त (अपील)-III, बंगलौर	1. नि.स.आ. (जांच), बंगलौर	नि.स.आ. (जांच) बंगलौर			
	2. कंपनी परिमंडल-V तथा VI, बंगलौर	नि.स.आ. रेंज-VI बंगलौर			
	3. सर्वेक्षण परिमंडल, बंगलौर	"			
	4. जांच परिमंडल	नि.स.आ. (जांच), बंगलौर			
	5. परिमंडल-IV, बंगलौर	नि.स.आ., रेंज-IV, बंगलौर			
	6. परिमंडल-I, बंगलौर	नि.स.आ., रेंज-1, बंगलौर			
	7. परिमंडल-III, बंगलौर	नि.स.आ. रेंज-I III, बंगलौर			
	8. होस्पेट परिमंडल, होस्पेट	नि.स.आ., धारवाड रेंज			
	9. बेलगाम रेंज, बंगलौर	नि.स.आ., धारवाड रेंज			
	10. वावणगेरे परिमंडल, वावणगेरे	"			
	11. चिचदुर्ग परिमंडल, चिचदुर्ग	"			
	12. गुलबर्ग परिमंडल, गुलबर्ग	नि.स.आ., बेलगाम रेंज			
	13. कर्ग परिमंडल, मेरकारा	नि.स.आ. मंगलौर रेंज			
4. आयकर आयुक्त (अपील) बेलगाम	1. बेलगाम परिमंडल, बेलगाम	नि.स.आ., बेलगाम	2. जहाँ कोई आयकर परिमंडल, वाई अथवा जिला अथवा उसका कोई भाग इस अधिसूचना द्वारा एक अधिकार-क्षेत्र से किसी अन्य अधिकार क्षेत्र में अंतर्गत कर दिया गया है, वहाँ उस आयकर परिमंडल, वाई अथवा जिला अथवा उसके किसी भाग में किए किए गए कर-निर्धारणों से उत्पन्न होने वाली और इस अधिसूचना की तारीख से तत्काल पूर्व उस अधिकार-क्षेत्र के आयकर आयुक्त (अपील) के समक्ष विचाराधीन पड़ी अपीलों जिसके अधिकार क्षेत्र से वह आयकर परिमंडल, वाई अथवा जिला अथवा उसका कोई भाग अंतर्गत किया गया है, इस अधिसूचना के लागू होने की तारीख से उस आयकर आयुक्त (अपील) के अधिकार-क्षेत्र को अंतर्गत की जाएगी और उसके द्वारा निपटायी जाएगी जिसके अधिकार क्षेत्र में उक्त परिमंडल, वाई अथवा जिला अथवा उसका कोई भाग अंतर्गत कर दिया गया है।		
	2. ब. जापुर परिमंडल, बीजापुर	नि.स.आ. बेलगाम			
	3. भागलकोट परिमंडल, भागलकोट	"			
	4. हुबली परिमंडल, हुबली	नि.स.आ. धारवाड रेंज			
	5. धारवाड परिमंडल, धारवाड	"			
	6. करवाड परिमंडल, करवाड	नि.स. आ., गोआ रेंज, पणजी	3. यह अधिसूचना 1-10-1985 से लागू होगी।		

[सं. 6434/फा.स. 261/13/85-आ.क. ग्या.]

सुरेन्द्र पाल, अवर सचिव केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES

New Delhi, the 20th September, 1985

INCOME-TAX

S.O.5141—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 121A of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) section 9A of the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957); section 8A of the Gift-tax Act, 1958 (18 of 1958), and in supersession of all previous notifications in this regard, the Central Board of Direct Taxes hereby directs that the Commissioners of Income-tax (Appeals) of the charges specified in column (1) of the Schedule below, shall perform their functions in respect of such persons assessed to Income-tax or Surtax or Interest-tax or Hotel Receipt Tax or Wealth-tax and Gift-tax in the Income-tax Wards, Circles, Districts and Ranges specified in the corresponding entries in columns (2) and (3) thereof as are aggrieved by any of the orders mentioned in Clauses (a) to (h) of sub-section (2) of section 246 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961); in sub-section (1) of section 11 of the Companies (Profits) Surtax Act, 1964 (7 of 1964); in sub-section (1) of section 15 of the Interest Tax Act, 1974 (45 of

1974); in sub-section (2) of section 12 of Compulsory Deposit Scheme (I.T. Payers) Act 1974 (38 of 1974); in sub-section (1) of section 18 of Hotel Receipts Tax Act 1980 (54 of 1980) in clauses (a) to (d) of sub-section (1A) of section 23 of Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957); in clauses (a) to (d) of sub-section (1A) of section 22 of the Gift-tax Act, 1958 (18 of 1958) and also in respect of such persons or clauses of persons the Board has directed or may direct in future in accordance with the provisions of clause (i) of sub-section (2) of section 246 of the Income-tax Act, 1961; clause (e) of sub-section (1A) of section 23 of the Wealth-tax Act, 1957; and clause (e) of sub-section (1A) of section 22 of the Gift-tax Act, 1958.

SCHEDULE

Charges with Headquarters	Income-tax Wards & Circles Inspecting Assistant Commissioner (Assessment)	Range of I.A.C./I.T.
1	2	3
1. Commissioner of Income-tax (Appeals)-I, Bangalore.	1. Company Circle-I & III, Bangalore 2. Company Circle-VII, Bangalore 3. IAC, Range-VI (Assessment), Bangalore. 4. IAC, Assessment-I, Bangalore. 5. IAC (C), Assessment, Bangalore. 6. Central Circles-I, II & III, Bangalore. 7. Salary Circle, Bangalore. 8. Trust Circle, Bangalore. 9. Film Circle, Bangalore. 10. Mysore Circle, Mysore.	IAC, Range-V, Bangalore. IAC, Range-VI, Bangalore " IAC, Assessment-I, Bangalore. IAC (C) (Asst.) Bangalore. IAC (C), Bangalore. IAC, Range-III, Bangalore. " " IAC, Mysore Range.
2. Commissioner of Income-tax (Appeals)-II, Bangalore.	1. IAC, Assessment-II, Bangalore. 2. IAC, Range-V (Assessment) Bangalore. 3. Company Circle-II & IV, Bangalore. 4. Foreign Section, Bangalore. 5. Hassan Circle, Hassan 6. Mandya Circle, Mandya 7. Shimoga Circle, Shimoga	IAC, Assessment-II, Bangalore. IAC, Range-V Bangalore. " IAC, Range-VI, Bangalore, IAC, Mysore Range. " "

1	2	
2. Commissioner of Income-tax (Appeals) II Bangalore (Contd.)	8. Tumkur Circle, Tumkur 9. Chickmangalur Circle, Chickmangalur 10. Mangalore Circle, Mangalore 11. Udupi Circle, Udupi 12. Central Circle-IV & V, Bangalore. 13. Circle-II, Bangalore. 14. Kolar Circle, Kolar 15. Gadag Circle, Gadag 16. Raichur Circle, Raichur 17. ED cum I.T. Circle, Bangalore (IT/W.T./G.T. cases)	IAC Mysore Rang IAC, Mangalore Range. " " IAC (C), Bangalore. IAC, Range-II, Bangalore. " IAC, Dharwar Range. IAC, Belga Range. IAC, Range IV, Bangalore. IAC (Inv), Bangalore IAC, Range-VI, Bangalore " IAC, (Investigation) Bangalore. IAC, Range IV, Bangalore. IAC, Range-I, Bangalore. IAC, Range-III, Bangalore. IAC, Dharwar Range " " IAC, Belgaum Range IAC, Mangalore Range. IAC, Belgaum " " IAC, Dharwar Range. " IAC, Goa Range, Panaji.
3. Commissioner of Income-tax (Appeals)-III, Bangalore	1. IAC (Inv), Bangalore 2. Company Circle-V and VI Bangalore 3. Survey Circles, Bangalore 4. Investigation Circles 5. Circle-V, Bangalore 6. Circle-I, Bangalore 7. Circle-III, Bangalore 8. Hospet Circle, Hospet 9. Bellary Range, Bangalore 10. Davanagere Circle, Davanagere 11. Chitradurga Circle, Chitradurga 12. Gulbarga Circle, Gulbarga 13. Coorg Circle, Mercara 4. Commissioner of Income-tax (Appeals), Belgaum.	IAC (Inv), B'lore IAC, Range-VI, Bangalore " IAC, (Investigation) Bangalore. IAC, Range IV, Bangalore. IAC, Range-I, Bangalore. IAC, Range-III, Bangalore. IAC, Dharwar Range " " IAC, Belgaum Range IAC, Mangalore Range. IAC, Belgaum " " IAC, Dharwar Range. " IAC, Goa Range, Panaji.
4. Commissioner of Income-tax (Appeals), Belgaum.	1. Belgaum Circle, Belgaum 2. Bijapur Circle, Bijapur 3. Bagalkot Circle, Bagalkot 4. Hubli Circle, Hubli 5. Dharwar Circle, Dharwar 6. Karwar Circle, Karwar	IAC, Belgaum " " IAC, Dharwar Range. " IAC, Goa Range, Panaji.

1	2	3
4. Commissioner of Income-Tax (Appeals) Belgaum (Contd.)	7. Panaji Circle, Panaji	IAC, Goa Range, Panaji.
	8. Margao Circle, Margao	"

NOTE :— In exercise of the powers conferred by sub-section (2A) of section 4 of the Estate Duty Act, 1953 (3 of 1953), the Central Government has appointed the Commissioner of Income-tax (Appeals-III) Bangalore, the Appellate Controller of Estate Duty, Bangalore with effect from 3-1-1983 (vide Notification No. 58/52 ED-F. No. 307/11/82-ED dated 28-12-82). As per notification No. 59/82-F. No. 307/11/82-ED dated 28-12-82, issued by Central Board of Direct Taxes, New Delhi the Appellate Controller of Estate Duty, Bangalore will have jurisdiction over Estate Duty appeals against orders passed by all Assistant Controllers of Estate Duty, within the jurisdiction of the Controller of Estate Duty, Bangalore with effect from 3-1-1983.

2. Whereas an Income-tax Circle, Ward or District or part thereof stands transferred by this notification from one charge to another charge, appeals arising out of the assessments made in the Income-tax Circle, Ward or District or part thereof and pending immediately before the date of this notification before the Commissioner or Income-tax (Appeals) of the charge from whom the Income-tax Circle, Ward or District or part thereof is transferred, shall from the date this notification takes effect be transferred to and dealt with by the Commissioner of Income-tax (Appeals) of the charge to whom the said Circles, Wards or Districts or part thereof is transferred.

3. This notification shall take effect from 1-10-1985.

[No. 6434 (F. No. 261/13/85 ITJ)]

SURENDER PAUL, Under Secy.
Central Board of Direct Taxes

नई दिल्ली, 24 सितम्बर, 1985

आयकर

क्र.आ. 5142.—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 121 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड एतद्वारा दिनांक 1-3-1984 की अपनी अधिसूचना सं. 5675/क्र. सं. 187/41/81-आ. क. (नि.-I) में निम्नलिखित संशोधन करता है।

2. कालम 3 में ग के सामने क्रम सं. 2 पर उल्लिखित विशेष परिमंडल-6 कलकत्ता तथा विशेष परिमंडल-7 कलकत्ता समाप्त किये जाते हैं।

यह अधिसूचना 3-10-1985 से प्रभावी होगी।

[सं. 6444/क्र. सं. 187/9/85-आ. क. (नि.-I)]

New Delhi, the 24th September, 1985

INCOME-TAX

S.O. 5142.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 121 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Board of Direct Taxes hereby makes the following amendment to its Notification No. 5675 dated 1st March, 1984 F. No. 187/41/81-IT(AI).

2. Special Circle-VI, Calcutta and Special Circle-VII, Calcutta appearing at S. No. 2 against C in column 3 are abolished.

This notification shall take effect from 3rd October, 1985.

[No. 6444/F. No. 187/9/85-IT(AI)]

नई दिल्ली, 1 नवम्बर, 1985

आदेश

क्र.आ. 5143.—भारत सरकार के संयुक्त सचिव ने, जिसे विदेशी मुद्रा संरक्षण और तस्करी निवारण अधिनियम, 1974 (1974 का 52) की धारा 3 की उपधारा (1) के प्रचलित विनियम रूप से सशक्त किया गया है, उक्त उपधारा के प्रचलित आदेश क्र. सं. 673/62/85-सी. गु. VIII, तारीख 3-7-1985 को यह निदेश देते हुए जारी किया था कि श्री गुलाबचन्द पृथ्वीराज जैन, 56-करवर स्ट्रीट, बम्बई-400001 को केन्द्र जेल, बम्बई में निरुद्ध कर लिया जाए और अभिरक्षा में रखा जाए ताकि उसे विदेशी मुद्रा की संवृद्धि में बाधक किसी भी कार्य को करने से रोका जा सके।

2. केन्द्रीय सरकार के पास यह विश्वास करने का कारण है कि पूर्वोक्त व्यक्ति फरार हो गया है या अपने को छिपा रहा है जिससे उक्त आदेश का निष्पादन नहीं हो सके; और

3. अतः अब केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) के खंड (ख) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, एतद्वारा यह निदेश देता है कि पूर्वोक्त व्यक्ति इस आदेश के राजपत्र में प्रकाशन के 7 दिन के भीतर पंजित अग्र्युक्त, बम्बई को समक्ष हजरि हो।

[क्र. सं. 673/62/85-सी. गु. VIII]

New Delhi, the 1st November, 1985

ORDER

S.O. 5143.—Whereas the Joint Secretary to the Government of India, specially empowered under sub-section (1) of section 3 of the Conservation of Foreign Exchange and Prevention of Smuggling Activities Act, 1974 (52 of 1974) issued order F. No. 673/62/85-Cus. VIII, dated 3-7-1985 under the said sub-section directing that Shri Gulabchand Prithviraj Jain 56, Karwar Street, Bombay-400001 be detained and kept in custody in the Central Prison, Bombay with a view to preventing him from acting in any manner prejudicial to the augmentation of foreign exchange.

2. Whereas the Central Government has reason to believe that the aforesaid person has absconded or is concealing himself so that the order cannot be executed;

3. Now, therefore, in exercise of power conferred by clause (b) of sub-section (1) of section 7 of the said Act, the Central Government hereby directs the aforesaid person to appear before the Commissioner of Police, Bombay within 7 days of the publication of this order in the official gazette.

[F. No. 673/62/85-Cus.VIII]

क्र.आ. 5144.—भारत सरकार के संयुक्त सचिव ने, जिसे विदेशी मुद्रा संरक्षण और तस्करी निवारण अधिनियम, 1974 (1974 का 52) की धारा 3 की उपधारा (1) के प्रचलित विनियम रूप से सशक्त किया गया है, उक्त उपधारा के प्रचलित आदेश क्र. सं. 673/62/85-सी. गु. VIII, तारीख 12-7-1985 यह निदेश देते हुए जारी किया था कि श्री किरण ब्रजवन्त पारिख, मार्फत श्री भास्कर नानुवन्त शा, 111-बुज कुटीर नेविन सी रोड, बम्बई-400026 को केन्द्रीय जेल, बम्बई में निरुद्ध कर लिया जाए और अभिरक्षा में रखा जाए ताकि उसे विदेशी मुद्रा की संवृद्धि में बाधक किसी भी कार्य को करने से रोका जा सके।

2. केन्द्रीय सरकार के पास यह विश्वास करने का कारण है कि पूर्वोक्त व्यक्ति फरार हो गया है या अपने को छिपा रहा है जिससे उक्त आदेश का निष्पादन नहीं हो सके; और

3. अतः अब केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 7 की उप-धारा (1) के खण्ड (ख) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, एतद्वारा यह निर्देश देती है कि पूर्वोक्त व्यक्ति इस आदेश के राजपत्र में प्रकाशन के 7 दिनों के भीतर पुलिस प्रायुक्त, बम्बई के समक्ष हजरि हो।

[फा० सं० 673/65/85-सी० गु०-8]

S.O. 5144.—Whereas the Joint Secretary to the Government of India, specially empowered under sub-section (1) of section 3 of the Conservation of Foreign Exchange and Prevention of Smuggling Activities Act, 1974 (52 of 1974) issued order F. No. 673/65/85-Cus. VIII, dated 12-7-1985 under the said sub-section directing that Shri Kiran Vrajlal Parik, C/o Shri Bhaskar Bhanuvadan Shaw, 111, Brij Kuthir Napean Sea Road, Bombay-400026 be detained and kept in custody in the Central Prison, Bombay with a view to preventing him from acting in any manner prejudicial to the augmentation of foreign exchange.

2. Whereas the Central Government has reason to believe that the aforesaid person has absconded or is concealing himself so that the order cannot be executed;

3. Now, therefore, in exercise of power conferred by clause (b) of sub-section (1) of section 7 of the said Act, the Central Government hereby directs the aforesaid person to appear before the Commissioner of Police, Bombay within 7 days of the publication of this order in the official Gazette.

[F. No. 673/65/85-Cus.VIII]

का.सं० 6145.—भारत सरकार के संयुक्त सचिव ने, जिसे विदेशी मुद्रा संरक्षण और तस्करी निवारण अधिनियम, 1974 (1974 का 52) की धारा 3 की उपधारा (1) के अर्थात् विशेष रूप से सशक्त किया गया है, उक्त उप-धारा के अधीन आदेश का सं० 673/89/85-सी० गु०-8, तारीख 19-8-1985 यह निर्देश देते हुए जारी किया था कि श्री हरेश कुमार ओबराय, फ्लैट सं० 10, सोनिया अपार्टमेंट, 3rd फ्लोर, रोड सं० 9, विले पार्ले, बम्बई-400049 को केन्द्रीय जेल, बम्बई में निरुद्ध कर लिया जाए और अभिरक्षा में रखा जाए ताकि उसे विदेशी मुद्रा की संवर्धन में बाधक किसी भी कार्य को करने से रोका जा सके।

2. केन्द्रीय सरकार के पास यह विश्वास करने का कारण है कि पूर्वोक्त व्यक्ति फरार हो गया है या अपने को छिपा रहा है जिससे उक्त आदेश का निष्पादन नहीं हो सके, और

3. अतः अब केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 7 की उप-धारा (1) के खंड (ख) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, एतद्वारा यह निर्देश देती है कि पूर्वोक्त व्यक्ति इस आदेश के राजपत्र में प्रकाशन के 7 दिनों के भीतर पुलिस प्रायुक्त, बम्बई के समक्ष हजरि हो।

[फा० सं० 673/89/85-सी० गु०-8]

प्रार० के० निवारो, उपसचिव

S.O. 5145.—Whereas the Joint Secretary to the Government of India, specially empowered under sub-section (1) of section 3 of the Conservation of Foreign Exchange and Prevention of Smuggling Activities Act, 1974 (52 of 1974) issued order F. No. 673/89/85-Cus.VIII, dated 19-8-1985 under the said sub-section directing that Shri Haresh Kumar Oberai, Flat No. 10, Sonia Apartment, 3rd Floor, Road No. 9, Vile Parle, Bombay-400049 be detained and kept in custody in the Central Prison, Bombay with a view to preventing him from acting in any manner prejudicial to the augmentation of foreign exchange.

2. Whereas the Central Government has reason to believe that the aforesaid person has absconded or is concealing himself so that the order cannot be executed;

991 GI/85-2

3. Now, therefore, in exercise of power conferred by clause (b) of sub-section (1) of section 7 of the said Act, the Central Government hereby directs the aforesaid person to appear before the Commissioner of Police, Bombay within 7 days of the publication of this order in the official Gazette.

[F. No. 673/89/85-Cus.VIII]

R. K. TEWARI, Dy. Secy.

(अधिक कार्य विभाग)

(बैंकिंग प्रभाग)

नई दिल्ली, 31 अक्टूबर, 1985

का.सं० 5145.—केन्द्रीय सरकार, औद्योगिक वित्त निगम अधिनियम, 1948 (1948 का 15) की धारा 21 के उपधारा (2) के अनुसरण में, भारतीय औद्योगिक वित्त निगम के निदेशक बोर्ड की सिफारिश पर उक्त निगम द्वारा जारी किये जाने वाले 1 जनवरी, 1986 से 1 जनवरी, 1987 की अवधि वाले बांडों पर देय व्याज की दर, एतद्वारा, 10% (दस प्रतिशत) वार्षिक निर्धारित करनी है।

[फाइल सं० 2(25)/आई एफ आर्डी/85]

अमर सिंह, अवर सचिव

(Department of Economic Affairs)

(Banking Division)

New Delhi, the 31st October, 1985

S.O. 5146.—In pursuance of sub-section (2) of section 21 of the Industrial Finance Corporation Act, 1948 (15 of 1948), the Central Government, on the recommendations of the Board of Directors of the Industrial Finance Corporation of India, hereby, fixes 10 per cent (Ten per cent) per annum as the rate of interest payable on the bonds having currency during the period 1st January 1986 to 1st January 1987, to be issued by the said Corporation.

[F. No. 2(25)/IF/85]

AMAR SINGH, Under Secy.

(बीमा प्रभाग)

नई दिल्ली, 22 अक्टूबर, 1985

का० सं० 5167.—जीवन बीमा निगम अधिनियम, 1956 (1956 का 31) की धारा 4 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा श्री सी. आर. ठाकुर को भारतीय जीवन बीमा निगम में प्रबंध निदेशक के पद का कार्यभार ग्रहण करने की तारीख से उनके 9 अक्टूबर, 1987 (अपरान्ह) की सेवा निवृत्त होने तक की अवधि के लिए निगम के सदस्य में नियुक्त करती है।

[फा० सं० 108/3/85-इंश्योरेंस-4]

जी० एम० शुन्मुगम, अवर सचिव

(Insurance Division)

New Delhi, the 22nd October, 1985

S.O. 5147.—In exercise of the powers conferred by Section 4 of the Life Insurance Corporation Act, 1956 (31 of 1956), the Central Government hereby appoints Shri C. R. Thakore as Member of the Board of Life Insurance Corporation of India from the date of assumption of charge as Managing Director of the Corporation and till his superannuation on 9th October, 1987 (AN).

[File No. 108/3/85-Ins. IV]

G. M. SHUNMUGAM, Under Secy.

भारतीय रिजर्व बैंक
(ग्राम.ण. आयोजना और ऋण विभाग)

केन्द्रीय कार्यालय

बम्बई, 18 अक्टूबर, 1985

का. आ. 5148:—भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 (1934 का 2) की धारा 42 की उप-धारा (7) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारतीय रिजर्व बैंक एनद्वारा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) के अंतर्गत गठित समस्त क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 42 की उप-धारा (1ए) के उपबंधों में दिनांक 12 नवम्बर, 1985 से आगामी एक वर्ष के लिए मुक्त करता है।

[संदर्भ आरपीसीडी सं. 888/324-85]

सी.वी. नायर, कार्यपालक निदेशक

RESERVE BANK OF INDIA

(Rural Planning and Credit Department)

(Central Office)

Bombay, the 18th October, 1985

S.O. 5148.—In exercise of the powers conferred by sub-section (7) of Section 42 of the Reserve Bank of India Act, 1934 (2 of 1934), the Reserve Bank of India hereby exempts all Regional Rural Banks constituted under the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976) from the provisions of sub-section (1A) of Section 42 of the Reserve Bank of India Act, 1934 for a further period of one year commencing from 12th November, 1985.

[Ref. RPCD No. 888/324/85]

C. V. NAIR, Executive Director

समाहृतिय केन्द्रीय उत्पाद शुल्क

नागपुर, 16 सितम्बर, 1985

अधिसूचना सं. 10/85

का.आ. 5149:—अधीनस्थ केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क श्रेणी "ख" में पड़ोस्ति होने पर निम्नलिखित निरीक्षकों ने अधीनस्थ केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क श्रेणी "ख" में उनके नाम के प्राप्ति दर्शाई तिथि में पदभार संभाला।

क्र.सं.	नाम	तेतानी स्थान	कार्यभार ग्रहण करने की तिथि
सर्वश्री			
1.	इन्दु. चार्ड. उमरेडकर	अधीनस्थ, के. उ. शु. रेजिस्ट्रारपुर।	9-8-85 पूर्वाह्न
2.	पी.के. जोगी	अधीनस्थ (निवारक) प्रमाण सन्तपुर।	13-8-85
3.	एम.एम. धवले	अधीनस्थ के. उ. शु. रेजिस्ट्रारपुर।	19-8-85

[सं.सं. II(3) 3/85-स्था. I 91831]

आर.के. आरिफ उा समाहृतियों (का. श्रेण. स्था.)

CENTRAL EXCISE COLLECTORATE

Nagpur, the 16th September, 1985

NOTIFICATION NO. 10/85

S.O. 5149.—Consequent upon their promotion as Superintendent, Central Excise Group 'B' the following Inspectors of Central Excise have assumed their charges as Superintendent, Central Excise Group 'B' with effect from the dates as shown against each :—

S. No.	Name of the Officer	Place of posting	Date of assumption of charge
1.	Shri W.Y. Umredkar	Superintendent, C. Ex. Range, Awarpur.	9-8-85 (FN)
2.	Shri P.K. Joshi	Superintendent (P), C. Ex. Division Chandrapur.	13-8-85 (FN)
3.	Shri C.S. Dhakate	Superintendent, C. Ex. Range, Warora.	19-8-85 (FN)

[C. No. II(3)3/85/ET. I/61831]

R. K. AUDIM, Dy. Collector (P & E)

वाणिज्य मंत्रालय

(वस्त्र विभाग)

नई दिल्ली, 29 अक्टूबर, 1985

का.आ. 5150:—केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय रेगम बोर्ड अधिनियम, 1948 (1948 का 61) की धारा 4 की उपधारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, प्रति एवं वस्त्र मंत्रालय (वस्त्र विभाग), भारत सरकार की अधिसूचना सं. का. आ. 517 (अ), दिनांक 9 जुलाई, 1985 में एनद्वारा निम्नलिखित संशोधन करती है:—

उक्त अधिसूचना में मद सं. 13 और उससे संबंधित प्रविष्टि के स्थान पर निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:—

"13 श्री एम.बी. शरन

आयुक्त तथा सचिव

उद्योग विभाग

बिहार सरकार"

[एफ. सं. 25012/8/85-रेगम]

ए.के. सेनगुप्त, निदेशक

MINISTRY OF COMMERCE

(Department of Textiles)

New Delhi, the 29th October, 1985

S.O. 5150.—In exercise of the powers conferred by sub-section (3) of section 4 of the Central Silk Board Act, 1948 (61 of 1948), the Central Government hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Supply and Textiles (Department of Textiles) No. S.O. 517(E) dated 9th July, 1985 :—

In the said notification, for item 13 and the entry relating thereto, the following shall be substituted, namely :—

"13 Shri S. V. Sharan
Commissioner and Secretary
Department of Industries
Government of Bihar"

[F. No. 25012/8/85-Silk]

A. K. SENGUPTA, Director

(मुख्य नियंत्रक, आयात-निर्यात का कार्यालय)

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर, 1985

प्राप्ति

का.आ. 5151:—आयुक्त-वस्त्र, 726. 45वा फोन, 8वा अक्षा, जय नगर, इंग्लोर-41 को एक आडी 80 सी एम डीजल 1598 सी सी कार बेसिस में इन्दु. ए.यु. जेड जेड-81 जेड डी ए. 036460 का आयात करने के लिये 9,000/- रुपये मात्र का एक सीमा-शुल्क निर्याती परमिट में पी/जे/3064974 दिनांक 7-2-85 दिया गया था। आवेदक ने उपर उल्लिखित सीमाशुल्क निर्याती परमिट की प्रतिलिपि प्रति जारी करने के लिये इस आधारे पर आवेदन किया है कि नूत. सीमाशुल्क निर्याती परमिट सम्मान्य हो गयी/को गयी है। अतः यह

बताया गया है कि मूल सीमाशुल्क निकासी परमिट किसी भी सीमा शुल्क प्राधिकारी के पास पंजीकृत नहीं था और इस तरह सीमाशुल्क निकासी परमिट के मूल्य का बिलकुल भी उपयोग नहीं किया गया है।

2. अपने तर्क के समर्थन में, लाइसेन्सधारी ने उचित न्यायिक प्राधिकारी के सामने विविधतः शपथ लेकर एक शपथ पत्र दाखिल किया है। मैं, तत्समय सन्मुख हूँ कि आवेदक द्वारा मूल सीमाशुल्क निकासी परमिट सं० पी/जे/3064974 दिनांक 7-2-85 को गया है। समय-समय पर तथा संशोधित आयात (नियंत्रण) आदेश, 1955 की उपधारा 9 (ग) के अधीन प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करने हुए डा० चन्द्रप्पा को जारी किये गये कथित मूल सीमाशुल्क निकासी परमिट सं० पी/जे/3064974 दिनांक 7-2-85 की एनडब्ल्यू रद्द किया जाता है।

3. सीमाशुल्क निकासी परमिट की अनुविधि प्रति पार्टी को अवगत में जारी की जा रही है।

[फाइल सं० ए/सी-16/84-85/बी एल एस/2120]

(Office of the Chief Controller of Imports & Exports)

New Delhi, the 18th October, 1985

ORDER

S.O. 5151.—Dr. M. H. Chandrappa, 726, 45th Cross, 8th Block Jayanagar, Bangalore-41 was granted a Customs Clearance Permit No. P/J/3064974 dt. 7-2-85 for Rs. 9,000 only for import of one Audi 80 CL Diesel 1598 CC car chassis No. WAUZZZ-81 ZDA 036460. The applicant has applied for issue of Duplicate copy of the above mentioned Customs Clearance Permit on the ground that the original CCP has been misplaced/lost. It has further been stated that the original CCP was not registered with any Customs authority and as such the value of the CCP has not been utilised at all.

2. In support of his contention the licensee has filed an affidavit duly sworn before appropriate judicial authority. I am accordingly satisfied that the original CCP No. P/J/3064974 dt. 7-2-85 has been lost by the applicant. In exercise of the powers conferred under Sub-Clause 9(cc) of the Import (Control) Order, 1955 dated 7-12-1985 as amended from time to time, the said original CCP No. P/J/3064974 dt. 7-2-85 issued to Dr. Chandrappa is hereby cancelled.

3. A duplicate copy of the Customs Clearance Permit is being issued to the party separately.

[F. No. A/C-16/84-85/BLS/2120]

आदेश

का०घा० 5152.—श्री सुल्तान मोहिद्दीन शाह, पोस्ट बॉक्स 2583, शारजाह (संयुक्त अरब अमीरात) को एक बी एम डब्ल्यू वैल्व 316 कार एच डी 1985 मॉडल की कार का आयात करने के लिये 90,000 रुपये केवल का एक सीमाशुल्क निकासी अनुमति पत्र सं० पी/जे/3052226, दिनांक 16-8-85 दिया गया था। आवेदक ने उपर्युक्त सीमाशुल्क निकासी अनुमति पत्र की अनुविधि प्रति जारी किये जाने का इस आधार पर आवेदन किया है कि सीमाशुल्क निकासी अनुमति पत्र की मूल प्रति अस्थायित्व हो गई है/कोई नहीं है। आगे यह कहा गया है कि सीमाशुल्क निकासी अनुमति पत्र की मूल प्रति किसी सीमाशुल्क प्राधिकरण के पास पंजीकृत नहीं कराई गई थी तथा इस प्रकार सीमाशुल्क निकासी अनुमति पत्र के मूल्य का बिलकुल भी उपयोग नहीं किया गया है।

2. अपने तर्क के समर्थन में, लाइसेन्सधारी ने अपर्युक्त न्यायिक प्राधिकारी के समक्ष विविधतः शपथ लेकर एक शपथ पत्र दाखिल किया है। मैं, तत्समय, संमुख हूँ कि मूल सीमाशुल्क निकासी अनुमति पत्र सं० पी/जे/3052226, दिनांक 16-8-85 आवेदक के को गई है। समय-समय पर तथा संशोधित आयात (नियंत्रण) आदेश, 1955, दिनांक 7-12-1985 की उपधारा 9 (ग) के अधीन प्रदत्त अधिकारों का

प्रयोग करने हुए, श्री सुल्तान मोहिद्दीन शाह को जारी किया गया। कथित मूल सीमाशुल्क निकासी अनुमति पत्र सं० पी/जे/3052226, दिनांक 16-8-85 एनडब्ल्यू रद्द किया जाता है।

3. पार्टी को अवगत में सीमाशुल्क निकासी अनुमति पत्र की अनुविधि प्रति जारी की जा रही है।

[फाइल सं० ए/एस-83/85-86/बी एल एस/2125]

एन० एस० कुष्णामूर्ति, उप मुख्य नियंत्रक, आयात-निर्यात
द्वारे मुख्य नियंत्रक, आयात-निर्यात

ORDER

S.O. 5152.—Mr. Sultan Mohideen Shah, Post Box 2583, Sharjah, (U.A.E.) was granted a Customs Clearance Permit No. P/J/3052226 dt. 16-8-85 for Rs. 80,000 only for import of one BMW Saloon 316 RHD 1985 Model car. The applicant has applied for issue of Duplicate copy of the above mentioned Customs Clearance Permit on the ground that the original CCP has been misplaced/lost. It has further been stated that the original CCP was not registered with any Customs authority and as such the value of the CCP has not been utilised at all.

2. In support of his contention, the licensee has filed an affidavit duly sworn before appropriate judicial authority. I am accordingly satisfied that the original CCP No. P/J/3052226 dt. 16-8-85 has been lost by the applicant. In exercise of the powers conferred under Sub-Clause 9(cc) of the Import (Control) Order, 1955 dt. 7-12-1955 as amended from time to time, the said original CCP No. P/J/3052226 dt. 16-8-85 issued to Shri Sultan Mohideen Shah is hereby cancelled.

3. A duplicate copy of the Customs Clearance Permit is being issued to the party separately.

[F. No. A/S-83/85-86/BLS/2125]

N. S. KRISHNAMURTHY, Dy. Chief Controller of
Imports & Exports

For Chief Controller of Imports & Exports

उद्योग और कम्पनी कार्य मंत्रालय

(कम्पनी कार्य विभाग)

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर, 1985

का०घा० 5153.—एकाधिकार तथा अवरोधक व्यापारिक व्यवहार अधिनियम, 1969 (1969 का 54) की धारा 26 की उपधारा (3) के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार एनडब्ल्यू इस अधिसूचना के अनुसूचक में उल्लिखित उपक्रमों के पंजीकरण को, उक्त उपक्रमों के वह उपक्रम होने पर, जिन पर उक्त अधिनियम के अध्याय-III के भाग क के उपबन्ध अब लागू नहीं होते हैं, के निरस्तिकरण को अधिसूचित करती है।

[सं० 16/12/85-एम०-3]

एल० सी० गोयल, अवर सचिव

अधिसूचना सं० 16/12/85-एम 3 का अनुसूचक

क. सं०	उपक्रम का नाम	पंजीकृत पते	पंजीकरण संख्या
1	2	3	4
1.	सं० राजस्थान स्पीनिंग एंड डीनिंग मिल्स लि०	भीलवाड़ा शहर, 40-41, कम्युनिटी सेक्टर, नई फ्लेक्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110 651	1500/80

1	2	3	4
2. मै० भीलवाड़ा सन्थेटिक्स लि०	26 इन्डस्ट्रीयल एरिया, पो० बॉ० नं० 17, पोस्ट ऑफिस भीलवाड़ा-311001 (राजस्थान)	1502/80	
3. मै० बाजाज टेम्पो लि०	बम्बई-पूना रोड, अकुर्डी, पुणे-411035	1528/81	
4. मै० केसी कामो लेबो-रेट्रीज लि०	5, एम० आई०डी० सी० कल्याण सिवान्डी रोड, पोस्ट पंड ग्राम सारावली जाला-कल्याण, जिला ठाना (महाराष्ट्र)	1571/82	
5. मै० गुडइयर इंडिया लि०	मथुरा रोड, बल्लभगढ़ (फरोबाबाद हरियाणा)	910/73	
6. मै० सेरामिक सर्विसेज लि०	603, दीप शिखा, 8-राजेंद्र प्लेस, नई दिल्ली-110008		

MINISTRY OF INDUSTRY

(Department of Company Affairs)

New Delhi, the 18th October, 1985

S.O. 5153.—In pursuance of sub-section (3) of Section 26 of the Monopolies and Restrictive Trade Practices Act, 1969 (54 of 1969), the Central Government hereby notifies the cancellation of the registration of the undertakings mentioned in the Annexure to this notification, the said undertakings being undertakings to which the provisions of Part A Chapter III of the said Act no longer apply.

[No. 16/12/85.M-III]

L. C. GOYAL, Under Secy.

Annexure to the Notification No. 16/12/85. M-III

S. No.	Name of the Undertakings	Registered Address	Registration No.
1	2	3	4
1.	M/s. Rajasthan Spinning & Weaving Mills Ltd.	Bhilwara Bhawan, 40-41, Community Centre, New Friends Colony, New Delhi-110065.	1500/80
2.	M/s. Bhilwara Synthetics Ltd.	26 Industrial Area, P.B. No. 17, Post Office Bhilwara-311001 (Rajasthan)	1502/80
3.	M/s. Bajaj Tempo Ltd.	Bombay-Poona Road, Akurdi, Pune-411035.	1528/81
4.	M/s. Chemo Pharma Laboratories Ltd.	5, M.I.D.C., Kalyan-Bhiwandi Road, Post & Village Saravali Via-Kaylan Distt. Thana (Maharashtra).	1571/82

1	2	3	4
5.	M/s. Goodyear India Ltd.	Mathura Road, Ballabgarh, (Faridabad) Haryana.	910/73
6.	M/s. Ceramic Services Ltd.	603, Deep Shikha, 8-Rajendra Place, New Delhi-110008.	1138/75

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर, 1985

का. प्रा. 5154.—केन्द्रीय सरकार सरकारी स्थान (समाधिकृत अधिकारियों की देखरेखी) अधिनियम, 1971 (1971 का 40) की धारा 3 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (स्वास्थ्य विभाग) की अधिसूचना सं. बाई. 16012/1/76- एम., तारीख 8 जून, 1984 को, उन बातों के सिवाय अधिकृत करने हुए जिन्हें ऐसे अधिनियम से पहले किया गया है या करते का लोप किया गया है, नीचे की सारणी के स्तम्भ (1) में उल्लिखित अधिकारी को, जो सरकार का राजपत्रित अधिकारी है, उक्त अधिनियम के प्रयोजनों के लिये, संपदा अधिकारी नियुक्त करता है, जो उक्त सारणी के स्तम्भ (2) में की तत्स्थाना प्रविष्टि में विनिर्दिष्ट सरकारी स्थानों की बाबत अपने अधिकारिता की स्वातंत्र्य सीमाओं के भीतर उक्त अधिनियम द्वारा या उसके अधीन संपदा अधिकारी को प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करेगा और उन पर अधिरोपित कलेक्टरों का पालन करेगा।

सारणी

अधिकारी का पदाभिधान	सरकारी स्थानों के प्रकार और अधिकारिता की स्थानीय सीमाएं।
चिकित्सा अधिकारी, सफवरजंग अस्पताल, नई दिल्ली।	1. सफवरजंग अस्पताल, नई दिल्ली की भूमि के सभी प्लॉट भवन 2. मदनमोर जनता टावर 40 फर्लेटम 3. रिग रोड 192 क्वार्टर्स (राजनगर के के पास) नई दिल्ली। 4. नविय का पुराना महाविद्यालय (97 कमरें), जसवंत सिंह रोड के पास, नई दिल्ली।

[सं. बाई. 16012/1/76- एच.]

हिम्मत सिंह धकालिया, सचिव सचिव

MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY WELFARE

New Delhi, the 18th October, 1985

S.O. 5154.—In exercise of the powers conferred by section 3 of the Public Premises (Eviction of Unauthorised Occupants) Act, 1971 (40 of 1971) and in supersession of the notification of the Government of India in the Ministry of Health and Family Welfare (Department of Health No. Y. 16012/1/76- H, dated the 8th June, 1984, except as respect things done or omitted to be done before such supersession, the Central Government hereby appoints the officer mentioned in column (1) of the Table below, being a Gazetted Officer of the Government, to be an Estate

Officer for the purposes of the said Act, who shall exercise the powers conferred, and perform the duties imposed, on Estate Officers by or under the said Act within the local limits of his jurisdiction in respect of the public premises specified in the corresponding entry in column (2) of the said Table.

TABLE

Designation of the Officer	Categories of Public premises and the local limits of jurisdiction
Medical Officer, Safdarjang Hospital, New Delhi.	1. All plots of lands/buildings belonging to the Safdarjang Hospital, New Delhi.
	2. Madangir Janta Type 40 Flats.
	3. Ring Road-192 quarter (Near Raj Nagar) Delhi.
	4. Old College of Nursing (97 rooms) near Jaswant Singh Road, New Delhi.

[No. Y. 16012/1/76-H]
H.S. DHAKAALIA, Under Secy.

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर, 1985

शुद्धिपत्र

का. आ. 5135.—भारत के राजपत्र, भाग 2, खंड 3, उपखंड (ii) में पृष्ठ 3565 पर प्रकाशित भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (स्वास्थ्य विभाग) की अधिसूचना सं. का. आ. 3099 तारीख 21 जून, 1985 में "विश्वविद्यालय, बोर्ड अथवा चिकित्सा संस्था का नाम" शीर्षक के नीचे "29 होम्योपैथिक" अंक और शब्द के स्थान पर "29 क. होम्योपैथिक" अंक, अक्षर और शब्द पड़ें।

[सं. वी. 27021/14/86-होम्यो.]

पी. एल. कपूर, डेस्क अधिकारी, (होम्यो.)

New Delhi, the 18th October, 1985

CORRIGENDUM

S.O. 5155.—In the notification of the Government of India in the Ministry of Health and Family Welfare Department of Health) No. S.O. 3099, dated the 21st June, 1985, published in the Gazette of India, Part II, Section 3, sub-section (ii), at page 3565, under the heading "Name of University, Board or Medical Institution", for "29. The Council" read "29A. The Council".

[No. V-27021/14/85-Homoeo]
P. L. KAPUR, Desk Officer

ऊर्जा मंत्रालय

(कोयला विभाग)

नई दिल्ली, 24 अक्टूबर, 1985

शुद्धि पत्र

का. आ. 5156.—भारत के राजपत्र तारीख 2 मार्च, 1985 के भाग 2, खंड 3, उपखंड (ii) में पृष्ठ 1021 पर प्रकाशित भारत सरकार के इस्पात, खान और कोयला मंत्रालय, कोयला विभाग की अधिसूचना का आ. सं. 882 तारीख 12 फरवरी, 1985 में—

पृष्ठ 1021 पर—

(1) अधिसूचना में "कानक्टर यक्षमाल" के स्थान पर "कानक्टर यक्षमाल" पढ़िए।

(2) "कोयला इस्टेट" के स्थान पर "कोयला इस्टेट" पढ़िए।

अनुसूची में—

(3) क्रम संख्या 1 द्वारा 5 में मूलनीय स्वयं के नीचे कालम 5 में "राजीव" के स्थान पर "जर्ज" पढ़िए।

(4) क्रम संख्या 1 में "शेख रेकटो" में "स्वयं" के नीचे "18.21" के स्थान पर "184.21" पढ़िए।

1022 पर—

सीमा वर्णन में—

(6) रेखा ब-अ में रेखा "पुनवर" के स्थान पर "पुनवर" पढ़िए और "बेलोरा" के स्थान पर "बेलोरा" पढ़िए।

[सं. 43019/21/84-सी.ए.]

MINISTRY OF ENERGY

(Department of Coal)

New Delhi, the 24th October, 1985

CORRIGENDUM

S.O. 5156.—In the notification of the Government of India in the Ministry of Steel, Mines and Coal (Department of Coal) S.O. No. 882 dated 12th February, 1985, published at pages 1021 to 1023 of the Gazette of India, Part II, Section 3, Sub-section (ii) dated 2nd March, 1985 :

At page 1023 :

(a) in the Schedule—against serial number 19, for "Niljal" read "Niljal".

(b) in the boundary description—

(i) in line A-B, "Ag si" read "Agasi";

(ii) in line D-A, for "a starting point 'A'" read "at starting point 'A'".

[No. 43019/21/84-CA]

का.आ. 5157.—केन्द्रीय सरकार ने, भारत के राजपत्र तारीख 17 सितम्बर, 1983 में प्रकाशित कोयला धारक क्षेत्र (अर्जन और विकास) अधिनियम, 1957 (1957 का 20) की धारा 7 के उप-धारा (1) के अधीन जारी की गई भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय (कोयला विभाग) की अधिसूचना सं. का.आ. 3565 तारीख 30 अगस्त, 1983 द्वारा, उक्त अधिसूचना में संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट परिच्छेद 165.00 एकड़ (लगभग) या 66.67 हेक्टर (लगभग) माप की भूमि का अर्जन करने के अपने आशय की सूचना दी थी;

और मसम प्राधिकारी ने उक्त अधिनियम की धारा 8 के अनुसार अपनी रिपोर्ट केन्द्रीय सरकार को दे दी है;

और केन्द्रीय सरकार का पूर्वोक्त रिपोर्ट पर विचार करने और बिहार सरकार से परामर्श करने के पश्चात् यह समाधान हो गया है कि इससे संलग्न अनुसूची में वर्णित 165.00 एकड़ (लगभग) या 66.77 हेक्टर (लगभग) माप की भूमि का अर्जन किया जाना चाहिए;

अतः, अब, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 9 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, यह घोषणा करती है

कि उक्त अनुसूची में वर्णित 165.00 एकड़ (लगभग) या 66.77 हेक्टर (लगभग) माप की भूमि का अर्जन किया जात है;

इस अधिसूचना के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र के रेखांक का निर्माण उपर्युक्त, हजारीबाग (बिहार) के कार्यालय या कोयला निवलक, 1, काउन्सिल हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता या सेन्दुल कोनफील्ड्स लिमिटेड (राजस्व अनुभाग), दरभंगा हाउस, राँची (बिहार) के कार्यालय में किया जा सकता है।

अनुसूची

लाइयो ब्लॉक बिस्तार

पश्चिमी बोकारो कोयला क्षेत्र,

जिला हजारीबाग (बिहार)

प्राप्त संख्या राजस्व 101/84

तारीख 29-6-1984

(जिसमें अर्जित भूमि दर्शित की गई है)

मर्माधिकार

क्रम सं०	ग्राम	बाना सं०	जिला	क्षेत्र (एकड़ में)	टिप्पणियाँ
1.	लोहरी	सांठू	162, हजारीबाग	165.00	भाग

कुल क्षेत्र: 165.00 एकड़ (लगभग)

या 66.77 हेक्टर (लगभग)

लाइयो ग्राम में अर्जित प्लॉट संख्यांक

1155 (भाग), 1156 (भाग), 1171 (भाग), 1835 (भाग), 1836 (भाग), 1842 (भाग), 1843 (भाग), 1844 (भाग), 1845 से 1854, 1855 (भाग), 1857 (भाग), 1858 (भाग), 1910 (भाग), 1911 (भाग), 1912 (भाग), 1913 से 1930, 1934 (भाग), 1951 (भाग), 1956 (भाग), 1957 (भाग), 1958, 1959 (भाग), 1960 (भाग), 1972 (भाग), 1973 (भाग), 1978 (भाग), 1979 (भाग), 1930 से 1994, 1995 (भाग), 1996, 1997, 1998, 1999 (भाग), 2000, 2001, 2002 (भाग), 2003 (भाग), 2013 (भाग), 2019 (भाग), 2020 (भाग), 2021 (भाग), 2022 (भाग), 2023, 2024, 2025 (भाग), 2026 (भाग), 2027 (भाग), 2028, 2029 (भाग), 2030 (भाग), 2031 (भाग), 2032, 2033, 2034, 2035 (भाग), 2036 (भाग), 2037 से 2040, 2048 (भाग), 2513 (भाग), 2514 से 2517, 2520 (भाग), 2521, 2522, 2523, 2524 (भाग), 2525 से 2538, 2541 (भाग), 2542 से 2547, 2548 (भाग), 2552 (भाग), 2554 (भाग), 2555, 2556, 2557, और 3201 (भाग)।

सीमा वर्णन :

क-ख-ग-घ रेखाएं, लाइयो ग्राम में प्लॉट संख्यांक 2018, 1910, 1912, 1913, 1910, 1855, 1857, 1858 प्लॉट संख्यांक 3462 की पूर्वी और दक्षिणी सीमा से होकर प्लॉट संख्यांक 2524, 2513, 2524, 2520, 2524 और 3201 से होकर जाती हैं (जो सारखंड कोयला खान के साथ भागतः सम्मिलित सीमा बनाती है) और बिन्दु 'घ' पर मिलती हैं।

घ-ङ रेखा लाइयो ग्राम में प्लॉट संख्यांक 3201, 2524, 2541 और 2524 से होकर जाती है (जो लाइयो कोयला खान सीमा के साथ सम्मिलित सीमा बनाती है) और बिन्दु 'ङ' पर मिलती हैं।

च-छ-ज रेखाएं लाइयो ग्राम के प्लॉट संख्यांक 2524, प्लॉट संख्यांक 2543 की पूर्वी सीमा से होकर

प्लॉट संख्यांक 2548, 2524, 2552, 2524, 2554, 2524, 1842, 1843, 1844, 1836, 1835, 1910, 1931, 1953, 1956, 1957, 1959, 1963, 1972, 1973, 1978, 1979, 1978, 2003, 2002, 1999, 1995, 2013, 1995, 2021, 2022, 2021, 2025, 2026, 2027, 2020, 2019, 2028, 2031 और 2030 से होकर जाती है (जो कोयला अधिनियम की धारा 9(1) के अधीन अर्जित लाइयो ब्लॉक के साथ सम्मिलित सीमा बनाती है) और बिन्दु 'ज' पर मिलती हैं।

ज-झ रेखा लाइयो ग्राम में प्लॉट संख्यांक 2030, 2031, 1171, 2035, 2036, 1156 और 1155 से होकर जाती है और बिन्दु 'झ' पर मिलती हैं।

झ-ञ रेखा लाइयो ग्राम में प्लॉट संख्यांक 204 छोट्टा नदी की दक्षिणी सीमा के साथ साथ जाती है और आरम्भिक बिन्दु 'क' पर मिलती हैं।

[सं० 43019/23/81-सी ए]

S.O.5157—Whereas by the notification of the Government of India in the Ministry of Energy (Department of Coal) No. S.O. 3566, dated the 30th August, 1983 issued under sub-section (1) of section 7 of the Coal Bearing Area (Acquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957), published in the Gazette of India, dated the 17th September, 1983, the Central Government gave notice of its intention to acquire the lands measuring 165.00 acres (approximately) 66.77 hectares (approximately) in the locality specified in the Schedule appended to the Notification;

And whereas the Competent Authority, in pursuance of Section 8 of the said Act, has made his report to the Central Government;

And whereas the Central Government, after considering the report aforesaid and after consulting the Government of Bihar, is satisfied that the lands measuring 165.00 acres (approximately) or 66.77 hectares (approximately), described in the said Schedule; appended hereto; should be acquired.

Now therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 9 of the said Act, the Central Government hereby declares that the lands measuring 165.00 acres (approximately) or 66.77 hectares (approximately), described in the said Schedule; are hereby acquired.

2. The plans of the area covered by this notification may be inspected in the Office of the Deputy Commissioner, Hazaribagh (Bihar) or in the Office of the Coal Controller, 1, Council House Street, Calcutta or in the office of the Central Coalfields Limited (Revenue Section) Darbhanga House, Ranchi (Bihar).

SCHEDULE
Loiyo Block Extn.
West Bokaro Coalfield,
Distt. Hazaribagh (Bihar)

Drg. No. Rev/101/84
Dated : 27-6-85
(Showing lands acquired)

ALL RIGHTS

Serial Number	Village	Thana	Thana number	District	Area in acres	Remarks
1.	Loiyo	Mandu	162	Hazaribagh	165.00	Part
Total area :-165.00 acres (approximately) or 66.77 hectares (approximately)						

Plot numbers acquired in village Loiyo:—

1155(Part), 1156(Part), 1171 (Part), 1835(Part), 1836(Part), 1842 (Part), 1843(Part), 1844 (Part), 1845 to 1854, 1855 (Part), 1857 (Part), 1858 (Part), 1910 (Part), 1911 (Part), 1912 (Part), 1913 to 1930, 1931 (Part), 1953 (Part), 1956 (Part), 1957 (Part), 1958, 1959 (Part), 1960 (Part), 1972 (Part), 1973 (Part), 1978 (Part), 1979 (Part), 1980 to 1994, 1995 (Part), 1996, 1997, 1998, 1999 (Part), 2000, 2001, 2002 (Part), 2003 (Part), 2013 (Part), 2019 (Part), 2020 (Part), 2021 (Part), 2022 (Part), 2023, 2024, 2025 (Part), 2026 (Part), 2027 (Part), 2028, 2029 (Part), 2030 (Part), 2031 (Part), 2032, 2033, 2034, 2035 (Part), 2036 (Part), 2037 to 2040, 2048 (Part), 2513 (Part), 2514 to 2517, 2520 (Part), 2521, 2522, 2523, 2524 (Part), 2525 to 2538, 2541 (Part), 2542 to 2547, 2548 (Part), 2552 (Part), 2554 (Part), 2555, 2556, 2557, & 3201 (Part).

Boundary description:—

A-B-C-D lines pass through plot numbers 2048, 1910, 1912, 1911, 1910, 1855, 1857, 1858, eastern and southern boundary of plot number 3462 through plot numbers 2524, 2513, 2524, 2520, 2524, and 3201 in village Loiyo (which forms part common boundary with Jharkand Colliery) and meet at point 'D'.

D-E line passes through plot numbers 3201, 2524, 2541, and 2524 in village Loiyo (which forms common boundary with Loiyo Colliery boundary) and meets at point 'E'.

E-F-G-H lines pass through plot number, 2524, eastern boundary of plot number 2543 through plot numbers 2548, 2524, 2552, 2524, 2554, 2524 1842, 1843, 1844, 1836, 1835, 1910, 1931, 1953, 1956, 1957, 1959, 1960, 1972, 1973, 1978, 1979, 1978, 2003, 2002, 1999, 1995, 2013, 1995, 2021, 2022, 2021, 2025, 2026, 2027, 2020, 2019, 2029, 2031 & 2030 in village Loiyo (which forms common boundary with Loiyo Block acquired u/s 9 (1) of the Coal Act) and meet at point 'H'.

H-I line passes through plot numbers 2030, 2031, 1171, 2035, 2036, 1156 & 1155 in village Loiyo and meets at point 'I'.

I-A line passes along the southern boundary of plot number 2041 (Chutua Nadi) in village Loiyo and meets at starting point 'A'.

[No. 43019/23/84-CA]

का आ 5158.—केंद्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि इसमें उपाय अनुसूची में उल्लिखित भूमि में कोयला अधिप्राप्त किए जाने की संभावना है।

अतः, केंद्रीय सरकार, कोयला धारक क्षेत्र (अर्जन और विकास) अधिनियम, 1957 (1957 का 20) की धारा 4 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए, उस क्षेत्र में कोयले का पूर्वेक्षण करने के अपने आशय की सूचना देता है;

उस अधिसूचना के अधीन आने वाले क्षेत्र के रेखांक सं० राजस्व/31/82 तारीख 21 अप्रैल, 1982 का निरीक्षण सन्दर्भ कोलफील्ड्स लिमिटेड (राजस्व अनुभाग), दरभंगा हाउस, राँची के कार्यालय में या उपायुक्त, झारखंडा बाग (बिहार) के कार्यालय में अथवा कोयला निर्यन्त्र, 1, काउन्सिल हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता के कार्यालय में किया जा सकता है।

एक अधिसूचना के अधीन आने वाली भूमि में हिलबठ मशीन स्थित, उक्त अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (7) में निविष्ट सभी नक्शों, नोटों और अन्य दस्तावेजों को, इस अधिसूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से नब्बे दिन के भीतर, राजस्व अधिकारी, सन्दर्भ कोलफील्ड्स लिमिटेड, दरभंगा हाउस, राँची को भेजेगा।

अनुसूची

पादरंग, ब्लॉक
पश्चिम बोकारो कोयला क्षेत्र
(पूर्वेक्षण के लिए अधिसूचित भूमि)

ड्राइंग सं० राजस्व/
31/82-पारीख 21-4-1982

क्र० सं०	ग्राम	थाना सं०	जिला	क्षेत्र एकड़ों में	टिप्पणियाँ
1.	पादरंग	साँझू	झारखंडाबाग	230.25	भाग
2.	कांसाबाग	साँझू	झारखंडाबाग	37.50	भाग
3.	काराबेड़ा	साँझू	झारखंडाबाग	410.87	भाग
4.	तारा	साँझू	झारखंडाबाग	551.38	भाग
			कुल क्षेत्र	1230.00 एकड़ (लगभग)	
			या	497.75 हेक्टेयर (लगभग)	

सीमा वर्णन

- क-ख रेखा, पादरंगी ग्राम से होकर जाती है और बिन्दु 'ख' पर मिलती है।
- ख-ग रेखा, पादरंगी और पिङ्ग्रा ग्रामों की सम्मिलित सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ग' पर मिलती है।
- ग-घ रेखा, तोरा और पिङ्ग्रा ग्रामों की सम्मिलित सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'घ' पर मिलती है।
- घ-ङ रेखा, तोरा और तोपा ग्रामों की सम्मिलित सीमा के भाग के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ङ' पर मिलती है।
- ङ-च-छ रेखा, तोरा ग्राम से होकर जाती है और बिन्दु 'छ' पर मिलती है।
- छ-ज रेखा, तोरा और तोपा ग्रामों की सम्मिलित सीमा के भाग के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ज' पर मिलती है।
- ज-झ रेखा, कारीबन्धा और तोपा ग्रामों के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'झ' पर मिलती है।
- झ-ञ रेखा, कामीखाप और तोपा ग्रामों की सम्मिलित सीमा के भाग के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ञ' पर मिलती है।
- ञ-ट रेखा, कामीखाप ग्राम से सीरा नदी (नदी) से होकर जाती है और फिर कामीखाप और कारीबन्धा ग्राम से होकर जाती है। [जो कोयला धारक क्षेत्र (अर्जन और विकास) अधिनियम, 1957 की धारा 4(1) के अधीन अधिसूचित मातृ ब्लॉक के उप-ब्लॉक-1 की सम्मिलित सीमा बनाती है] और बिन्दु 'ट' पर मिलती है।

ट-ठ रेखा, कारीबन्धा और मिमरा ग्रामों की सम्मिलित सीमा के भाग के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ठ' पर मिलती है।

ठ-क रेखा, पादरंगी और मिमरा ग्रामों की सम्मिलित सीमा के भाग के साथ-साथ जाती है और आरम्भिक बिन्दु 'क' पर मिलती है।

[मं. 43015/23/85-सी.ए.]

S.O.5158.—Whereas it appears to the Central Government that coal is likely to be obtained from the lands mentioned in the Schedule hereto annexed:

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 4 of the Coal Bearing Areas (Acquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957), the Central Government hereby gives notice of its intention to prospect for therein.

The plan No. Rev/31/82 dated the 21st April, 1982 of the area covered by this notification can be inspected at the office of the Central Coalfields Limited (Revenue Section), Darbhanga House, Ranchi, or at the office of the Deputy Commissioner, Hazaribagh (Bihar) or at the office of the Coal Controller, 1, Council House Street, Calcutta.

All persons interested in the land covered by this notification shall deliver all maps, charts and other documents referred to in sub-section (7) of section 13 of the said Act to the Revenue Officer, Central Coalfields Limited, Darbhanga House, Ranchi, within ninety days from the date of publication of this notification in the Official Gazette.

Schedule
Padrangi Block
West Bikaro Coalfield

Drawing No.
Rev/31/82
dated 21-4-82

(Showing land
notified for prospecting)

Serial number	Village	Thana	Thana number	District	Area in acre	Remarks
1.	Padrangi	Mandu	54	Hazaribagh	230.25	Part
2.	Kasihhap	-do-	123	-do-	37.50	-do-
3.	Karibanda	-do-	124	-do-	410.87	-do-
4.	Toera	-do-	125	-do-	551.38	-do-

Total Area.—1230.00 acres (approximately)
or 497.75 hectares (approximately).

Boundary description:—

A-B line passes through village Padrangi and meets at point "AB".

B-C line passes along the common boundary of villages Padrangi and Pindra and meets at point 'C'.

passes along the common boundary of villages Toera and Pindra and meets at point 'D'.

D-E line passes along the part common boundary of villages Toera and Topa and meets at point 'E'.

E-F-G lines pass through village Toera and meets at point 'G'.

G-H line passes along the part common boundary of villages Toera and Topa and meets at point 'H'.

H-I line passes along the common boundary of village Karibanda and Topa and meets at point 'I'.

I-J line passes along the part common boundary of villages Kasikhap and Topa and meets at point 'J'.

J-K line passes through Bhera Nadi (River) in village Kasikhap then passes through village Kasikhap and Karibanda [which forms common boundary of sub-block-I of Mandu Block notified U/S 4(1) of the Coal Bearing Areas (Acquisition and Development) Act, 1957] and meets at point 'K'.

K-L line passes along the part common boundary of villages Karibanda and Semra and meets at point 'L'.

L-A line passes along the part common boundary of villages Padraangi and Semra and meets at starting point 'A'.

[No. 43015/23/85-CA]

नई दिल्ली, 25 अक्टूबर 1985

का. आ. 5159.—एतद्वारा यह अधिसूचित किया जाता है कि कोकर कोयला खान (राष्ट्रीयकरण) अधिनियम, 1972 (1972 का 36) की धारा 20 की उपधारा (1) द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय (कोयला विभाग) की अधिसूचना सं. 11023/3/82 सी. ए., दिनांक 4 अक्टूबर, 1983 का अधीक्षण करते हुए, केन्द्रीय सरकार ने श्री के. डी. शर्मा को उक्त अधिनियम के प्रयोजन के लिए भूगतान आयुक्त के पद पर 30 अगस्त, 1985 के पूर्वार्हत अर्थात् श्री एस. आर. भागवत के पद भार छोड़ने की तारीख से नियुक्त किया है।

[का. सं. 11024/3/84 सी. ए.]

टी. सी. ए. श्रीनिवासन, निदेशक

S.O. 5159.—It is hereby notified that, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 20 of the Coking Coal Mines (Nationalisation) Act, 1972 (36 of 1972), and, in supersession of the notification of the Government of India in the Ministry of Energy (Department of Coal) No. 11023/3/82-CA dated 4th October 1983, the Central Government has appointed Shri K. D. Sharma as the Commissioner 991 GI/85—3

of Payments for the purpose of the said Act with effect from fore-noon of 30th August, 1985.

[F. No. 11024/3/84-CA]

T.C.A. SRINIVASAN, Director

नई दिल्ली, 24 अक्टूबर, 1985

का. आ. 5160.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि इससे उपायुक्त अनुसूची में उल्लिखित भूमि में कोयला अभिप्राप्त किए जाने की संभावना है।

अतः, केन्द्रीय सरकार, कोयला धारक क्षेत्र (अर्जन और विभाग) अधिनियम, 1957 (1957 का 20) की धारा 4 की उपधारा (1) द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, उक्त क्षेत्र में कोयले का पृथक्करण करने के अपने आशय की सूचना देती है।

इस अधिसूचना के अधीन आने वाले क्षेत्र के रेखांक का निर्माण उपायुक्त धनबाद (बिहार) के कार्यालय या कोयला नियंत्रक, 1-काउन्सिल हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता (पं. बंगाल) के कार्यालय या निदेशक (परियोजना), भारत कोकिंग कोयला लिमिटेड, कोयला सघन राकधर कोयला नगर, जिला धनबाद (बिहार) में किया जा सकता है।

इस अधिसूचना के अधीन आने वाली भूमि में हितवद्ध सभी व्यक्ति उक्त अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (7) में निर्दिष्ट सभी नक्शों, चाटों और अन्य दस्तावेजों को, इस अधिसूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से नव्वे दिन के भीतर, निदेशक (प्रचालन) भारत कोकिंग कोयला लिमिटेड, धनबाद (बिहार) को भेजेंगे।

अनुसूची

धर्मचन्द विस्तार ब्लॉक

भरिया कोयला क्षेत्र

पृथक्करण के लिए अधिसूचित भूमि

क्रम सं०	ग्राम	थाना गं.	थाना	जिला	क्षेत्र (एकड़ों में)	टिप्पणियाँ
1.	तारगा	305	तापचांभी	धनबाद	694.65	सम्पूर्ण
2.	राधानगर	303	"	"	473.60	सम्पूर्ण
3.	मुडियाडीह	297	"	"	53.48	सम्पूर्ण
4.	देवघर	302	"	"	832.64	सम्पूर्ण
					कुल क्षेत्र 2054.37 एकड़ (लगभग)	
					या 821.7 हैक्टर (लगभग)	

सीमा वर्णन :

- क-ख रेखा, मौजा तारगा की उत्तरी सीमा और मौजा मुडियाडीह की उत्तरी-पश्चिमी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ख' पर मिलती है।
- ख-ग रेखा, मौजा मुडियाडीह की उत्तरी पूर्वी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ग' पर मिलती है।
- ग-घ रेखा, मौजा देवघर की उत्तरी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'घ' पर मिलती है।
- घ-ङ रेखा, मौजा देवघर की पूर्वी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ङ' पर मिलती है।
- ङ-च रेखा, मौजा देवघर की दक्षिणी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'च' पर मिलती है।
- च-छ रेखा, मौजा राधानगर की पूर्वी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'छ' पर मिलती है।
- छ-ज रेखा, मौजा राधानगर की दक्षिणी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ज' पर मिलती है।

- ज-झ रेखा; मौजा राधानगर की पश्चिमी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'अ' पर मिलती है।
- झ-अ रेखा मौजा तारगा की दक्षिणी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'उ' पर मिलती है।
- अ-ट रेखा, मौजा तारगा की पूर्वी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ट' पर मिलती है।
- ट-ठ रेखा मौजा तारगा की दक्षिणी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ठ' पर मिलती है।
- ठ-ड रेखा, मौजा तारगा की पश्चिमी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ड' पर मिलती है।
- ड-ड रेखा, मौजा तारगा की दक्षिणी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ड' पर मिलती है।
- ड-ण रेखा, मौजा तारगा की दक्षिणी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'ण' पर मिलती है।
- ण-त रेखा, मौजा तारगा की दक्षिणी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'त' पर मिलती है।
- त-क रेखा, मौजा तारगा की पश्चिमी सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु 'क' पर मिलती है।

[फाइल सं. 43015/11/85-सो.ए.]

New Delhi, the 24th October, 1985

S.O.5160.—Whereas it appears to the Central Government that coal is likely to be obtained from the lands mentioned in the Schedule hereto annexed,

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 4 of the Coal Bearing Areas (Acquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957), the Central Government hereby gives notice of its intention to prospect for coal therein.

The plan of the areas covered by this Notification may be inspected at the office of the Deputy Commissioner, Dhanbad (Bihar) or at the office of the Coal Controller, 1, Council House Street, Calcutta (West Bengal) or at the office of the Director (Projects) Bharat Coking Coal Limited, Koyla Bhavan, Post Office Koyla Nagar, District Dhanbad (Bihar).

All persons interested in the land covered by this notification shall deliver all maps, charts, and other documents referred to in sub-section (7) of section 13 of the said Act to the Director (Operations) West, Bharat Coking Coal Limited, Dhanbad (Bihar) within ninety days from the date of publication of the notification in the Gazette of India.

SCHEDULE

Dharmaband Extention Block

(Jharla Coal Field)

(Showing land notified for prospecting)

Sl/No.	Village	Thana Number	Thana	District	Area in acres	Remarks
1.	Targa	305	Topchanchi	Dhanbad—	694.65	Full
2.	Radhanagar	303	Topchanchi	Dhanbad	473.60	Full
3.	Suraiyadih	297	Topchanchi	Dhanbad	53.48	Full
4.	Deoghara	302	Topchanchi	Dhanbad	832.64	Full

— 2054.37 Acres (Approximately)
or 821.7 hectares (approximately)

Boundary description

A—B	Line passes along the northern boundary of mouza Targa and north western boundary of mouza Suriyadih and meets at point "B".	E—F	Line passes along the Southern boundary of mouza Deoghara and meets at point "F".
B—C	Line passes along the north eastern boundary of mouza Suriyadih and meets at point "C".	F—G	Line passes along the eastern boundary of mouza Radhanagar and meets at point "G".
C—D	Line passes along the northern boundary of mouza Deoghara and meets at point "D".	G—H	Line passes along the southern boundary of mouza Radhanagar and meets at point "H".
D—E	Line passes along the eastern boundary of mouza Deoghara and meets at point "E".	H—I	Line passes along the Western boundary of mouza Radhanagar and meets at point "I".

- I—J Line passes along the southern boundary of mouja Targa and meets at point "J"
- J—K Line passes along the eastern boundary of mouja Targa and meets at point "K"
- K—L Line passes along the Southern boundary of mouja Targa and meets at point "L"
- L—M Line passes along the western boundary of mouja Targa and meets at point "M"
- M—N Line passes along with Southern boundary of mouja Targa and meets at point "N"
- N—O Line passes along the southern boundary of mouja Targa and meets at point "O"
- O—P Line passes along the southern boundary of mouja Targa and meets at point "P"
- P—A Line passes along the western boundary of mouja Targa and meets at point "A"

[F. No. 43015/11/85-CA]

का. अ. 5181.—केन्द्रीय सरकार ने, कोयला धारक क्षेत्र (अर्जन और विकास) अधिनियम, 1957 (1957 का 20) की धारा 4 की उप-धारा (1) के अधीन भारत सरकार के भूतत्त्व ऊर्जा मंत्रालय, कोयला विभाग, की अधिसूचना का आ.सं. 4043, तारीख 12 नवम्बर, 1984 द्वारा, जो भारत के राजपत्र, भाग 2, खंड 3, उप खंड (ii) तारीख 1 दिसम्बर, 1984 में प्रकाशित की गई थी, उस अधिसूचना में उपाबद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट परिश्रेत में 426.73 हेक्टर (लगभग) या 1054.45 एकड़ (लगभग) माप की भूमि में कोयले का पूर्वेक्षण करने के अपने आणय की सूचना दी थी;

और केन्द्रीय सरकार का यह समाधान हो गया है कि उक्त भूमि के किसी भाग में कोयला अभिप्राप्त है;

अतः, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इसमें संशोधन अनुसूची में वर्णित 397.73 हेक्टर (लगभग) या 982.82 एकड़ (लगभग) माप की भूमि में, खनिजों के खनन, खुदाई, वेधन, खोदने और खोजने तथा उन्हें प्राप्त करने, निकालने और ले जाने के अधिकार के अर्जन करने के अपने आणय की सूचना देती है;

टिप्पण 1: इस अधिसूचना के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र के रेखांक सं. जी.सी./एम/एल./306, तारीख 11 फरवरी, 1985 का निरीक्षण कलक्टर, सम्बलपुर (उड़ीसा) के कार्यालय में या कोयला नियंत्रक, 1, काउन्सिल हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता के कार्यालय में अथवा बैस्टर्न कोलफील्ड्स लि. (राजस्व अनुभाग) कोयला एस्टेट, सिविल सार्जिस, नागपुर-440001 (महाराष्ट्र) के कार्यालय में किया जा सकता है;

टिप्पण 2: पूर्वांकित अधिनियम की धारा 8 के उपबंधों की ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता है जिसमें निम्नलिखित उपबंध हैं:—

अर्जन के प्रति आक्षेप:

"8(1)—किसी ऐसी भूमि में, जिसकी बाबत धारा 7 के अधीन अधिसूचना जारी की गई है, हितवद्ध कोई भी व्यक्ति अधिसूचना जारी किए जाने के तीस दिन के भीतर संपूर्ण भूमि या उसके किसी भाग या ऐसी भूमि में या उस पर के किन्हीं अधिकारों का अर्जन किए जाने के बारे में आक्षेप कर सकता है।

स्पष्टीकरण: इस धारा के अधीनस्थित किसी व्यक्ति की ओर से यह कृपा आक्षेप नहीं माना जाएगा कि वह स्वयं उस भूमि

में कोयला, उत्पादन के लिए खनन संक्रियाएं करना चाहता है और ऐसी संक्रियाएं केन्द्रीय सरकार या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा नहीं की जानी चाहिए।

(2) उपधारा (1) के अधीन प्रत्येक आक्षेप दायर प्रतिकारी को लिखित रूप में दिया जाएगा और सक्षम प्राधिकारी आक्षेपकर्ता की स्वयं सुने जाने का या विधि व्यवसायी द्वारा सुनवाई का अवसर देगा और ऐसे सभी आक्षेपों को सुनने के पश्चात और ऐसे अनिश्चित अर्थ, यदि कोई है, करने के पश्चात जो वह आवश्यक समझे, या तो धारा 7 की उपधारा (1) के अधीन अधिसूचित भूमि के या ऐसी भूमि में या उस पर के अधिकारों के संबंध में एक रिपोर्ट या ऐसी भूमि के विभिन्न टुकड़ों या ऐसी भूमि में या उस पर के अधिकारों के संबंध में आक्षेपों पर आने तक सिक रिपोर्टों और उसके द्वारा की गई कार्यवाई के अभिलेख सहित विभिन्न रिपोर्टों केन्द्रीय सरकार को उसके विनिश्चय के लिए देगा।

(3) इस धारा के प्रयोजनों के लिए वह व्यक्ति किसी भूमि से हितवद्ध समझा जाएगा जो प्रतिकर में हित का दावा करने का हकदार होता यदि भूमि या ऐसी भूमि में या उस पर के किन्हीं अधिकारों का इस अधिनियम के अधीन अर्जन कर लिया जाता है।

टिप्पण 3: केन्द्रीय सरकार ने, कोयला नियंत्रक, 1, काउन्सिल हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता को उक्त अधिनियम के अधीन सक्षम प्राधिकारी नियुक्त किया है।

अनुसूची

ओरिएंटल खान सं. 4 का उत्तरी पश्चिमी ब्लॉक आई बी पाटो क्षेत्र
जिला सम्बलपुर (उड़ीसा)

खनन अधिकार:

क्रम सं.	ग्राम का नाम	तहसील	जिला	क्षेत्र एकड़ में	टिप्पणियां
1.	जुवान मुण्डा	धारसगुडा	सम्बलपुर	109.87	भाग
2.	अमादरहा	धारसगुडा	सम्बलपुर	466.66	भाग
3.	बन्नातका	धारसगुडा	सम्बलपुर	37.66	भाग
4.	जमीदारी बन	धारसगुडा	सम्बलपुर	368.83	भाग

कुल योग: 982.82 एकड़ (लगभग)

या

397.73 हेक्टर (लगभग)

जुवान मुण्डा ग्राम में अर्जित किए जाने वाले प्लॉट सं.

1 से 8, 9 (भाग), 10 से 17, 18 (भाग), 20 (भाग), 106, 107, 108 (भाग), 109 से 113, 115 से 119, 145, 151, 154, 157 (भाग), 162 (भाग), और 174:

अमादरहा ग्राम में अर्जित किए जाने वाले प्लॉट सं.:

1 से 97, 98 (भाग), 99 से 252, 252 (भाग), 254 से 279, 280 (भाग), 281 से 286, 287 (भाग), 289 से 302, 303 (भाग), 304 (भाग), 305 (भाग), 306, 308 (भाग), 320, (भाग), 321 (भाग), 322 से 334, 335 (भाग), 336 (भाग), 337 (भाग), 338 (भाग), 343 (भाग), 344 (भाग), 351 (भाग) 352, 353, 354 (भाग), 355 से 360, 361 (भाग), 362, 363, 373 (भाग), 374 (भाग), 384 (भाग), 333/399, 52/400, 88/401, 60/403, 244/404, 282/405, 289/406, 269/407, 92/408,

244/409, 270/410, 188/411, 186/412, 177/413, 128/414
 238/415, 236/416, 238/417, 238/418, 240/419, 199/420
 265/421, 363/424 (भाग), 129/425, 126/426
 14/427, 195/428, 23/429, 82/430, 33/431, 105/432,
 24/433, 201/434, 48/435, 56/436, 70/437, 98/438
 (भाग), 98/439, 70/440, 76/441, 76/442, 76/443, 130/444,
 130/445, 76/446, 300/447, 355/448, 191/449,
 191/450, 43/451, 220/452 और 56/454.

वप्राचका ग्राम में अजित किए जाने वाले प्लॉट सं. :

546 (भाग)

जमींदारी वन :

भूख-कटाई श्रृंखला (केलिंग सौराज) 22 से 25, 26 (भाग),

27 (भाग) 28 (भाग), 29 (भाग), और 31 से 35 :

सीमा वर्णन :

क-ख रेखा, जुनातीमुण्डा ग्राम के प्लॉट सं. : 108, 162,
 9, 157, 18 और 30 से और वप्राचका ग्राम
 के प्लॉट सं. 546 से होकर जाती है और फिर
 जमींदारी वन पर्वत श्रृंखला संख्यांक 29 में से होकर
 जाती है और उसी श्रृंखला के बिन्दु 'ख' पर
 मिलती है।

ख-ग रेखा, जमींदारी वन पर्वत श्रृंखला संख्यांक 29, 28, 27
 और 26 से होकर जाती है और पर्वत श्रृंखला
 संख्यांक 26 की उत्तरी सीमा पर, बिन्दु 'ग' पर
 मिलती है।

ग-घ रेखा, छलकुथी ग्राम और जमींदारी वन की सम्मिलित
 सीमा के साथ-साथ जाती है और छलकुथी,
 बादजोन और जमींदारी वन ग्रामों के त्रिकोणात्मक
 मिलन स्तम्भ पर, बिन्दु 'घ' पर मिलती है।

घ-ङ रेखा, बादजोन ग्राम और जमींदारी वन की सम्मिलित
 सीमा के साथ-साथ जाती है और उसी सीमा पर,
 बिन्दु 'ङ' पर मिलती है।

ङ-च रेखा, पर्वत श्रृंखला संख्यांक 35 और 36 की सम्मि-
 लित सीमा के साथ-साथ जमींदारी वन से होकर
 और पर्वत श्रृंखला संख्यांक 35 और 34 की
 दक्षिणी सीमा के साथ-साथ फिर पर्वत श्रृंखला
 संख्यांक 21 और 22 की सम्मिलित सीमा के
 साथ-साथ जाती है और अमादरहा ग्राम की
 उत्तरी सीमा पर, बिन्दु 'च' पर मिलती है।

च-छ रेखा, अमादरहा ग्राम और जमींदारी वन की सम्मिलित
 सीमा के साथ-साथ जाती है और अमादरहा
 छालिदरहा और जमींदारी वन ग्रामों के
 त्रिकोणात्मक मिलन स्तम्भ पर, बिन्दु 'छ' पर
 मिलती है।

छ-ज रेखा, अमादरहा ग्राम के प्लॉट सं. : 374, 384,
 373, 361, 424 और 354 से होकर जाती है
 और बिन्दु 'ज' पर मिलती है।

ज-झ रेखा, अमादरहा ग्राम के प्लॉट सं. 351, 253,
 280, 303, 305, 304, 306, 287, 320,
 321, 335, 336, 337, 338, 98, 438,
 343 और 344 से होकर जाती है और अमादरहा
 और गंडधोरा ग्रामों की सीमा के साथ-साथ

आगे जाती है और अमादरहा, जुनातीमुण्डा और
 गंडधोरा (वजराजनगर शहर यूनिट सं. 3)
 ग्राम के त्रिकोणात्मक मिलन स्तम्भ पर, बिन्दु
 'झ' पर मिलती है।

झ-क रेखा, जुनातीमुण्डा ग्राम की दक्षिणी सीमा के साथ-
 साथ, फिर प्लॉट सं. 108 से जाती है और
 आरंभिक बिन्दु 'क' पर मिलती है।

[सं. 43015/11/85-सी.ए.]

S.O. 5161.—Whereas by the notification of the Government of India in the late Ministry of Energy (Department of Coal), S.O. No. 4043 dated 11 November, 1984 under sub-section (1) of section 4 of the Coal Bearing Areas (Acquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957) and published in the Gazette of India in Part II, Section 3, sub-section (ii) dated the 1st December, 1984, the Central Government gave notice of its intention to prospect for coal the inlands measuring 426.73 hectares (approximately) or 1054.46 acres (approximately) in the locality specified in the Schedule annexed to that notification;

And whereas the Central Government is satisfied that coal is obtainable in a part of the said lands;

Now therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 7 of the said Act, the Central Government hereby gives notice of its intention to acquire the rights to mine, quarry, bore, dig and search for, win, work and carry away minerals in the lands measuring 397.73 hectares (approximately) or 982.82 acres (approximately) described in the Schedule appended hereto.

Note—1 : The plan bearing No. OC/ML/306 dated the 11th February, 1985 of the area covered by this notification may be inspected in the Office of the Collector, Sambalpur (Orissa) or in the Office of the Coal Controller, 1, Council House Street, Calcutta or in the Office of the Western Coalfields Limited (Revenue Section), Coal Estate, Civil Lines, Nagpur-440001 (Maharashtra).

Note-2 : Attention is hereby invited to the provisions of Section 8 of the aforesaid Act, which provides as follows :

OBJECTIONS TO ACQUISITION :

"(8) (1) Any person interested in any land in respect of which a notification under section 7 has been issued may within thirty days of the issue of the notification, object to the acquisition of the whole or any part of the land or of any rights in or over such land.

EXPLANATION :

It shall not be an objection within the meaning of this section for any person to say that he himself desires to undertake mining operations in the land for the production of coal and that such operations should not be undertaken by the Central Government or by any other person.

(2) Every objection under sub-section (1) shall be made to the Competent Authority in writing and the Competent Authority shall give the objector an opportunity of being heard either in person or by a legal practitioner and shall, after hearing all such objections and after making such further enquiry, if any, as he thinks necessary, either makes a report in respect of the land which has been notified under sub-section (1) of Section 7 or of rights in or over such land, or make different reports in respect of different parcels of such land or of rights in or over such land, to the Central Government, containing his recommendations on the objections, together with the record of the proceedings held by him for the decision of that Government.

- (3) For the purpose of this section, a person shall be deemed to be interested in land who would be entitled to claim an interest in compensation if the land or any rights in or over such land were acquired under this Act."

Note—3 : The Coal Controller, 1, Council House Street, Calcutta has been appointed by the Central Government as the Competent Authority under the Act."

SCHEDULE
NORTH WEST BLOCK OF ORIENT MINE NO. 4
IB Valley Area
District Sambalpur (Orissa)

MINING RIGHTS

Serial Number	Name of village	Tahsil	District	Area in acres	Remarks
1.	Junanimunda	Jharsuguda	Sambalpur	109.87	Part
2.	Amadarha	Jharsuguda	Sambalpur	466.66	Part
3.	Baghrachaha	Jharsuguda	Sambalpur	37.66	Part
4.	Zamindar Forest	Jharsuguda	Sambalpur	368.63	Part

Grand Total :

982.82 acres (approximately)
or 377.73 hectares (approximately)

Plot numbers to be acquired in village Junanimunda :

1 to 8, 9 (Part), 10 to 17, 18 (Part), 30 (Part), 106, 107, 108 (Part), 109 to 113, 115 to 119, 145, 151, 157 (Part), 162 (Part) and 174.

Plot numbers to be acquired in village Amadarha :

1 to 97, 98 (Part), 99 to 252, 253 (Part), 254 to 279, 280 (Part), 281 to 286, 287 (Part), 289 to 302, 303 (Part), 304 (Part), 305 (Part), 306, 308 (Part), 320 (Part), 321 (Part), 322 to 334, 335 (Part), 336 (Part), 337 (Part), 338 (Part), 343 (Part), 344 (Part), 351 (Part), 352, 353, 354 (Part), 355 to 360, 361 (Part), 362, 363, 373 (Part), 374 (Part), 384 (Part), 233/399, 52/400, 88/401, 60/403, 244/404, 282/405, 289/406, 269/407, 92/408, 244/409, 270/410, 188/411, 186/412, 177/413, 128/414, 238/415, 236/416, 238/417, 238/418, 240/419, 199/420, 265/421, 363/424, (Part), 129/425, 126/426, 24/427, 195/428, 23/429, 82/430, 23/431, 105/432, 24/433, 201/434, 48/435, 56/436, 70/437, 98/438 (Part), 98/439, 70/440, 70/441, 76/442, 76/443, 130/444, 130/445, 76/446, 300/447, 355/448, 191/449, 191/450, 43/451, 220/452, and 56/454.

Plot numbers to be acquired in village Baghrachaha :
546 (Part).

Zamindari Forest :

Felling series number 22 to 25, 26 (Part), 27 (Part), 28 (part), 29 (Part) and 31 to 35.

Boundary description :

A—B— Line passes through village Junanimunda in plot numbers 108, 162, 9, 157, 18 & 30 and

through village Baghrachaka in plot number 546, then proceeds through Zamindari forest in felling series number 29 and meets in the same series at point "B"

B—C Line passes through Zamindari forest in felling series number 29, 28, 27 and 26, and meets on the northern boundary of felling series number 26 at point 'C'

C—D Line passes along the common boundary of village Chhelkuthi and Zamindari forest and meets at Tri-junction Pillar of villages Chhelkuthi Bad Job and Zamindari forest at point 'D'

D—E Line passes along the common boundary of village Bad Job and Zamindari forest and meets on the same boundary at point 'E'

E—F Line passes through Zamindari forest along the common boundary of felling series number 35 & 36 and proceeds along southern boundary of felling series number 35 & 34, then along the common boundary of felling series number 21 & 22, and meets on northern boundary of village Amadarha at point 'F'

F—G Line passes along the common boundary of village Amadarha and Zamindari forest and meets at tri-junction pillar of villages Amadarha, Chhunalibera and Zamindari forest at point 'G'

G—H Line passes through village Amadarha in plot numbers 374, 384, 373, 361, 424 and 354 and meets at point 'H.'

H—I Line passes through village Amadarha in plot numbers 351, 253, 280, 308, 305, 304, 303, 287, 320, 321, 335, 336, 337, 338, 98, 438, 343 and 344, then proceeds along village boundary of villages Amadarha and Gandghora and meets on the tri-junction pillar of villages Amadarha, Junanimunda and Gandghora (Bajra nagar town unit No. 3) at point 'I.'

I—A Line passes along the southern boundary of village Junanimunda, then proceeds in plot numbers 108 and meets at the starting point 'A.'

[No. 43015/14/85-CA]

नई दिल्ली, 25 अक्टूबर, 1985

का.आ. 5162:—केन्द्रीय सरकार ने, भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय कोयला विभाग की अधिसूचना सं. 816 तारीख 2 मार्च, 1984 द्वारा जो भारत के राजपत्र, भाग 2, खंड 3 उपखंड (i) तारीख 17 मार्च, 1984 में प्रकाशित की गई थी, उस अधिसूचना से संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट परिच्छेद में माप में 349.00 एकड़ (लगभग) या 141.23 हेक्टर (लगभग) भूमि का अर्जन करने के अपने आशय की सूचना कोयला धारक क्षेत्र (अर्जन और विकास) अधिनियम, 1957 (1957 का 20) की धारा 7 की उपधारा (i) के अधीन दी थी;

और सक्षम प्राधिकारी ने, उक्त अधिनियम की धारा 8 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार को अपनी रिपोर्ट दे दी है;

और केन्द्रीय सरकार का पूर्वोक्त रिपोर्ट पर विचार करने के पश्चात् तथा बिहार सरकार से परामर्श करने के पश्चात् यह समाधान हो गया है कि इससे संलग्न अनुसूची में वर्णित माप में 349.00 एकड़ (लगभग) या 141.23 हेक्टर (लगभग) भूमि का अर्जन कर लिया जाना चाहिए;

अतः, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 9 की उपधारा (i) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, घोषणा करती है कि सन्त अनुसूची में वर्णित, माप में 349.00 एकड़ (लगभग) या 141.23 हेक्टर (लगभग), भूमि का अर्जन किया जाना है।

2. इस अधिसूचना के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र के रेखांकित की निरीक्षण उपायक गिरिडीह (बिहार) के कार्यालय में या कोयला निबंधक, 1. कार्मिल हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता के कार्यालय में या सेन्ट्रल कोलफील्ड्स लि. (राजस्व अंतर्भाग), दरभंगा हाउस, रांची (बिहार) के कार्यालय में किया जा सकता है।

अनुसूची
गुजरडीह ब्लॉक विस्तार
(पूर्वी बोकारो कोयला क्षेत्र)
बिहार
रेखांकित सं. राजस्व/105/84
तारीख 11-7-1985
(जिसमें अर्जित भूमि दिखाई गई है)
सभी अधिकार

क्र.सं.	धाना	धाना सं.	जिला	क्षेत्र	टिप्पणियाँ
1.	माकोली नवाडीह (बोरमो)	69 गिरिडीह		52.25	भाग
2.	गुजरडीह नवाडीह (बोरमो)	72 गिरिडीह		230.25	भाग
3.	चपरी नवाडीह (बोरमो)	73 गिरिडीह		66.500	भाग
कुल क्षेत्र या		349.00 एकड़ (लगभग)			
		141.23 हेक्टर (लगभग)			

ग्राम माकोली में अर्जित प्लॉट संख्यांक 1 (भाग) ग्राम गुजरडीह में अर्जित प्लॉट संख्यांक 212 (भाग) ग्राम चपरी में अर्जित प्लॉट संख्यांक 1440 (भाग)

सीमा वर्णन

क-ख- रेखा ग्राम चपरी में प्लॉट सं. 763, 764, 767 और 766 से होकर जाती है और बिन्दु "ख" पर मिलती है।

ख-ग- रेखाएं ग्राम चपरी में प्लॉट सं. 1440 में से माकोली ग्राम प्लॉट सं.

घ-ड- और गुजरडीह ग्राम में प्लॉट सं. 212 से होकर जाती है (जो उक्त अधिनियम की धारा 9 (1) के अधीन अर्जित गुजरडीह ब्लॉक की सम्मिलित सीमा है) और बिन्दु "ज" पर मिलती है।

च-छ-ज-रेखाएं ग्राम गुजरडीह में प्लॉट सं. 212 से होकर जाती है और बिन्दु "ज" पर मिलती है।

ज-झ-रेखा ग्राम गुजरडीह के प्लॉट सं. 160, 155 की पूर्वी सीमा, प्लॉट सं. 158 की पूर्वी और दक्षिणी सीमा प्लॉट सं. 157 की दक्षिणी सीमा, प्लॉट सं. 155 की पूर्वी सीमा प्लॉट सं. 154 की पूर्वी और दक्षिणी सीमा प्लॉट सं. 153 और 152 की दक्षिणी प्लॉट सं. 155 की दक्षिणी सीमा प्लॉट सं. 91, 78 की पूर्वी सीमा प्लॉट सं. 77 की पूर्वी और दक्षिणी सीमा प्लॉट सं. 76 की उत्तरी सीमा पूर्वी और दक्षिणी सीमा प्लॉट सं. 80 की भागतः पूर्वी और दक्षिणी सीमा, प्लॉट सं. 71, 72, 73 की पूर्वी सीमा, प्लॉट सं. 74 की पूर्वी सीमा और भागतः दक्षिणी सीमा प्लॉट सं. 212 में से और प्लॉट सं. 75 की भागतः पूर्वी सीमा से होकर जाती है और बिन्दु "झ" पर मिलती है।

झ-ञ-ट- रेखाएं ग्राम गुजरडीह और माकोली, चपरी और माकोली की भागतः सम्मिलित सीमा के माप-माप भागी हैं और बिन्दु "ट" पर मिलती है।

ड-ए-रेखा तिसरी नदी के भागतः बायें किनारे के साथ-साथ जाती है और बिन्दु "ड" पर मिलती है।

ड-क-रेखा ग्राम चपरी के प्लाट से 1440 से होकर जाती है और आरंभिक बिन्दु "क" पर मिलती है।

[सं. 43019/19/84—सी. ग.]
ममय सिंह, अवर सचिव

New Delhi, the 25th October, 1985

S. O. 5162.—Whereas by the notification of the Government of India in the Ministry of Energy (Department of Coal) No. S.O. 846 dated the 2nd March, 1984, published in the Gazette of India part II, section 3, sub-section (ii), dated the 17th March, 1984, under sub-section (1) of section 7 of the Coal Bearing Areas (Acquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957), the Central Government gave notice of its intension to acquire the lands measuring 349.00 acres (approximately) or 141.23 hectares (approximately) in the locality specified in the Schedule appended to that notification.

And whereas the Competent Authority, in pursuance of section 8 of the said Act, has made his report to the Central Government:

And whereas the Central Government, after considering the report aforesaid and after consulting the Government of Bihar, is satisfied that the lands measuring 349.00 acres (approximately) or 141.23 hectares (approximately) described in the Schedule appended hereto;

should be acquired.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 9 of the said Act, the Central Government hereby declares that the lands measuring 349.00 acres (approximately) or 141.23 hectares (approximately) described in the said schedule.

are hereby acquired.

2. The plans of the area covered by this notification may be inspected in the Office of the Deputy Commissioner, Giridih (Bihar) or in the Office of the Coal Controller, 1, Council House Street, Calcutta or in the Office of the Central Coalfields Limited (Revenue Section) Darbhanga House, Ranchi (Bihar).

SCHEDULE

Gunjardih Block Extn.
East Bokaro Coalfield
Bihar

Drg. No. Rev/105/84

Date 11-7-84

(Showing lands acquired)

All Rights

Serial number	Village	Thana	Thana number	District	Area	Remarks
1.	Makoli	Nawadih (Berma)	69	Giridih	52.25	Part
2.	Gunjardih	-do-	72	Giridih	230.25	Part
3.	Chapri	-do-	73	Giridih	66.50	Part

Total area:— 347.00 acres (approximately)
or 141.23 hectares (approximately)

Plot number acquired in village Makoli : 1 (Part).

Plot number acquired in village Gunjardih : 212 (part).

Plot number acquired in village Chapri : 1440 (part).

Boundary Description:—

A-B line passes along eastern boundary of plot numbers 763, 764, 767 and 766 in village Chapri and meets at point 'B'.

B-C-D-E-F lines pass through plot number 1440 in village Chapri, through plot number 1 in village Makoli then through plot number 212 in village Gunjardih (which forms common boundary of Gunjardih) Block acquired u/s 9(1) of the said Act and meet at point 'F'.

F-G-H lines pass through plot number 212 in village Gunjardih and meet at point 'H'.

H-I line passes along eastern boundary of plot numbers 160, 155, eastern and southern boundary of plot number 158, Southern boundary of plot number 157 eastern boundary of plot number 155, eastern and southern boundary of plot number 154, southern boundary of plot numbers 153 and 152 southern boundary of plot number 155, eastern boundary of plot numbers 91, eastern and southern boundary of plot numbers 77, 76 Northern boundary Eastern & Southern boundary of 76, part eastern and southern boundary of plot number 80, eastern boundary of plot

numbers 71, 72, 73 eastern boundary and part southern boundary of plot number 74, through plot number 212 and part eastern boundary of plot number 75 in village Gunjardih and meets at point 'I'.

I-J-K-L-M lines pass along the part common boundary of villages Ganjardih and Makoli, Chapri and Makoli and meet at point 'M'.

M-N line passes along the part right bank of Tistri Nadi in village Chapri and meets at point 'N'.

N-A line passes through plot number 1440 in village Chapri and meets at starting point 'A'.

[No. 43019/19/84-CA]
SAMAY SINGH, Under Secy.

कृषि और ग्रामीण विकास मंत्रालय

(कृषि और सहकारिता विभाग)

नई दिल्ली, 17 अक्टूबर, 1985

का.आ. 5163.—केन्द्रीय सरकार, पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 (1960 का 59) की धारा 5 की उप-धारा (1) के खंड

(एच) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, एतद्वारा श्री स्यायामूर्ति बी. आर. कृष्ण अय्यर की स्वांगीय श्री न्यायमूर्ति श्री. राम प्रसाद राव के स्थान पर तत्काल से आगामी आदेशों तक भारतीय पशु कल्याण बोर्ड के सदस्य के रूप में नामजद करती है। केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा 5 की उप-धारा (3) के तहत श्री न्यायामूर्ति बी. आर. कृष्ण अय्यर की तत्काल से आगामी आदेशों तक बोर्ड के उपाध्यक्ष के रूप में भी नामजद करती है।

[नं. 14-6/85-एल. डी. I]

के. जी. कृष्णमूर्ति, उप सचिव

MINISTRY OF AGRICULTURE AND RURAL DEVELOPMENT

(Department of Agriculture and Cooperation)

New Delhi, the 17th October, 1985

S.O. 5163.—In exercise of the powers conferred by clause (h) of sub-section (1) of section 5 of the Prevention of Cruelty to Animals Act, 1960 (59 of 1960), the Central Government hereby nominates Shri Justice V. R. Krishna Iyer as Member of the Animal Welfare Board of India with immediate effect and until further orders in place of Late Shri Justice T. Rama Prasad Rao. The Central Government also nominates Shri Justice V. R. Krishna Iyer to be the Vice-Chairman of the Board with immediate effect and until further orders by virtue of sub-section (3) of section 5 of the said Act.

[No. 14-6/85-L.D. I]

K. G. KRISHNAMOORTHY, Dy. Secy.

साध और नागरिक पूर्ति मंत्रालय

(नागरिक पूर्ति विभाग)

भारतीय मानक संस्था

नई दिल्ली, 25 सितम्बर, 1985

का.आ. 5164.—भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिन्ह) विनियमावली, 1955 के विनियम 4 के अनुसार भारतीय मानक संस्था द्वारा अधिसूचित किया जाता है कि उक्त विनियमावली के विनियम 3 के उपविनियम (1) द्वारा प्रदत्त अधिकारों के अधीन, यहाँ अमसूची में दिये गये भारतीय मानकों के संशोधन जारी किये गये हैं।

अनुसूची

क्र.सं०	संशोधित मानक की पदसंख्या और शीर्षक	जिस राजपत्र में भारतीय मानक के तैयार होने की सूचना छपी उसकी संख्या और तिथि	संशोधन का संक्षिप्त विवरण	संशोधन लागू होने की तिथि	
1	2	3	4	5	
1.	IS : 158-1981 सिले-सिलाये तैयार पैन्ट-ब्रुश योग्य, बिटुमनी काले, मोसा रहित, एस्टिड, एन्कली और तापरोधी की विशिष्टि (मूल्य पुनरीक्षण)	—	संख्या 1 जुलाई 1982	खंड ए-2.1 संशोधित किया गया है।	1982-07-31
2.	IS : 443-1975 खंड के होलों के तम्बूने लेने और जाँच करने की विधियाँ (निर्माण पुनरीक्षण)	एम०ओ० 3530 दिनांक 1977-10-19	संख्या 2 दिसंबर 1982	(1) खंड 0.3 के बाद खंड 0.4 जोड़ा गया है और खंड 0.4 की संख्या बदल कर 0.5 की गयी है। (2) खंड 15.2.5 के बाद परिशिष्ट ए जोड़ा गया है।	1982-12-31
3.	IS : 748-1974 ईडलम की मूर्ति धोनियाँ (को विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	एम०ओ० 776 दिनांक 1976-02-21	संख्या 3 अक्तूबर 1982	(1) सारणी 1 और खंड 6.1 संशोधित किये गये हैं। (2) सारणी 2 के स्थान पर नयी सारणी रखी गयी है। (3) पृष्ठ 6 पर ("X" चिह्नित पादटिप्पणियों के स्थान पर नयी पादटिप्पणियाँ रखी गयी हैं।	1981-2-31

1	2	3	4	5	6
4. IS : 904-1975 भूमिगत पम्पहाउस नल, स्लूस वाल्व टाइप, की विशिष्टि (द्वितीय पुनरीक्षण)	एस०ओ० 3530 दिनांक 1977 11 19	संख्या 5 दिसंबर 1982	(1) खंड 3.1 के स्थान पर नया खंड रखा गया है। (2) खंड 3.2, 3.3, 3.5.1 (सी) 4.1 और 8.1 संशोधित किये गये हैं। (3) पृष्ठ 4 पर “*”, “+—” और “†” चिह्नित, पृष्ठ 5 पर “/” और “**” चिह्नित तथा पृष्ठ 8 पर “*” चिह्नित पादटिप्पणियों के स्थान पर नयी पादटिप्पणियाँ रखी गयी हैं।	1981 02 31	
5. IS : 1141-1973 इमारती लकड़ी सुखाने के लिए रीति संहिता (प्रथम पुनरीक्षण)	एस०ओ० 2039 दिनांक 1975 09 06	संख्या 1 नवम्बर 1983	(1) खंड 0.3 के स्थान पर नया खंड रखा गया है। (2) खंड 7.4.11.1 के बाद खंड 7.4.12 जोड़ा गया है।	1982 11 30	
6. IS : 1451-1979 हैडलूम की सूती दिवलों की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	ए	संख्या 1 नवंबर 1982	(1) खंड 6.1 और सारणी 1 संशोधित किये गये हैं। (2) पृष्ठ 5 पर “*” चिह्नित पादटिप्पणी के स्थान पर नयी पादटिप्पणी रखी गयी है। (3) सारणी 2 के स्थान पर नयी सारणी रखी गयी है।	1982 11 30	
7. IS : 1507-1977 तारुआक्सि-क्लोराइड जलविजर्जनय पाउडर सॉलिंग की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	एस०ओ० 613 दिनांक 1980 03 15	संख्या 1 नवंबर 1982	(1) सारणी 1 और खंड 3.3.1 के स्थान पर नयी सारणी और खंड रखे गये हैं। (2) खंड 3.1 संशोधित किया गया है। (3) पृष्ठ 5 पर “+” चिह्नित पादटिप्पणी के स्थान पर नयी पादटिप्पणी रखी गयी है। (4) पृष्ठ 6 पर खंड 5.2 के बाद परिशिष्ट ए जोड़ा गया है।	1982 11 30	
8. IS : 1579-1979 हैडलूम के सूती दिवलों की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	एस०ओ० 3449 दिनांक 1982 10 02	संख्या 1 अक्टूबर 1982	(1) खंड 6.1, सारणी 1 और सारणी 2 संशोधित किये गये हैं। (2) पृष्ठ 5 पर “†” चिह्नित पादटिप्पणी के स्थान पर नयी पादटिप्पणी रखी गयी है।	1982 10 31	
9. IS : 1989 (भाग 1)-1978 चमड़े के सुरक्षा बूटों और जूतों की विशिष्टि भाग 1 खनिकों के लिए (द्वितीय पुनरीक्षण)	एस०ओ० 2332 दिनांक 1982 07 03	*संख्या 1 नवंबर 1982	(1) खंड 8.3, 8.7, 9.16, 14.2, 14.7 और 14.16 के स्थान पर नये खंड रखे गये हैं। (2) खंड 8.5, 9.11, 15.6, 15.10 और 15.11 संशोधित किये गये हैं। (3) पृष्ठ 5 पर “\$” चिह्नित, पृष्ठ 6 पर “†” चिह्नित, पृष्ठ 13 पर “+” चिह्नित और पृष्ठ 14 पर “†” चिह्नित पादटिप्पणियों के स्थान पर नयी पादटिप्पणियाँ रखी गयी हैं। (4) पृष्ठ 4 पर खंड 3.2 के बाद खंड 3.3 जोड़ा गया है। (5) खंड 8.9.2, 8.13, 9.13, 10.4, 11.1, 14.9.2, 14.13, 15.12 और 17.1 में नयी सामग्री जोड़ी गयी है।	1982 11 30	
10. IS : 2141-1979 जस्तीकृत तान लकड़ी की विशिष्टि (द्वितीय पुनरीक्षण)	—	संख्या 2 सितंबर 1982	सारणी 1 और खंड 7.2.2 संशोधित किये गये हैं।	1982 09 30	

*भारतीय मानक संस्था प्रमाणन चिन्ह योजना के प्रयोजनों के लिये, यह संशोधन 1983 03 16 से लागू होगा।

1	2	3	4	5	6
11. IS : 2181-1973 बरतू कामों के लिये सिलाई की मशीनों की सुइयों की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	एस०ओ० 3069 दिनांक 1973 09 30	संख्या 1 नवंबर 1982	(1) खंड 0.3, 5.1 और 7.2 के स्थान पर नये खंड रखे गये हैं (2) खंड 8.1 और परिशिष्ट ए संशोधित किये गये हैं (3) खंड 5.1 के बाद खंड 5.2 जोड़ा गया है (4) सारणी 1 के बाद सारणी 2 जोड़ी गयी है तथा उसके बाद की सारणी 2 को सारणी 3 कर दिया गया है	1982 11 30	
12. IS : 2219-1962 मशीनी औजारों के फीज	एस०ओ० 898 दिनांक 1963 03 30	संख्या 1 अक्टूबर 1982	(1) सारणी 1 के नीचे "±" चिह्नित पावटिपणी के स्थान पर नयी पावटिपणी रखी गयी है (2) खंड 3.1.2 और खंड 3.2.2 के बाद क्रमशः खंड 3.1.3 और खंड 3.2.3 जोड़े गये हैं	1982 10 31	
13. IS : 2480-1973 सामान्य उपयोग के ठोस मशीनले कांच के बर्तारों की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	एस०ओ० 776 दिनांक 1976 02 21	संख्या 2 जून 1982	सारणी 1 संशोधित की गई है	1982 06 30	
14. IS : 2681-1979 तालों के साथ उपयोग के लिये अलौह धातु के सरकवा चटखनियों की विशिष्टि (द्वितीय पुनरीक्षण)	एस०ओ० 1342 दिनांक 1982 04 03	संख्या 1 जून 1982	(1) पृष्ठ 8 पर, सारणी 3, स्तम्भ 3 में "गुजाइश" के सामने "± 2" के स्थान पर ± 4 रखा गया है) (2) पृष्ठ 8 पर, सारणी 3, स्तम्भ 14 में "साइज 350, 375 और 450 के सामने "45" जोड़ा गया है	1982 06 30	
15. IS : 2720 (भाग 17)-1966 मिट्टी की जांच के लिये विधियां भाग 17: प्रवेष्टता का प्रयोग शालीय निर्धारण	एस०ओ० 1972 दिनांक 1967 06 10	संख्या 2 नवंबर 1982	(1) खंड 3.2.1, 4.1.1, 4.1.2 और 4.1.4 संशोधित किये गये हैं (2) पृष्ठ 4 पर "±", चिह्नित और "±" चिह्नित तथा पृष्ठ 10 पर "±", "±", "±", "±" और "±" चिह्नित पावटिपणियों के स्थान पर नयी पावटिपणियां रखी गयी हैं	1982 11 30	
16. IS : 2972 (भाग 1)-1979 बरतू मोटरों की विशिष्टि, भाग 1: बूम मोटर (प्रथम पुनरीक्षण)	—	संख्या 1 अक्टूबर 1982	आकृति 3 को संशोधित की गयी है	1982 10 31	
17. IS : 4682 (भाग 1)-1968 जलयानों के अस्तर और रासायनिक प्रक्रियाओं के लिये उपकरणों के वास्तव्यवहार संहिता भाग 1: रबर का अस्तर	एस०ओ० 3745 दिनांक 1968 10 26	संख्या 3 नवंबर 1982	खंड 5.3 के स्थान पर नया खंड रखा गया है	1982 11 30	
18. IS : 4985-1981 पेयजल प्रति के लिये अतस्मिकृत पीपीसी पाइपों की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	—	संख्या 1 नवंबर 1982	खंड 0.2.1, 5.2.1.3, सारणी 1 और 3 संशोधित किये गये हैं	1982 11 30	
19. IS : 5154-1980 संसकाम्म कर्षण [मिट्टियों की विशिष्टि] (प्रथम पुनरीक्षण)	—	संख्या 1 नवंबर 1982	(1) खंड 7.1.1.1 (ई) के बाद नयी सामग्री जोड़ी गयी है (2) खंड 7.10.7 के बाद खंड 7.11, 7.11.1, 7.11.2, 7.11.3, 7.11.4, 7.11.5, 7.11.6, 7.11.7 और 7.11.8 जोड़े गये हैं	1982 12 31	
20. IS : 5277-1978 ब्रिडिलोराब्स पायस-नीय साम्रण की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	एस०ओ० 1550 दिनांक 1981 05 23	संख्या 1 अक्टूबर 1982	(1) खंड 2.3.1 और ए-2.5 के स्थान पर नये खंड रखे गये हैं (2) खंड 2.3.1.1, ए-2.2.3 और ए-2.3.2 के बाद क्रमशः खंड 2.3.1.2, ए-2.2.4 और ए-2.3.3 जोड़े गये हैं	1982 10 31	

1	2	3	4	5	6
21. IS : 5852-1977 जूतों के लिये इस्पात की बनाव पंजा टोपियों की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	एस०ओ० 2116 दिनांक 1980 08 09	*संख्या 1 अगस्त 1982	(1) आकृति 1 और 2 के स्थान पर नयी आकृति रखी गयी है (2) खंड 4.1 के बाद खंड 4.1.1 जोड़ा गया है तथा तदनुसार बाव के खंडों की संख्याएं बदली गयीं हैं (3) "†" चिह्नित पावटिप्पणी के बाव "§" चिह्नित पावटिप्पणी जोड़ी गयी है	1982 08 31	
22. IS : 6363-1972 कार्यालय में पारिभाषिक शब्दावली	एस०ओ० 115 दिनांक 1975 01 11	संख्या 1 नवंबर 1982	(1) पृष्ठ 38 पर, सूचक, "बार" के नीचे अन्तिम प्रविष्टि में) "राउट डायग्राम" के स्थान पर "रूट डायग्राम" किया गया है (2) (सामान्य)—जहाँ कहीं परिभाषा के पाठ में "मशीन" शब्द आया है वहाँ उसके स्थान पर "उपकरण/मशीन" कर लेना चाहिये (3) खंड 3.1.1.2, 3.1.1.3, 3.1.1.4, 3.1.2.1 और 5.7.6 संशोधित किये गये हैं। (4) खंड 3.1.1.5 के बाद खंड 3.1.1.6 जोड़ा गया है। (5) खंड 4.1.14 के बाद नयी सामग्री जोड़ी गयी है।	1982 11 30	
23. IS : 6695-1972 अद्युग्मिकरण के संरक्षण और पोषण के लिए नियमावली	एस०ओ० 2558 दिनांक 1975 08 09	संख्या 1 नवंबर 1982	सारणी 1, 2 और 3 संशोधित की गयी है	1982 11 30	
24. IS : 6787-1973 प्लेट, बोत, सैकलाफलिन एस. ओ. 1290 की विशिष्टि	एस०ओ० 1290 दिनांक 1975 04 26	संख्या 1 नवंबर 1982	(1) आकृति 1 के स्थान पर नयी आकृति रखी गयी है (2) खंड 3 के बाद खंड 3.1 जोड़ा गया है।	1982 11 30	
25. IS : 6789-1972 वेदीयुक्त ज्वालामुखी केवल युग्मकों और उपयोगों की विशिष्टि	एस०ओ० 2689 दिनांक 1975 08 16	संख्या 1 अक्तूबर 1982	सारणी 7 संशोधित की गयी है	1982 10 31	
26. IS : 6914-1978 संरचना इस्पात (मानक एस. ओ. 3211 किस्म) के रूप में बेस्लन के लिए इलेक्ट्रिक इंगटों और लगातार इलेक्ट्रिकों की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	एस०ओ० 3211 दिनांक 1982 08 22	*संख्या 1 अप्रैल 1982	(1) खंड 7.2 के स्थान पर नया खंड रखा गया है (2) पृष्ठ 6 पर खंड 7.2.1 को हटा दिया गया है और बाद के खंड 7.2.2 की संख्या बदल कर 7.2.1 की गयी है।	1982 04 30	
27. IS : 6976-1973 धारा, कुंडस्वर, हीरा-मोत, की विशिष्टि	एस०ओ० 2081 दिनांक 1975 07 08	संख्या 1 नवंबर 1982	(1) आकृति 1 के स्थान पर नयी आकृति रखी गयी है (2) खंड 2 के बाद खंड 2.1 जोड़ा गया है।	1982 11 30	
28. IS : 7187-1974 धातुसमीक्षकों की विशिष्टि	—	संख्या 2 दिसंबर 1982	संशोधन सं. 1 के पृष्ठ 2 पर पहली पंक्ति में "खंड 5.3 के स्थान पर खंड 5.1" रखा गया है।	1982 09 30	
29. IS : 7358-1974 धर्मोपपल की विशिष्टि	एस०ओ० 2868 दिनांक 1976 08 07	संख्या 1 दिसंबर 1982	खंड 9.2.5 और परिशिष्ट की के स्थान पर नया खंड और परिशिष्ट रखा गया है।	1982 12 31	
30. IS : 7609-1975 तंबुओं के लिए सामान्य आवश्यकताएं	एस०ओ० 1892 दिनांक 1977 07 11	संख्या 2 नवंबर 1982	सारणी 1 के स्थान पर नयी सारणी रखी गयी है।	1982 01 1	

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
31.	IS: 7652-1975 रुधिरदाबमापी, निर्रव प्रकार, की विशिष्टि	एस. प्रो. 2547 दिनांक 1977-06-13	*संख्या 1 नवंबर 1982	(1) खंड 4.1.1, 4.4, 4.4.1.1 और 6.2 संशोधित किये गये हैं (2) खंड 4.2 के स्थान पर नया खंड रखा गया है (3) प्राकृति 2 और पृष्ठ 3 पर भौतिक-आरिक्त सारणी के स्थान पर नयी प्राकृति और सारणी रखी गयी है	1982-11-30
32.	IS: 8708-1978 सेंटीजेल जलविस्फर्जनीय पावर सांद्रण	एस. प्रो. 3416 दिनांक 1980 12 13	संख्या 1 नवंबर 1982	(1) खंड 2.3.1 और सारणी 1 के स्थान पर नया खंड और नयी सारणी रखी गयी है। (2) खंड 3.1 संशोधित किया गया है (3) पृष्ठ 7 पर "*" चिह्नित पाठ टिप्पणी के के स्थान पर नई पाठ टिप्पणी रखी गई है।	1982-11-30
33.	IS: 9129-1979 बिजली के धैर्यों के लिए सुरक्षित धरण तंत्रों के वास्ते तकनीकी आवश्यकताएं	एस. प्रो. 2862 दिनांक 1981-10-17	संख्या 2 नवंबर 1982	(1) खंड 4.1, 4.3.1 और सारणी 4 संशोधित किये गये हैं। (2) प्राकृति 1 और 4 के स्थान पर नयी प्राकृतियां रखी गयी हैं। (3) पृष्ठ 10 पर खंड 6.3.3 हटा दिया गया है। (4) खंड 6.4, 6.4.1 और 6.4.2 के स्थान पर नये खंड रखे गये हैं। (5) खंड 0.4, के बाद खंड 0.5 जोड़ा गया है तथा बाद के खंड 0.5 की संख्या बदल कर 0.6 की गयी है। (6) खंड 4.3.1 के अंत में नयी सामग्री जोड़ी गई है।	1982-11-30
34.	IS: 9362-1980 म्यूटीकलोर कणिकाओं की विशिष्टि	— नवंबर 1982	संख्या 1 नवंबर 1982	(1) खंड ए-2.1.3, 2.2.2 और 2.2.4.1 संशोधित किये गये हैं। (2) खंड 2.2.1, 2.2.2.1, 2.2.3 और 2.3.1 के स्थान पर नये खंड रखे गये हैं। (3) खंड 2.2.3.1 और ए-1.1 हटाये गये हैं। (4) पृष्ठ 4 पर "+" चिह्नित पाठ-टिप्पणी के स्थान पर नयी पाठ-टिप्पणी रखी गयी है।	1982-11-30

*भारतीय मानक संस्था प्रमाणन चिह्न योजना के प्रयोजनों के लिए यह संशोधन 1983-03-16 से लागू होगा।

इन संशोधनों की प्रतियां भारतीय मानक संस्था, मानक भवन, 9 बहुदुरगाह जंकर मार्ग, नई दिल्ली-110002 और ग्रहमदाबद, बंगलौर, भोपाल, भुवनेश्वर, बम्बई, कलकत्ता, हैदराबाद, जयपुर, कानपुर, मद्रास, मोहाली, पटना, और तिरुवनन्तपुरम् स्थित इसके शाखा कार्यालयों में उपलब्ध हैं।

[सं. सीएसडी/13: 5]

MINISTRY OF FOOD AND CIVIL SUPPLIES

(Department of Civil Supplies)

INDIAN STANDARDS INSTITUTION

New Delhi, the 25th September, 1985

S.O. 5164—In pursuance of regulation 4 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations, 1955, the Indian Standards Institution, hereby, notifies that amendment(s) to the Indian Standard(s) given in the schedule hereto annexed have been issued under the powers conferred by the sub-regulation (1) of Regulation 3 of the said Regulations.

SCHEDULE

Sl. No. and title of the Indian No. Standard amended	No. and Date of Gazette Notification in which the establishment of the Indian Standard was notified	No. and Date of the Amendment	Brief Particulars of the Amendment	Date from which the Amendment shall have effect	
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
1. IS : 158—1981 Specification for ready mixed paint, brushing, bituminous black, lead free, acid, alkali and heat resisting (third revision)	—	No. 1 Jul 1982	Clause A-2.1 has been amended	1982-07-31	
2. IS : 443—1975 Methods of sampling and tests for rubber hoses (second revision)	S.O. 3530 dt. 1977-11-19	No. 2 Dec. 1982	(i) Clause 0.4 has been added after clause 0.3 and clause 0.4 has been renumbered as 0.5 (ii) Appendix A has been added after clause 15.2.5	1982-12-31	
3. IS : 748—1974 Specification for handloom cotton dhotis (first revision)	S.O. 776 dt., 1976-02-21	No. 3* Oct. 1982	(i) Table 1 and clause 6.1 have been amended (ii) Table 2 has been substituted by a new one (iii) Foot-notes with ‘*’ and ‘±’ marks (page 6) have been substituted by new one.	1982-10-31	
4. IS : 909—1975 Specification for underground fire hydrant, sluice-valve type (second revision)	S.O. 3530 dt. 1977-11-19	No. 5 Dec. 1982	(i) Clause 3.1 has been substituted by a new one (ii) Clauses 3.2, 3.3, 3.5.1(c), 4.1 and 8.1 have been amended (iii) Foot-notes with ‘*’, ‘±’ and ‘±’ marks (page 4), with ‘//’ and ‘***’ marks (page 5) and with ‘*’ mark (page 8) have been substituted by new ones	1982-12-31	
5. IS : 1141—1973 Code of practice for seasoning of timber (first revision)	S.O. 2939 1975-09-06	No. 1 Nov. 1982	(i) Clause 0.3 has been substituted by a new one (ii) Clause 7.4.12 has been added after clause 7.4.11.1	1982-11-30	
6. IS : 1451—1979 Specification for handloom cotton drills (first revision)	—	No. 1 Nov. 1982	(i) Clause 6.1 and Table 1 have been amended (ii) Foot-notes with ‘±’ mark (page 5) has been substituted by a new one (iii) Table 2 has been substituted by a new one	1982-11-30	

*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1983-03-16.

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
7. IS : 1507—1977	Specification for copper oxychloride water dispersible powder concentrates (second revision)	S.O. 612 dt. 1980-03-15	No. 1 Nov. 1982	(i) Table 1 and clause 2.3.1 have been substituted by new ones (ii) Clause 3.1 has been amended (iii) Foot-note with '±' mark (page 5) has been substituted by a new one (iv) Appendix A has been added at page 6 after clause 5.2	1982-11-30
8. IS : 1579—1979	Specification for handloom cotton twills (first revision)	S.O. 3449 dt. 1982-10-02	No. 1 Oct. 1982	(i) Clause 6.1, Table 1 and Table 2 have been amended (ii) Foot-note with '±' mark (page 5) has been substituted by a new one	1982-10-31
9. IS : 1989 (Pt I)—1978	Specification for leather safety boots and shoes : Part I For miners (Third revision)	S.O. 2322 dt. 1982-07-03	*No. 1 Nov 1982	(i) Clauses 8.2, 8.7, 8.16, 14.2, 14.7 and 14.16 have been substituted by new ones (ii) Clauses 8.5, 9.11, 9.12, 15.5, 15.10 and 15.11 have been amended (iii) Foot-notes with '§' mark (page 5), with '±' mark (page 6), with '±' mark (page 13) and '±' mark (page 14) have been substituted by new ones (iv) Clause 3.3 has been added after clause 3.2 at page 4 (v) New matter have been added in clause 8.9.2, 8.13, 9.13, 10.4, 11.1, 14.9.2, 14.13, 15.12 and 17.1	1982-11-30
10. IS : 2141—1979	Specification for galvanized stay strand (second-revision)	—	No. 2 Sep. 1982	Table 1 and clause 7.2.2 have been amended	1982-09-30
11. IS : 2181—1973	Specification for sewing machine needles for household purposes (first revision)	S.O. 3069 dt. 1975-09-13	No. 1 Nov. 1982	(i) Clauses 0.3, 5.1, and 7.2 have been substituted by new ones (ii) Clause 8.1 and Appendix A have been amended (iii) Clause 5.2 has been added after clause 5.1 (iv) Table 2 has been added after Table 1 and the subsequent Table 2 has been redesignated as Table 3	1982-11-30
12. IS : 2219—1962	Feeds for machine tools	S.O. 898 dt. 1963-03-30	No. 1 Oct. 1982	(i) Foot-note with 't' mark under Table 1 has been substituted by a new one (ii) Clauses 3.1.3 and 3.2.3 have been added after clauses 3.1.2 and 3.2.2 respectively	1982-10-31

*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1983-03-16.

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
13.	IS : 2480-1973 Specification for solid stem general purposes glass thermometers (<i>first revision</i>)	S.O. 776 dt. 1976-02-21	No. 2 Jun. 1982	Table 1 has been amended	1982-06-30
14.	IS : 2681-1979 Specification for non-ferrous metal sliding door bolts (aldrops) for use with pad locks (<i>second revision</i>)	S.O. 1342 dt. 1982-04-03	No. 1 Jan. 1982	(i) (Page 8, Table 3, Col 3, against (Tolerances)—Substitute '+4' for '±2'. (ii) (Page 8, Table 3, Col. 4, against 'Size 350, 315 and 450')—Add '45'	1982-06-30
15.	IS : 2720 (Pt. XVII)—1966 Methods of test for soils : Part XVII Laboratory determination of permeability	S.O. 1972 dt. 1967-06-10	No. 2 Nov. 1982	(i) Clauses 3.2.1, 4.1.1., 4.1.2 and 4.1.4 have been amended. (ii) Foot-notes with '+' marks and '‡' marks (page 4) and with '*', '+', '‡' and '\$' marks (page 10) have been substituted by new ones.	1982-11-30
16.	IS : 2972 (Pt I)-1979 Specification for textile motors : Part I looms motors (<i>first revision</i>).	—	No. 1 Oct. 1982	Fig. 3B has been amended.	1982-10-31
17.	IS : 4682 (Pt I)-1968 Code of practice for lining of vessels and equipment for chemical processes : Part I Rubber Lining	S.O. 3745 dt. 1968-10-26	No. 3 Nov. 1982	Clause 5.3 has been substituted by a new one.	1982-11-30
18.	IS : 4985-1981 Specification for unplasticised PVC pipes for potable water supplies (<i>first revision</i>)	—	No. 1 Nov. 1982	Clause 0.2.1, 5.2.1.3, Table 1 and 3 have been amended.	1982-11-30
19.	IS : 5154-1980 Specification for lead-acid traction batteries (<i>first revision</i>)	—	No. 1 Dec. 1982	(i) New matter has been added after clause 7.1.1.1(e) (ii) Clauses 7.11, 7.11.1, 7.11.2, 7.11.3, 7.11.4, 7.11.5, 7.11.6, 7.11.7 and 7.11.8 have been added after clause 7.10.7	1982-12-31
20.	IS : 5277-1978 Specification for dichloro-vos emulsifiable concentrates (<i>first revision</i>)	S.O. 1550 dt. 1981-05-23	No. 1 Oct. 1982	(i) Clauses 2.3.1. and A-2.5 have been substituted by new ones. (ii) Clauses 2.3.1.2, A-2.2.4 and A-2.3.3 have been added after clauses 2.3.1.1, A-2.2.3 and A-2.3.2 respectively.	1982-10-31
21.	IS : 5852-1977 Specification for protective steel toe caps for footwear (<i>first revision</i>).	S.O. 2116 dt. 1980-08-09	No. 1 Aug. 1982	(i) Fig. 1 and 2 have been substituted by new ones. (ii) Clause 4.1.1 has been added after clause 4.1 and the subsequent clauses have been renumbered accordingly. (iii) Foot-note with '\$' mark has been added after foot-note. with '‡' mark.	1982-08-31

*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1982-12-01

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
22. IS : 6363-1972 Glossary of terms in workstudy.	S.O. 115 No. 1 Nov 1982 dt. 1975-01-11		(i) (Page 38, Index, last entry under 'R') Substitute 'Route Diagram' for 'Rout diagram'	1982-11-20	
			(ii) (General)--Wherever the word 'Machine' appears in the text of definition it may be replaced by 'Equipment/Machine'.		
			(iii) Clauses 3.1.1.2, 3.1.1.3, 3.1.1.4, 3.1.2.1 and 5.7.6 have been amended.		
			(iv) Clauses 3.1.1.6 has been added after clause 3.1.1.5.		
			(v) New matter has been added after clause 4.1.14.		
23. IS : 6695-1972 Code for conservation and maintenance of honey bees	S.O. 2558 No. 1 Nov 1982 dt. 1975-08-09		Tables 1, 2 and 3 have been amended.	1982-11-30	
24. IS : 6787-1973 Specification for plate, bone, McLaughlin.	S.O. 1290 No. 1 Nov 1982 dt. 1975-04-26		(i) Fig. 1 has been substituted by a new one.	1982-11-30	
			(ii) Clause 3.1 has been added after clause 3.		
25. IS : 6789-1972 Specification for bolted flameproof cable couplers and adaptors.	S.O. 2669 No. 1 Oct. 1982 dt. 1975-08-16		Table 7 has been amended	1982-10-31	
26. IS : 6914-1978 Specification for cast billet ingots and continuously cast billets for rolling into structural steel (standard quality) (<i>first Revision</i>)	S.O. 2211 *No. 1 Apr 1982 dt. 1981-08-22		(i) Clause 7.2 has been substituted by a new one	1982-04-30	
			(ii) (Page 6, clause 7.2.1) Delete and renumber the subsequent clause '7.2.2' as '7.2.1'.		
27. IS : 6976-1973 Specification for awl, kuntscher, diamond pointed.	S.O. 2081 No. 1 dt. 1975-07-05 Nov. 1982		(i) Fig. 1 has been substituted by a new one.	1982-11-30	
			(ii) Clause 2.1 has been added after clause 2.		
28. IS : 7187-1974 Specification for ice cream cones.	— No. 2 Sep 1982		(Page 2 of Amendment No. 1, line 1) Substitute 'clause 5.1' for 'clause 5.3'.	1982-09-30	
29. IS : 7358-1974 Specification for thermocouples.	S.O. 2858 No. 1 Dec 1982 dt. 1976-08-07		Clause 9.2.5 and Appendix D have been substituted by a new one	1982-12-31	
30. IS : 7609-1975 General requirements for tents	S.O. 1892 No. 2 Nov. 1982 dt. 1977-06-11		Table 1 has been substituted by a new one.	1982-11-30	

*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1983-03-31.

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
31. IS : 7652-1975 Specification for sphygmomanometer, aneroid type	S.O. 2547 dt. 1977-08-13	No. 4 Nov. 1982	(i) Clause 4.1.1, 4.4, 4.4.1.1 and 6.2 have been amended. (ii) Clause 4.2 has been substituted by a new one. (iii) Fig. 2 and Informal table at page 3 have been substituted by new ones.	1982-11-30	
32. IS : 8708-1978 Specification for mancozeb water dispersible powder concentrates.	S.O. 3416 dt. 1980-12-13	No. 1 Nov. 1982	(i) Clause 2.3.1 and Table 1 has been substituted by a new one. (ii) Clause 3.1 has been amended. (iii) Foot-note with '*' mark (page 7) has been substituted by a new one.	1982-11-30	
33. IS : 9129-1979 Technical requirements for safe feeding systems for power threshers.	S.O. 2862 dt. 1981-10-17	No. 2 Nov. 1982	(i) Clauses 4.1, 4.3.1 and Table 4 have been amended. (ii) Fig. 1 and 4 have been substituted by new ones. (iii) (Page 10, clause 6.3.3)—Delete. (iv) Clauses 6.4, 6.4.1 and 6.4.2 have been substituted by new ones. (v) Clause 0.5 has been added after clause 0.4 and the subsequent clause 0.5 has been renumbered as 0.6 (vi) New matter has been added at the end of clause 4.3.1	1982-11-30	
34. IS : 7362-1980 Specification for butachlor granules.	—	No. 1 Nov. 1982	(i) Clauses A-2.1.3, 2.2.2 and 2.2.1.4 has been amended. (ii) Clauses 2.2.1, 2.2.2.1, 2.2.3 and 2.3.1 have been substituted by new ones. (iii) Clauses 2.2.3.1 and A-1.1-Delete. (iv) Foot-note with '+' mark (page 4) has been substituted by a new one.	1982-11-30	

Copies of these amendments are available with the Indian Standards Institution, Manak Bhavan, 7 Bahadur Shan Zafar Marg, New Delhi-110002 and also from its branch offices at Ahmedabad, Bangalore, Bhopal, Bhubaneswar, Bombay, Calcutta, Hyderabad, Jaipur, Kanpur, Madras, Mohali, Patna and Trivandrum.

[No. C M D/13 : 5]

क. आ. 5165.—जनसमय पर संशोधित भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन विज्ञान) विनियम 1955 के विनियम 4 के अनुसार भारतीय मानक संस्था द्वारा अधिसूचित किया जाता है कि उक्त विनियमों के विनियम (3) के उपविनियम (1) के अनुसार प्राप्त अधीन अनुसूची में दिए भारतीय मानकों के संशोधन जारी किए जाते हैं :

*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1983-03-16.

अनुसूची

क्र.सं. संशोधित भारतीय मानक की पत्र संख्या एवं शीर्षक	जिस राजपत्र में भारतीय मानक के निर्धारित होने की सूचना छपी थी उसकी संख्या तिथि एवं शीर्षक	संशोधन की संख्या और तिथि	संशोधन का संक्षिप्त विवरण	संशोधन लागू होने की तिथि	
1	2	3	4	5	6
1. IS : 186-1965 मन्मल की विशिष्टि (पुनरीक्षण)	एस. प्रो. 1992 दिनांक 1966 07 02	संख्या 2 फरवरी 1980	खंड 2.2.1 के बाद एक नयी टिप्पणी जोड़ी गई है।	1980 02 29	
2. IS : 203-1972 कौष्ठ बतियों के लिए गुष्क बैटनियों की विशिष्टि (तीसरा पुनरीक्षण)	एस. प्रो. 770 दिनांक 1975 03 08	*संख्या 2 अप्रैल 1980	(1) खंड 0.5 के स्थान पर, नया दिया गया है। (2) सारणी 3, 4 और 5 का संशोधन किया गया है।	1980 04 30	
3. IS : 220-1972 केरोमैलो टेनेट फाउंटन-पेन की स्पष्टि (0.1 प्रतिशत लौह युक्त) की विशिष्टि (दूसरा पुनरीक्षण)	एस. प्रो. 423 दिनांक 1975 02 15	संख्या 3 मार्च 1980	"IS : 8642-1977 पानी से बनी लिखने की स्याही के रंगों की विशिष्टि" के प्रकाशन को ध्यान में रखते हुए जिस में नीली स्याही के रंग की भ्रमेक्षण सम्मिलित की गई है, "IS : 2247-1962 स्याही उद्योग के लिए नीली स्याही की विशिष्टि" को वापिस ले लिया गया है। अतः यह संशोधन जारी किया जा रहा है।	1980 03 31	
4. IS : 233 (भाग 1 से 4)-1978 सूती कपड़े की लम्बाई प्राचल के निर्धारण की पद्धति (पहला पुनरीक्षण)	—	संख्या 1 मार्च 1980	पृष्ठ 15 पर सारणी 1 और खंड 4.2.4 का संशोधन किया गया है।	1983 03 31	
5. IS : 517-1967 मैथेनोल (मेथाइल अलकोहल) की विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	एस. प्रो. 1719 दिनांक 1968 05 18	संख्या 1 अप्रैल 1980	पृष्ठ 5 पर सारणी 1 का संशोधन किया गया है और सारणी के बाद "+" चिह्न वाली एक नई टिप्पणी जोड़ी गई है।	1980 04 30	
6. IS : 666 (भाग 2)-1972 जिंग बुशों की विशिष्टि भाग 2 नवीकरण जिंग बुशों (दूसरा पुनरीक्षण)	एस. प्रो. 423 दिनांक 1975 02 15	संख्या 1 अप्रैल 1980	पृष्ठ 3 पर सारणी 1 और पृष्ठ 4 पर सारणी 2 का संशोधन किया गया है।	1980 04 30	
7. IS : 1200 (भाग 6)-1974 भवन-निर्माण एवं मित्रिय इंजीनियरी कार्यों की संपन्न पद्धति भाग 6 उष्मासाह कार्य (दूसरा पुनरीक्षण)	एस. ओ. 988 दिनांक 1976 03 06	संख्या 1 फरवरी 1980	(1) खंड 3 10 क संशोधन किया गया है। (2) पृष्ठ 6 पर 'x' और '+' चिह्नों वाली पाद टिप्पणियों के स्थान पर नई पाद टिप्पणियां दी गई हैं।	1980 02 29	
8. IS : 1374-1979 सुगियों के चूम्मे की विशिष्टि (तीसरा पुनरीक्षण)	—	संख्या 1 मई 1980	पृष्ठ 5 पर सारणी 1 का संशोधन किया गया है।	1980 05 31	
9. IS : 1879 (भाग 1 से 10)-1975 कुटनीय तलवा लोहे के पाह्य की फिटिंग की विशिष्टि भाग 1 सामान्य अवस्थाएं (पहला पुनरीक्षण)	एस. ओ. 313 दिनांक 1979 10 27	संख्या 4 अप्रैल 1980	(1) खंड 11 एवं 11.1 के स्थान पर नये खंड दिये गये हैं। (2) पृष्ठ 7 पर '+' एवं 'x' चिह्नों वाली पाद टिप्पणियों को हटा दें। (3) खंड 6.1 के बाद खंड 6.1.1 को जोड़ा गया है। (4) सारणी 1 और 2 का संशोधन किया गया है।	1980 04 30	

*भारतीय मानक संस्था की प्रमाणन चिह्न योजना हेतु यह संशोधन 1980 07 91 से लागू होगा।

1	2	3	4	5	6
10. IS : 1883-1975 धातु के खानेदार रैक (घट-बढ़ सकने वाले) की विशिष्टि (दूसरा पुनरीक्षण)	--	संख्या 4 मार्च 1980	(1) खंड 7-1-1, 7-1-2 और 7-1-3 के स्थान पर नए खंड दिये गये हैं (2) "S" और "M" चिन्ह वाली पद टिप्पणियों के स्थान पर नई पाद टिप्पणियाँ दी गई हैं। (3) खंड 7.3 के बाद खंड 8, 8.1, 8.2, 8.3, 8.4 और 8.5 को जोड़ा गया है और अनुवर्ती खंडों को तदनुसार फिर से संख्या दी गई है। (4) (पृष्ठ 11, "*" चिन्ह वाली पद टिप्पणी) --वर्तमान पद टिप्पणी के बाद निम्नलिखित नई पद टिप्पणी को जोड़े :— "+" तैयार मिश्रित रोगन और इनमें का परीक्षण पद्धतियाँ (दूसरा पुनरीक्षण)	1980 03 31	
11. IS : 2032 (भाग 21) 1977 विद्युत औद्योगिकी में प्रयुक्त लेखाचित्रीय चिन्ह भाग 21 विद्युत झल्लाई उपकरण	--	संख्या 1 अप्रैल 1980	खंड 2.1.9, 2.1.11, 2.1.14, 2.1.15 और 2.1.16 का संशोधन किया गया है।	1980 04 30	
12. IS : 2052-1979 पशुओं के निश्वसन आह्व एस ओ 3820 की विशिष्टि (तीसरा पुनरीक्षण)	दिनांक 1979 11 24	संख्या 1 मई 1980	सारणी 1 का संशोधन किया गया है	1980 05 31	
13. IS : 2428-1964 मशीनिंग, प्रयोग की सीमा और रंग कोड के लिए कार्बाइड के प्रयोग	एस.ओ. 2729 दिनांक 1965 09 04	संख्या 1 मार्च 1980	(1) खंड 0-3, 0.4, 0.5, 0.6, एवं 0.7 के स्थान पर नए खंड दिये गये हैं (2) खंड 2.1 के बाद नया खंड 2.2 जोड़ा गया है।	1980-03-31	
14 IS : 2974 (भाग 3)—1975 मशीन सीकों के डिजाइन एवं निर्माण की रीति संहिता भाग 3 घूर्णन टाउप की मशीनों की नीचे (मध्य और उच्च आवृत्ति वाली) (पहला पुनरीक्षण)	एस.ओ. 3439 दिनांक 1978 12 02	संख्या 1 फरवरी 1980	(1) खंड 0.2, 2.0, 3 2.2 (बो), 4.62 1 और 5 1.2 (ने) का संशोधन किया गया है। (2) पृष्ठ 5 पर "*" चिन्ह वाली पृष्ठ 7 पर "--" चिन्ह वाली, पृष्ठ 10 पर "*" एवं "+" चिन्हों वाली और पृष्ठ 11 पर "*" चिन्ह वाली पद टिप्पणियों के स्थान पर नई पाद टिप्पणियाँ दी गई हैं। (3) खंड 4.6.1 एवं 6.1.3 के स्थान पर नये खंड दिए गए हैं। (4) परिशिष्ट 'सो' के स्थान पर नई परिशिष्ट दी गई है।	1980 02 29	
15. IS : 3314-1974 कार्यालय के सामान्य कार्यों के लिए फाइल रखने की दृष्टांत की कैबिनेट (अलमारी) (पहला पुनरीक्षण)	एस.ओ. 1892 दिनांक 1977 06 11	संख्या 3 फरवरी 1980	(1) खंड 5.10, 7.1, 7.2 और 7.2.1 को संशोधित किया गया है। (2) खंड 7.3 के बाद नये खंड 8, 8.1, 8.2, 8.3, 8.4 और 8.5 को जोड़ा गया है तथा अनुवर्ती खंडों को तदनुसार फिर से संख्यांकित किया गया है।	1980 02 29	

1	2	3	4	5	6
16. IS : 3450-1976 इथ से लिखने के कार्बन कागजों का विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	एस.ओ. 3823 दिनांक 1979 11 24	संख्या 1 फरवरी 1980	(1) (पृष्ठ 4, खंड 4.2 पंक्ति 2) IS : 3413-1966 "+" के स्थान पर IS : 3413-1977 "+" कर दे। (2) (पृष्ठ 4, "+" चिह्न वाली पाद टिप्पणी) — वर्तमान पाद-टिप्पणी के स्थान पर निम्नलिखित पादटिप्पणी कर ले ; "+" कार्बन कागज के लिए आधारभूत कागज को विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	1980 02 29	
17. IS : 3455-1971 सादा वर्कपेसों की मापन रूति (पहला पुनरीक्षण)	एस.ओ. 1265 दिनांक 1974 05 25	संख्या 3 अप्रैल 1980	खंड 10-3-4 के स्थान पर नया खंड दिया गया है	1980 04 30	
18. IS : 3498-1975 धातु मजों कार्यालय टाइप की विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	एस.ओ. 5530 दिनांक 1977 11 19	संख्या 3 अप्रैल 1980	(1) खंड 5.1, 5.2 और 5.3 के स्थान पर नये खंड दिये गये हैं। (2) पृष्ठ 7 पर "8" एवं "π" चिह्नों वाली पादटिप्पणी के स्थान पर नई पादटिप्पणी दी गई है। (3) खंड 5.5 के बाद नये खंड 6; 6.1, 6.2, 6.3, 6.4; और 6.5 जोड़े गये हैं तथा अनुवर्ती खंडों को तदनुसार फिर से संख्यांकित किया गया है। (4) पृष्ठ 7 पर "π" चिह्न वाली पादटिप्पणी के बाद "*" चिह्न वाली पाद टिप्पणी को जोड़ा गया है।	1980 04 30	
19. IS : 4175 (भाग 1) — 1967 पशुधन के परिवहन की नियमावली : भाग 1 अश्वीय दिनांक 1977 11 18 परिवहन (रेल, सड़क तथा समुद्र मार्गों द्वारा घोड़ा, खरबुर एवं गधों परिवहन।	एस.ओ. 4080 दिनांक 1977 11 18	संख्या 3 फरवरी 1980	खंड 4.2 के स्थान पर नया खंड दिया गया है	1980 02 29	
20. IS : 4322-1967 एकतैली विच्छेदन सूक्ष्मदर्शी की विशिष्टि	एस.ओ. 520 दिनांक 1968 02 10	*संख्या 1 दिसम्बर 1979	खंड 3.8 का संशोधन किया गया है	1979 12 31	
21. IS : 4398-1967 पिंड, बेलन, और बय-रिंग रेसिज के निर्माण हेतु कार्बन कोमियम इस्पात का विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	एस.ओ. 2015 दिनांक 1975 06 28	संख्या 3 फरवरी 1980	खंड 8.1 की टिप्पण के स्थान पर नई टिप्पणी दी गई है	1980 02 29	
22. IS : 4430-1979 इस्पात के सींचे की विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	—	संख्या 1 अप्रैल 1980	सारणी 2 को संशोधित किया गया है।	1980 04 30	
23. IS : 4431-1978 कार्बन एवं कार्बन-मैंगनीज इस्पात की सुकट्य कडाई की विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	—	संख्या 1 अप्रैल 1980	सारणी 1 और 5 का संशोधन किया गया है।	1980 04 30	
24. IS : 4874-1968 खाने के बिनोले के आउट की विशिष्टि (कोस्टू डारा मिसा हुआ)	एस.ओ. 2330 दिनांक 1969 06 14	संख्या 1 मार्च 1980	(1) सारणी 1 का संशोधन किया गया है। (2) परिशिष्ट ब के बाद परिशिष्ट सी जोड़ा गया है।	1980 03 31	
25. IS : 6571-1972 संस्थागत नमूने की बन्द न खाने वाले पक्षियार कुसियों की विशिष्टि	एस.ओ. 2241 दिनांक 1975 08 31	संख्या 1 मार्च 1980	(1) खंड 4.1, 5.3, 6.1 और सारणी के 1 के स्थान पर नये खंड सारणी दी गई है। (2) खंड 5.1, 6.2, 6.3, 6.6, 6.7, एवं 6.8 का संशोधन किया गया है। (3) खंड 5.5.1 के बाद खंड 5.5.2 जोड़ा गया है। (4) खंड 5 6 और 6 4 के बाद नई सामग्री जोड़ी गई है।	1980 03 31	

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
26. IS 7098 (भाग 1)—1977 क्रामलिकड पोलिएथिलीन रोधित पीबीसी के खोलदार केबलों की विशिष्टि: भाग 1 1100 बोल्ट तक की कार्यकारी बोल्टता के लिए	—	*संख्या 1 फरवरी 1980	(i) खंड 0.4, 8.1 और 8.3 के अंतर्गत अनौपचारिक सारणियों का संशोधन किया गया है (ii) खंड 0.7 का संशोधन किया गया है (iii) (पृष्ठ 6, खंड 1.4) हटा दें	1980-03-29	
27. IS : 7119—1973 पगडो और पग के लिए एस.ओ. 2939 सूती कपड़े की विशिष्टि	दिनांक 1975-09-08	संख्या 2 फरवरी 1980	खंड 2.2 को टिप्पणी के स्थान पर नहीं टिप्पणी दें गई है	1980-03-29	
28. IS : 7452—1974 दरवाजों, खिड़कियों एवं रोशनशानों के लिए गरम चेलिक्ल इस्पात खंडों की विशिष्टि	एस.ओ. 3081 दिनांक 1977-10-08	संख्या 2 फरवरी 1980	(i) पृष्ठ 6, आकृति 2 "अनुभाग 5" के लिए अटरेख) हटा दें (ii) (पृष्ठ 14, परिशिष्ट "ए" अनौप- चारिक सारणी, क्रम संख्या 3) हटा दें तथा अनुवर्ती सदों की तदनु- सार फिर से संख्या दें) (iii) खंड 5.2 के बाव खंड 5.2.1 को जोड़ा गया है।	1980-03-29	
29. IS : 7466—1974 प्रेशर कुकरों के लिए एस.ओ. 1092 रबर के छल्लों की विशिष्टि	एस.ओ. 1092 दिनांक 1977-04-09	संख्या 2 मार्च 1980	खंड 1 का संशोधन किया गया है	1980-03-31	
30. IS : 7503 (भाग 2)--1976 रबर उद्योग में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली भाग 2	--	संख्या 1 फरवरी 1980	खंड 3.13 के स्थान पर नया खंड दिया गया है	1980-02-29	
31. IS : 7760--1975 ग्रामे गीशा लगी इस्पात की केबिनेटों (अल्मारियों) की विशिष्टि	एस.ओ. 2239 दिनांक 1978-08-05	संख्या 3 अप्रैल 1980	(i) खंड 8 पर खंड 6.1.1, 6.1. 2 एवं 6.1.3 तथा "8" और "π" चिह्नों वाली पादटिप्पणियों के स्थान पर नए खंड/पादटिप्पणी दी गई हैं (ii) खंड 6.2 के बाव खंड 7.7.1, 7.2, 7.3, 7.4 और 7.5 को जोड़ा गया है और अनुवर्ती खंडों को फिर से तदनुसार संख्यांकित किया गया है (iii) पृष्ठ 8 पर "π" चिह्न वाली पादटिप्पणी के बाव "π" चिह्न वाली पादटिप्पणी जोड़ी गई है।	1980-04-30	
32. IS : 7894-1975 मिट्टी के बांधों के स्था- यित्व विश्लेषण की रीति संहिता	--	संख्या 1 अप्रैल 1980	खंड 4-2.1 के सूत्र के स्थान पर नया सूत्र दिया गया है।	1980-04-30	
33. IS : 8154--1976 पूर्णगठित कैल्शियम सिलिकेट रोधन की विशिष्टि (650 से तक के तापमान के लिए)	एस.ओ. 3821 दिनांक 1979-11-24	संख्या 1 अप्रैल 1980	खंड 3.4, सी-2.1, सी-2.2, 2.3 एवं सारणी 1 का संशोधन किया गया है	1980-04-30	
34. IS : 8448--1977 घरेलू उपयोग के लिए (स्टेप टाइप) स्वचालित लाइन बोल्ट- ता गुधारक की विशिष्टि	--	*संख्या 1 अप्रैल 1980	(i) खंड 4.2 (ए), 5.3, 5.6, 11.3, 11.16 एवं 11.17 के स्थान पर नये खंड दिये गये हैं (ii) पृष्ठ 11 पर "*" चिह्न वाली पादटिप्पणी के स्थान पर नई पाद- टिप्पणी दी गई है	1980-04-30	
35. IS : 8737 (भाग 1)--1979 15 लीटर पानी की क्षमता से अधिक वाले तरल पेट्रो- लियम गैस (एलपीजी) सिलिंडरों में प्रयुक्त बाल्व फिटिंगों की विशिष्टि : भाग 1 प्रति- स्थापन कार्य के लिए	--	संख्या 1 मार्च 1980	(i) खंड 3.1 के स्थान पर नया खंड दिया गया है (ii) पृष्ठ 9, आकृति 2, सेखों को आ- ख्या, पक्ति 10—"k2" के स्थान पर "k3" कर दें	1980-03-31	

*भारतीय मानक संस्था की प्रमाणन चिन्ह योजना हेतु यह संशोधन 1980-06-81 से लागू होगा।

†भारतीय मानक संस्था प्रमाणन चिह्न योजना हेतु यह संशोधन 1980-9-01 से लागू होगा।

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
36. IS: 8829--1978 वायु प्रदूषण अध्ययन हेतु श्वेत-मौसम विज्ञान व. इं. तकनीकों के मार्गदर्शी सिद्धान्त	--	संख्या 1 अप्रैल 1980	पृष्ठ 18 पर खंड 3.2.2, 3.5.2, 4.5.3.1, 4.5.6 सारणी 4 और प्राकृति 3 को संशोधित किया गया है	1980-04-30	

इन संशोधनों की प्रतियां भारतीय मानक संस्था, मानक भवन, 9 बहादुरशाह मार्ग, नई दिल्ली-110002 और ग्रहमवाबाद, बंगलौर, भोपाल, भुवनेश्वर, बंबई, कलकत्ता, चंडीगढ़, हैदराबाद, जयपुर, कानपुर, मरास, पटना और त्रिवेन्द्रम स्थित इसके शाखा कार्यालयों से भी प्राप्त की जा सकती है।

[सं. जी एस डी/13:5]

S.O. 5165.—In pursuance of regulation 4 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations, 1955, the Indian Standards Institution, hereby, notifies that amendment(s) to the Indian Standard(s) given in the schedule hereto annexed have been issued under the powers conferred by the sub-regulation (1) of Regulation 3 of the said Regulations.

SCHEDULE

Sl. No. and title of the Indian Standard amended	No. and Date of Gazette Notification in which the establishment of the Indian Standard was notified	No. and Date of the Amendment	Brief particulars of the Amendment	Date from which the Amendment shall have effect
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1. IS:186-1965 Specification for mulls (revised)	S.O. 1992 dated 1766-07-02	No. 2 Feb, 1980	A new note has been added after Clause 2.2.1	1980-02-29
2. IS:203-1972 Specification for dry batteries for flash lights (third revision)	S.O. 770 dated 1975-03-03	*No. 5 Apr. 1980	(i) Clause 0.5 has been substituted by a new one (ii) Tables 3, 4 and 5 have been amended	1980-04-30
3. IS:220-1972 Specification for ferro-gallo tannate fountain pen ink (0.1 percent iron content) (second revision)	S.O. 423 dated 1975-02-15	No. 3 March, 1980	In view of the publication of IS:8642-1977 'Specification for dyes for water-based writing inks' in which the requirements of dye, ink blue, have been covered, IS:2247-1962 'Specification for dye, ink blue for ink industry' has been withdrawn. Hence this amendment is being issued	1980-03-31
4. IS:233 (Parts I to VI)-1978 Methods for determination of length parameters of cotton fibres (first revision)	—	No. 1 Mar. 1980	Table 1 at page 15 and Clause 4.2.4 have been amended	1980-03-31
5. IS:517-1967 Specification for methanol (methyl alcohol) (first revision)	S.O. 1719 dated 1968-05-18	No. 1 Apr. 1980	Table 1 at page 5 has been amended and a new foot-note with '†' mark has also been added after the table	1980-04-30

*for purposes of ISI Certification Marks Scheme, this Amendment shall come into force with effect from 1980-07-01.

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
6. IS:666, (Part II)—1972 Specification for jig bushes : Part II renewable drill bushes (second revision)	S.O. 423 dated 1975-02-15	No. 1 Apr. 1980	Table 1 at page 3 and table 2 at page 4 have been amended	1980-04-30	
7. IS:1200 (Part VI)-1974 Method of measurement of building and civil engineering works : Part VI Refractory work (second revision)	S.O. 988 dated 1976-03-06	No. 1 Feb. 1980	(i) Clause 3.10 has been amended (ii) Foot notes with '*' and '+' marks at page 6 have been substituted by new ones.	1980-02-29 1980-02-29	
8. IS:1374-1979 Specification for poultry feeds (third revision)	—	No. 1 May. 1980	Table 1 at page 5 has been amended	1980-05-31	
9. IS:1879 (Parts I to X)-1975 Specification for malleable cast iron pipe fittings (first revision) : Part I General requirements	S.O. 313 dated 1979-01-27	No. 4 Apr. 1980	(i) Clauses 11 and 11.1 have been substituted by new ones (ii) Foot notes with '+' and '†' marks at page 7 have been deleted (iii) Clause 6.1.1 has been added after Clause 6.1 (iv) Tables 1 and 2 have been amended	1980-04-30	
10. IS:1883-1975 Specification for metal shelving rack (adjustable type) (second revision)	—	No. 4 Mar. 1980	(i) Clauses 7.1.1, 7.1.2 and 7.1.3 have been substituted by new ones (ii) Foot notes with '§' and ' ' mark have been substituted by new ones (iii) New Clauses 8, 8.1, 8.2, 8.3, 8.4 and 8.5 have been added after Clause 7.3 and the subsequent clauses have been re-numbered accordingly (iv) (Page 11, foot-note with mark '**')-Add the following new foot-note after the existing: '†Methods of test for ready mixed paints and enamels (second revision).'	1980-03-31	
11. IS:2032 (Part XXI)-1977 Graphical symbols used in electrotechnology : Part XXI Electric welding equipment	—	No. 1 Apr. 1980	Clauses 2.1.9, 2.1.11, 2.1.14, 2.1.15 and 2.1.16 have been amended.	1980-04-30	
12. IS:2052-1977 Specification for compounded feeds for cattle (third revision)	S.O. 3820 dated 1979-11-24	No. 1 May. 1980	Table 1 has been amended	1980-05-31	
13. IS:2428-1964 Application of carbides for machining, ranges of application and colour code	S.O. 2729 dated 1965-09-04	No. 1 Mar. 1980	(i) Clauses 0.3, 0.4, 0.5, 0.6 and 0.7 have been substituted by new ones. (ii) New clause 2.2 have been added after Clause 2.1	1980-03-31	

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
14. IS:2974 (Part III)-1975 Code of practice for design & construction of machine foundations: Part III Foundations for rotary type machines (medium and high frequency) (first revision)	S.O. 3439 dated 1978-12-02	No. 1 Feb. 1980	(i) Clauses 0.2, 2.0, 3.2.2(b), 4.6.2.1 and 5.1.2.(j) have been amended (ii) Foot notes with “*” mark at page 5, with “†” mark at page 7, with “*” and “†” marks at page 10 and with “*” mark at page 11 have been substituted by new ones (iii) Clauses 4.6.1 and 6.1.3.3 have been substituted by new ones (iv) Appendix C has been substituted by a new one.	1980-02-29	
15. IS:3313-1974 Specification for steel filing cabinets for general office purposes (first revision)	S.O. 1892 dated 1977-06-11	No. 3 Feb. 1980	(i) Clauses 5.10, 7.1, 7.2 and 7.2.1 have been substituted by new ones (ii) New Clauses 8, 8.1, 8.2, 8.3, 8.4 and 8.5 have been added after clause 7.3 and the subsequent clauses have been re-numbered accordingly	1980-02-29	
16. IS:3450-1976 Specification for carbon papers, handwriting (first revision)	S.O. 3823 dated 1979-11-24	No. 1 Feb. 1980	(i) (Page 4, clause 4.2, line 2)—Substitute ‘IS:3413-1977 †’ for ‘IS:3413-1966†’. (ii) (Page 4, foot-note with ‘†’ mark)—Substitute the following for the existing foot-note: ‘†Specification for base paper for carbon paper (first revision)’	1980-02-29	
17. IS:3455-1971 Gauging practice for plain work pieces (first revision)	S.O. 1265 dated 1974-05-25	No. 3 Apr. 1980	Clause 10.3.4 has been substituted by a new one	1980-04-30	
18. IS:3498-1975 Specification for metal tables (office type) (first revision)	S.O. 3530 dated 1977-11-19	No. 3 Apr. 1980	(i) Clauses 5.1, 5.2 and 5.3 been substituted by new ones (ii) Foot-note with ‘†’ and ‘ ’ marks at page 7 have been substituted by new ones (iii) New clauses 6, 6.1, 6.2, 6.3, 6.4 and 6.5 have been added after Clause 5.5 and the subsequent clauses have been re-numbered accordingly (iv) A new foot note with ‘***’ mark has been added at page 7 after foot-note with ‘ ’ mark	1980-04-30	
19. IS:4157 (Part I)-1967 Code for the transport of livestock : Part I Transport of equines (horses, mules & donkeys) by rail, road & sea	S.O. 4080 dated 1967-11-18	No. 2 Feb. 1980	Clause 4.2 has been substituted by a new one	1980-02-29	

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
20. IS:4328-1967	Specification for monocular dissecting microscope	S.O. 520 dated 1968-02-10	*No. 1 Dec. 1979	Clause 3.8 has been amended	1979-12-31
21. IS:4398-1972	Specification for carbon-chromium steel for the manufacture of balls, rollers and bearing races (first revision)	S.O. 2015 dated 1975-06-28	No. 3 Feb. 1980	Note of clause 8.1 has been substituted by a new one	1980-02-29
22. IS:4430-1979	Specification for mould steels (first revision)	—	No. 1 Apr. 1980	Table 2 has been substituted by a new one	1980-04-30
23. IS:4431-1978	Specification for carbon and carbon-manganese free-cutting steel (first revision)	—	No. 1 Apr. 1980	Tables 1 and 5 have been amended	1980-04-30
24. IS:4874-1968	Specification for edible cotton seed flour (expeller pressed)	S.O. 2330 dated 1969-06-14	No. 1 Mar. 1980	(i) Table 1 has been amended (ii) Appendix C has been added after Appendix B.	1980-03-31
25. IS:6571-1972	Specification for non-folding wheel chairs, institutional model	S.O. 2241 dated 1975-08-31	No. 1 Mar. 1980	(i) Clauses 4.1, 5.3, 6.1 and table 1 have been substituted by new ones. (ii) Clauses 5.1, 6.2, 6.3, 6.6, 6.7 and 6.8 have been amended. (iii) Clause 5.5.2 has been added after clause 5.5.1 (iv) New matter have been added after Clauses 5.6 and 6.4.	1980-03-31
26. IS:7098 (Part I)-1977	Specification for crosslinked polyethylene insulated PVC sheathed cables: Part I For working voltages up to and including 1100 volts	—	†No. 1 Feb. 1980	(i) Informal tables under Clauses 0.4, 8.1 and 8.3 have been amended (ii) Clause 0.7 has been amended (iii) (Page 5, clause 1.4)—Delete	1980-02-29
27. IS:7119-1973	Specification for cotton cloth for <i>pagris</i> and <i>pags</i>	S.O. 2939 dated 1975-09-06	No. 2 Feb. 1980	Note of clause 2.2 has been substituted by a new one	1980-02-29
28. IS:7452-1974	Specification for hot rolled steel sections for doors, windows and ventilators	S.O. 3081 dated 1977-10-08	No. 2 Feb. 1980	(i) (Page 6, Fig. 2, diagram for 'Section 75')—Delete. (ii) (Page 14, Appendix A, informal table, SI No. 3)—Delete and renumber the subsequent items accordingly. (iii) Clause 5.2.1 has been added after clause 5.2	1980-02-29
29. IS:7466-1974	Specification for rubber gaskets for pressure cookers	S.O. 1092 dated 1977-04-09	No. 2 Mar. 1980	Table 1 has been amended	1980-03-31

*For purposes of ISI Certification Marks Scheme, this amendment shall come into force with effect from 1980-09-01

†For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1980-06-01
991 GI/85—6

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
30. IS:7503 (Part II)-1976	Glossary of terms used in rubber industry Part II	—	No. 1 Feb. 1980	Clause 3.13 has been substituted by a new one	1980-02-29
31. IS:7760-1975	Specification for steel glass-front cabinets	S.O. 2239 dated 1978-08-05	No. 3 Apr. 1980	(i) Clauses 6.1.1, 6.1.2, 6.1.3 and foot notes with '§' and 'π' marks at page 8 have been substituted by new ones. (ii) Clause 7, 7.1, 7.2, 7.3, 7.4 and 7.5 have been added after clause 6.2 and the Subsequent clauses have been re-numbered accordingly (iii) A new foot note with 'π' mark has been added at page 8 after foot-note with 'π' mark.	1980-04-30
32. IS:7894-1975	Code of practice for stability analysis of earth dams	—	No. 1 Apr. 1980	Formula of clause E-2.1 has been substituted by a new one	1980-04-30
33. IS:8154-1976	Specification for pre-formed calcium silicate insulation (for temperature up to 650°C)	S.O. 3821 dated 1979-11-24	No. 1 Apr. 1980	Clauses 3.4, C-2.1, C-2.2, 2.3 and table 1 have been amended	1980-04-30
34. IS:8448-1977	Specification for automatic line voltage correctors (Step type) for domestic use	—	*No. 1 Apr. 1980	(i) Clauses 4.2(a), 5.3, 5.6, 11.3, 11.16 and 11.17 have been substituted by new ones. (ii) Foot note with '*' mark at page 11 has been substituted by a new one	1980-04-30
35. IS:8737 (Part I)-1979	Specification for valve fittings for use with liquefied petroleum gas (LPG) cylinders of more than 5 litre water capacity; Part I Valve fittings for replacement purposes	—	No. 1 Mar. 1980	(i) Clause 3.1 has been substituted by a new one (ii) (Page 9, Fig. 2, explanation to legends, line 10)-Substitute 'K ₃ ' for 'K ₂ '.	1980-03-31
36. IS:8829-1978	Guidelines for micro-meteorological techniques in air pollution studies	—	No. 1 Apr. 1980	Clauses 3.2.2, 3.5.2, 4.5.3.1, 4.5.6, Table 4 and Fig. 3 at page 18 have been amended	1980-04-30

Copies of these Amendments are available with the Indian Standards Institution, Manak Bhavan, 9 Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi-110002 and also from its branch offices at Ahmedabad, Bangalore, Bhopal, Bhubaneswar, Bombay, Calcutta, Chandigarh, Hyderabad, Jaipur, Kanpur, Madras, Patna and Trivandrum.

*For purposes of ISI Certification Marks Scheme ; this amendment shall come into force with effect from 1980-09-01

[No. CMD/13-:5]

नई दिल्ली, 1985-09-25

क्र.प्र. 5166.--भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिह्न) विनियम 4 के अनुसार सामा संस्था द्वारा यह अधिसूचित किया जाता है कि नीचे अनुसूची में जिन मानकों के संशोधन वर्णित किये गये हैं उक्त विनियमों के विनियम 3 के उपविनियम (1) के अधीन प्रदत्त शक्तियों के अनुसार जारी किये गए हैं :-

अनुसूची

क्र. सं. संशोधित भारतीय मानक की संख्या और पदनाम	गजट अधिसूचना की संख्या जिसमें सामा का निर्धारण अधिसूचित हुआ था	संशोधन की संख्या और तिथि	संशोधन का संक्षिप्त विवरण	संशोधन लागू होने की तिथि
1	2	3	4	5
1. IS : 1660 (भाग 1)--1982 पिटवा एलु-मिनियम बर्तनों के विशिष्टि: खाना पकाने, खाना परोसने, रखने और बेकिंग के बर्तन (दूसरा पुनरीक्षण)	--	*संख्या 2 जुलाई 1984	(पेज 21, खंड 9.1) वर्तमान खंड की जगह निम्नलिखित खंड जोड़े : 9.1 प्रत्येक बर्तन की बाहरी सतह अथवा हत्ये पर निर्माता का नाम अथवा पंजीकृत व्यापारिक नाम और सारणी 1 में निविष्ट सांकेतिक मोटार्ई की सुस्पष्ट और अमिट मुहर लगाई जाए।	1980-07-31
2. IS : 2580--1982 सीमेंट पैकिंग के लिए पटसन के बोरो की विशिष्टि	--	*संख्या 2 जनवरी 1985	यह संशोधन हिरिकल सिलार्ई के लिए प्रयुक्त घागे का 380x3 टेक्स की जगह 300x3 टेक्स काउंट निविष्ट करने के लिए जारी किया जा रहा है। सिलार्ई घागे का द्रव्यमान निकालने के लिए घागे की विश्वारार्य लम्बाई हिरिकल की टांका लम्बाई से 9.5 गुणा और शिरोपरि सिले हुए पैलों की टांका से लम्बाई से 7 गुणा ली गई है उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए हिरिकल सिलार्ई और शिरो परि सिलार्ई किए गए पैलों का वजन लगभग एक ही आसा है और यह इस संशोधन में वर्धाया गया है। निर्माण में आने वाली कठिनाइयों दूर करने के लिए बाल्व प्लैप के साइज के लिए अधिक छूट दी गई है।	1985-01-31
3. IS : 3255--1980 चिकित्सा उपयोग की सिरिजों की सामान्य अवेशाएं (पहला पुनरीक्षण)	--	*संख्या 1 अगस्त 1984	(1) (पृष्ठ 6, खंड 7; 1, अंतिम वाक्य) वर्तमान सामग्री की जगह निम्नलिखित सामग्री जोड़े : -- "पिस्टन और टिप की कि-निश अच्छी चिकनी धिरी सतह वाली हो और सतही दोषों जैसे पिट, एपर लाइन हार्ई स्पार्ट अथवा पेचण चिह्नों से मुक्त हों। बैरल की अन्तर्गती सतह साफ अथवा ग्राउंड फिनिश की गई हो उपरोक्त की भांति सतही दोषों से मुक्त हो।"	1984-08-31

*भा मा संस्था की प्रमाणन चिह्न योजना के प्रयोजनों हेतु यह संशोधन 1984-11-16 से लागू होगा।

*भा मा संस्था की प्रमाणन चिह्न योजना के प्रयोजनों के लिए यह संशोधन 1985-02-01 से लागू होगा।

*भा मा संस्था प्रमाणन मुहर योजना के प्रयोजनों के लिए यह संशोधन 1984-11-01 से लागू होगा।

1	2	3	4	5	6
				(2) (पृष्ठ 6 और 7, खंड 7.2, प्रतिम से पहला वाक्य)--वर्तमान सामग्री को जगह निम्नलिखित सामग्री जोड़ें:- "पिस्टन के निकटस्थ सिरे को इस प्रकार उपयुक्त आकार दिया जाए कि यह सपाट भ्रमण प्रबल सतह वाले एक बदन का रूप धारण कर ले, ताकि भ्रगुंटे द्वारा इसे बनाने में सुविधा हो।"	
4. IS: 3237-1980 अघस्तवक सिरिजों की विशिष्टि, मोड़ी क्षमता की (पहला पुनरीक्षण)		*संख्या 1 जुलाई 1984		(1) (पृष्ठ 6, सारणी 1, कालम 5, 1984-07-31 1.00 मिमि द्यूबरकपूलिन सिरिज के सामने, पंक्ति) -- 0.02 के स्थान पर 0.01 अथवा 0.02 जोड़ें। (2) (पृष्ठ 7, खंड 3.2.3)--3.2.3 के बाद निम्नानुसार एक नया खंड जोड़ें: "3.2.4 1 मिमि इंसुलिन सिरिजों को 40 या 80 यूनिट वराने के लिए प्रकृत किया जा सकता है।"	

[सं. सी एम डी/13 : 5]

बी. एन. सिंह, अपर महानिदेशक

*भा मा संस्था प्रमाणन चिह्न योजना के प्रयोजनों हेतु यह संशोधन 1984-11-16 से लागू होगा।

INDIAN STANDARDS INSTITUTION

New Delhi, 1985-09-25

S.O. 5166:—In pursuance of regulation 4 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations, 1955, the Indian Standards Institution, hereby, notifies that amendments to the Indian Standards given in the Schedule hereto annexed have been issued under the powers conferred by the sub-regulation (1) of Regulation 3 of the said Regulations.

THE SCHEDULE

Sl. No. and title of the Indian Standard amended	No. and Date of Gazette Notification in which the establishment of the Indian Standard was notified	No. and Date of the amendment	Brief Particulars of the Amendment	Date from which the amendment shall have effect
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1. IS : 1660(Pt I)--1982 Specification for wrought aluminium utensils cooking, table, serving, storing and baking utensils (second revision)		*No. 2 July 1984	(Page 21, Clause 9.1)--Substi- tute the following for the existing clause : 9.1 Each Utensil shall be legible and indelibly stamped on the outside surface or handle with the manufacturer's name or registered trade- mark and the nominal thick- ness specified in Table 1.	1984-07-31

*For purposes of ISI Certification Marks Scheme, this amendment shall come into force with effect from 1984-11-16

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
2. IS : 2580—1982 Specification for jute sacking bags for packing cement (second revision)			*No. 2 Jan 1985	This Amendment is being issued to specify the count of stitching yarn for herakle stitch as 300×3 tex in place of 380×3 tex. Also for calculation of the mass of stitching yarn the length of yarn taken into consideration has been used as 9.5 times the stitch length for herakle and 7 times the stitch length in case of overhead sewn bags. Taking the above into consideration the weight of herakle stitch and overhead stitched bags, comes to almost same and this has been reflected in this amendment. Also a wider tolerance has been specified for size of valve flap to overcome the manufacturing difficulties.	1985-01-31
3. IS : 3235—1980 General Requirements for syringes for medical use (first revision)			**No. 1 Aug 1984	(i) (Page 6, Clause 7.1, Last Sentence)—Substitute the following for the existing matter : “The finish of the piston and the tip shall be of fine smooth ground finish and free from surface defects such as pits, air lines, high spots or grind marks. The inside of the barrel may be clear or ground finish and free from surface defects as above.” (ii) Page 6, and 7, Clause 7.2, Last but one sentence)—Substitute the following for the existing matter: “The proximal and of the piston shall be suitably shaped to form a button with flat or concave surface to facilitate the thumb passing it”	1984-08-31

*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1985-02-01.

**For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1984-11-01.

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
4. IS : 3237—1980	Specification for hypodermic syringes, small capacity (first revision)	—	*No. 1 July 1984	(i) Page 6, Table 1, Col. 5, against 1.00 ml. tuberculin syringes, third row)—Substitute '0.01 or 0.02' for '0.02' (ii) (Page 7, Clause 3.2.3)—Add a new clause after 3.2.3 as follows : '3.2 4 1 ml Insuline syringe may be marked to indicate 40 or 80 units'	1984-07-31

[No. CMD 13 : 5]

B.N. SINGH, Additional Director General

*For purposes of ISI Certification Marks Scheme; this amendment shall come into force with effect from 1984-11-01.

संचार मंत्रालय

(दूरसंचार बोर्ड)

नई दिल्ली, 31 अक्टूबर, 1985

का.प्र. 5167.—स्थायी आदेश संख्या 627, दिनांक 8 मार्च, 1960 द्वारा लागू किये गये भारतीय तार नियम, 1951 के नियम 434 के खण्ड-III के पैरा (क) के अनुसार महानिदेशक, दूरसंचार विभाग ने महाबलिपुरम टैलीफोन केन्द्र में दिनांक 16-11-1985 से प्रमाणित दर प्रणाली लागू करने का निश्चय किया है।

[सं. 5-20/85/पी एच बी]

MINISTRY OF COMMUNICATIONS

(Department of Telecommunication)

New Delhi, the 31st October, 1985

S.O. 5167.—In pursuance of para (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules, 1951, as introduced by S.O. No. 627 dated 8th March, 1960, the Director General, Department of Telecommunication, hereby specifies 16-11-1985 as the date on which the Measured Rate System will be introduced in Mahabalipuram Telephone Exchange, Tamil Nadu Circle.

[No. 5-20/85-PHB]

नई दिल्ली, 1 नवम्बर, 1985

का.प्र. 5168.—स्थायी आदेश संख्या 627, दिनांक 8 मार्च, 1960 द्वारा लागू किये गये भारतीय तार नियम, 1951 के नियम 434 के खण्ड III के पैरा (क) के अनुसार महानिदेशक, दूरसंचार विभाग ने ईटमोजी टैलीफोन केन्द्र में दिनांक 16-11-1985 से प्रमाणित दर प्रणाली लागू करने का निश्चय किया है।

[संख्या 5-22/85-पी एच बी]

के. पी. शर्मा, सहायक महानिदेशक
(पी. एच. बी.)

New Delhi, the 1st November, 1985

S.O. 5168.—In pursuance of para (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules, 1951, as introduced by S.O. No. 627 dated 8th March, 1960, the Director General, Department of Telecommunication, hereby specifies 16-11-1985 as the date

on which the Measured Rate System will be introduced in Eathamozhi Telephone Exchange Tamil Nadu Circle.

[No. 5-22/85-PHB]

K. P. SHARMA, Assistant Director General (PHB)

धर्म मंत्रालय

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर, 1985

का. आ. 5169.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मेसर्स महाराजा हुजरो वस्त्र, श्री लक्ष्मी बलन मिल्स कंपाउंड, सैकंड फ्लोर, डा. ई. मोसेस रोड, बम्बई-11 नामक स्थापन के संबंध निर्योजक और कर्मचारियों का बहुसंख्या इस बातों पर सहमत हो गई है कि कर्मचारों भविष्य निधि और प्रकाश उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19 के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करता है।

[सं. एस. 35018/17/85-एस. एस.-2]

MINISTRY OF LABOUR

New Delhi, 18th Oct., 1985

S.O. 5169.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Maharaja Hosiery Works, Shri Laxmi Woollea Mills Compound 1st Floor D.R. E. Moses Road, Bombay-11 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 ((19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-Section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35018/17/85-SS. II]

का. आ. 5170.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मेसर्स स्विट अर्ट प्रिंटेड मरठे उद्योग भवन, जवा स हिंद, मरठे मार्ग, बम्बई-25 नामक स्थापन के संबंध निर्योजक और कर्मचारियों का बहुसंख्या

इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35018/16/एस. एस.-2]

S.O. 5170.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Swift Art Printers Marathe Udyog Bhavan, APPA, Sahab Marathe Marg, Bombay-25 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-Section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35018/16/85-SS. II]

का. आ. 5171.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स इन्दु उद्योग 24, न. टी. रोड, कामरुटी, कलकत्ता-58 और कार्यालय 117-ए, चित्तारंजन एवेन्यू, कलकत्ता-73 में स्थित नामक स्थापन के संबंध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35017/94/85-एस. एस.-2]

S.O. 5171.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Indu Udyog, 24 B.T. Road, Kamarhaty, Calcutta-58 including its office at 117-A, Chittaranjan Avenue, Calcutta-73, have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-Section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35017/94/85-SS.II]

का. आ. 5172.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स बर्मान मेडिकल स्टोर, 42, स्ट्रैंड रोड, कलकत्ता-7 नामक स्थापन के संबंध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35017/95/85-एस. एस.-2]

S.O. 5172.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Buraman Medical Store, 42, Strand Road, Calcutta-7 have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-Section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35017/95/85-SS. II]

का. आ. 5173.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स शुक्ल सोप मिल्स, सी-2/1, मायपुर फेज-2, नई दिल्ली-27 नामक स्थापन के संबंध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35019/382/85-एस.एस.-2]

S.O. 5173.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as M/s. Shukul Soap Mills, C-2/1, Mayapuri, Phase-II, New Delhi-27 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-Section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/382/85-SS. II]

का. आ. 5174.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स हामोसन्स अपैरल्स प्राइवेट लिमिटेड, 18, वैनिर स्ट्रीट, मद्रास-1 नामक स्थापन के संबंध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35019/383/85-एस. एस.-2]

S.O. 5174.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Hamosens Apparels Private Limited, 18, Vannir Street, Madras-1 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/383/85-SS. II]

का. आ. 5175.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स शानमया इंडस्ट्रीज, 73, सेक्टर गली, निज्जामाबाद, नई अरकाट कम्पा, मसिनतुडु नामक स्थापन के संबंध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35019/384/85-एस.एस.-2]

S.O. 5175.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Shanmuga Industries, 73, Seda Street, Triuvannamali, North Arcot District Tamil Nadu have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35017/384/85-SS. II]

का. आ. 5176.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स रामसन एंड सन्स, नं. 157, लिंग्ही चेट्टी गली, मद्रास-1 नामक स्थापन के संबद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारों भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35019/385/85-एस.एस.-2]

S.O. 5176.—Whereas it appears to the Central Govt. that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Ramson and Sons, No. 157, Linghi Chetty Street, Madras-1 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/385/85-SS. II]

नई दिल्ली, 22 अक्टूबर, 1985

का. आ. 5177.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स कुमारान नं. 12, नगेस्वारा राव रोड, टी नगर, मद्रास-600017 नामक स्थापन के संबद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारों भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं एस०-35019/386/85 एस.एस०-2]

New Delhi, the 22nd October, 1985

S.O. 5177.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Kumarans No. 12, Nageswara Rao Road, T. Nagar, Madras-600017, have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/386/85-SS. II]

का. आ. 5178.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स अलव्ड मार्केटिंग सर्विसेस, 22 डॉ. राधाकृष्णन सन-ए, मद्रास-600004 नामक स्थापन के संबद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारों भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35019/387/85-एस.एस.-2]

S.O. 5178.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Alved Marketing Services 22, Dr. Radhakrishnan Salai, Madras-600004 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred of Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/387/85-SS. II]

का. आ. 5179.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स—साराथी इंडस्ट्रीज, 340-ए, ओल्ड महाबलीपुरम रोड, नेहरू नगर, पेरुंगुडी, मद्रास-96 नामक स्थापन के संबद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारों भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं एस०-35019/388/85 एस० एस०-2]

S.O. 5179.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Sarathy Industries, 340-A, Old Mahabalipuram Road, Nehru Nagar, Perungudi, Madras-96 have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the establishment.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred of Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/388/85-SS. II]

का. आ. 5180.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स सारद इंडस्ट्रियल फर्नेस प्रा. लिमिटेड, प्लॉट नं. 1, सारद इंडस्ट्रियल कंप्लेक्स, रोड हिल्स रोड, ओरंगाबम, मद्रास-53 नामक स्थापन के संबद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारों भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. एस-35019/389/85-एस.एस.-2]

S.O. 5180.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Sarad Industrial furnaces private Ltd., Plot No. 1, Sarad Industrial

Complex, Red Hills Road, Oragadam, Madras-53, have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred of Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/389/85-SS. II]

का. अ. 5181—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स इस्टर्न रबर इंडस्ट्रीज, नं. 1-5, इंडस्ट्रियल एस्टेट, मद्रास-60 नामक स्थापन के संबद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारियों भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा-(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. ए. 35019/390/85-एस.एस.-2]

S.O. 5181.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Eastern Rubber Industries, No. 1-5, Industrial Estate, Madras-60, have agreed that the Provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment ;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred of Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. S-35019/390/85-SS. II]

का. अ. 5182—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स जवाहरलाल शान्तिवाल एंड कंपनी कॉटन मर्चेन्ट्स प्लाट नं. 5, शॉप नं. 38, राजेंद्रगंज, रायचूर नामक स्थापन के संबद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारियों भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा-1 की उपधारा(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

[सं. ए. 35019(391)/85एस.एस.-2]

ए. के. भट्टाचार्य अवर, सचिव

S.O. 5182.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Jawral Shantilal and Company Cotton Merchants, Plot No. 5, Shop No. 38, Rajendragunj, Raichur have agreed that the Provision of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment ;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (4) of Section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the Provisions of the said Act to the said establishment.

[No. 35019/391/85-SS.II]

A. K. BHATTARAI, Under Secy.

नई दिल्ली, 25 अक्टूबर, 1985

का.अ. 5183—औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसूचन में, केन्द्रीय सरकार इंडियन कोल फील्ड लिमिटेड की शामपुर-ए कोलियरी के प्रबंधन से संबद्ध नियोजकों और उनके कर्मचारियों के बीच अनुबंध में निविष्ट औद्योगिक विवाद से केन्द्रीय सरकार औद्योगिक अधिग्रहण, नं. 2 धनबाद के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 16 अक्टूबर, 1985 को प्राप्त हुआ था।

991 GI/85--7

New Delhi, the 25th October, 1985

S.O. 5183.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal No. 2, Dhanbad, as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Shampur-A Colliery of Messrs Eastern Coalfields Limited and their workmen, which was received by the Central Government on the 16th October, 1985.

ANNEXURE

BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL (No. 2) AT DHANBAD

PRESENT :

Shri I. N. Sinha, Presiding Officer.

Reference No. 31 of 1985

In the matter of Industrial Disputes under Section 10(1)-(d) of the I.D. Act, 1947.

PARTIES :

Employers in relation to the management of Shampur-A Colliery of M/s. Eastern Coalfields Limited and their workmen.

APPEARANCES :

On behalf of the employers.—Shri R. S. Murthy, Advocate.

On behalf of the workmen.—Shri D. Mukherjee, Secretary, Bihar Colliery Kamgar Union.

STATE : Bihar.

INDUSTRY : Coal.

Dated, Dhanbad, the 9th October, 1985

AWARD

The Government of India, Ministry of Labour in exercise of the powers conferred on them under Section 10(1)(d) of the I.D. Act, 1947 has referred the following dispute to this Tribunal for adjudication under Order No. L-20012 (361)/84-D.III(A), dated, the 29th March, 1985.

SCHEDULE

"Whether the action of the management of Shampur-A Colliery of Messrs Eastern Coalfields Limited in superannuating with effect from 9-6-1984 Shri Etwari Chamar, Security Guard, was justified? If not, to what relief is the said workman entitled?"

The case of the workmen is that the concerned workman Shri Etwari Chamar was a permanent Security Guard in Shampur-A colliery of M/s. E. C. Ltd., since long. The management illegally and arbitrarily superannuated the concerned workman with effect from 1-3-79 on the basis of alleged medical board's report. The concerned workman challenged the report of the Medical board as the decision of the said medical board had never been communicated to the concerned workman. The management appreciating its mistake again referred the concerned workman for determination of his age by the Appellate Medical Board. The Appellate medical board assessed the age of the concerned workman as 50 years on 22-3-1979. On the basis of the appellate Medical Board's report the concerned workman was again allowed to resume his duties with effect from 18-5-1979. The management also corrected the age of the concerned workman in the Identity card as assessed by the Appellate Medical Board. However, the management superannuated the concerned workman with effect from 9-6-1984. The action of the management in superannuating the concerned workman with effect from 9-6-1984 was illegal, arbitrary and unjustified and against the principles of natural justice as he had not completed the age of 60 years which is the age for superannuation. The concerned workman represented before the management against his illegal order of superannuation but to no effect. Thereafter the union of the concerned workman raised an industrial dispute before the ALC(C), Dhanbad for conciliation but the same

ended in failure and thereafter a failure report was sent to the Government of India leading to the present reference, for adjudication. During the conciliation proceeding the management revealed that the age of the concerned workman was determined as 56 years by the Appellate Medical Board in the year 1979. The union challenged the said report of the Medical Board as the same had not been communicated to the concerned workman. The report of the appellate Medical board determining the age of the concerned workman was determined in violation of the medical jurisprudence and as such it cannot be relied upon. It has been submitted that the action of the management in superannuating the concerned workman was not justified.

The case of the management is that the age of superannuation fixed for the workmen of the management of ECL is 60 years and the same has been enforced since the time of nationalisation of the Coal mines in 1973. The concerned workman was earlier retired with effect from 1-3-1979 which led to a dispute regarding his age and it was decided by the management that his age be reassessed by the Appellate Medical Board of M/s. E.C.L. at Sanctoria. Accordingly his age was determined as 56 years on 22-3-1979 by the Appellate Medical Board. Thereafter the concerned workman was put on duty and he was to retire in normal course from 22-3-1983 on completing the age of 60 years. It is stated by the Management that when the re-assessed age of the concerned workman was being communicated by the Dy. P. M. Mugma area (in which Shampur-A colliery fell) a typographical mistake occurred in the letter dated 12-5-1979. At one place in the said letter the re-assessed age of the concerned workman was erroneously typed as 50 years and at another place it was correctly shown as 56 years. This mistake was not detected by Shampur-A colliery at the relevant time and they erroneously took the age of the concerned workman as 50 years and on its basis correction was made in the identity card of the concerned workman and also in the Form B Register. In April, 1984 the office of the G.M. Nirsra Area which was formerly Mugma area detected the mistake that the concerned workman who was to be superannuated with effect from 22-3-1983 had not been superannuated. Thereafter the Dy. P. M. Nirsra Area wrote a letter dated 19/20-4-1984 to the Agent Shampur-A Colliery to superannuate the concerned workman with immediate effect. The management of Shampur-A colliery sent a letter dated 27-4-1984 to the Dy. Chief Personnel Manager indicating the discrepancy which had occurred due to typographical mistake. The matter was submitted to the G.M. and it was decided that the concerned workman should be superannuated by giving one month's notice. Accordingly the concerned workman was served with a notice of superannuation dated 9-5-1984 stating that he would stand superannuated with effect from 9-6-1984 and accordingly the concerned workman was superannuated with effect from 9-6-1984. Due to the typing mistake the reassessed age of the concerned workman was wrongly entered in the Form B Register and Identity Card of the concerned workman. When the mistake was detected it was rectified. In this process, the workman remained in service for over 13 months even after attaining the age of superannuation. The management was entitled to rectify the mistake which was detected and take consequential steps and the concerned workman cannot take advantage of the said mistake. It has been submitted on behalf of the management that their action in superannuating the concerned workman with effect from 9-6-1984 was fully justified and that the concerned workman is not entitled to any relief.

The only point for decision is whether the management was justified in superannuating the concerned workman with effect from 9-6-1984.

The management examined three witnesses and in support of their case. The workmen did not examine any witness on their behalf.

Admittedly, the concerned workman Etwari Chamar was examined by the Appellate Medical Board on 22-3-1979 for the assessment of his age and the Appellate medical board assessed his age. In para 2 of the W.S. of the workmen it is stated that earlier the management had arbitrarily superannuated the concerned workman with effect from 1-3-1979 on the basis of alleged medical Board's report. In

para-3 it is stated that the concerned workman challenged the alleged medical Board's report as the decision of the medical Board was not communicated to him and thereafter the management again referred the concerned workman to the Appellate Medical Board for determination of his age and that on the basis of the said Appellate medical Board's report he was allowed to resume his duties with effect from 18-5-1979. Thus it is clear that the Appellate medical Board had examined the concerned workman and had assessed his age. MW-1 is Dr. P. P. Bhattacharyya who was one of the members of the Appellate Medical Board. He has stated that the Medical Board consisted of himself, Dr. C. R. Mahatha, Dr. A. M. Murthy. He has stated that the Appellate Medical Board assessed the age of the concerned workman as 56 years on 22-3-1979. He has proved the medical report Ext. M-1 bearing the signature of all the doctors of the medical Board and the two members who were the Superintendent of Mines and Senior Personnel Officer. It will appear from his evidence that Ext. M-1 is the extract of the Medical board's report and that it will not show the tests which were made in the case of the concerned workman at the time of determining his age. The said detailed report showing the tests have not been produced by the Management. MW-2 has stated that the original Medical report had been sent along with the forwarding letter Ext. M-2 to the Colliery. It is stated on behalf of the management that the said original report is not being traced. However, it will appear that the management has produced Ext. M-1 which is a report of the Appellate Medical Board held at Sanctoria on 22-3-1979 in respect of the concerned workman and 5 others. It will appear from Ext. M-1 that the age of Etwari Chamar was assessed around 56 years approximately by the appellate Medical Board. Ext. M-1 bears the signature of the 3 doctors and two others members of the committee and there is no reason to doubt the correctness of this Ext. It is clear, therefore that the Appellate Medical Board had assessed the aged of the concerned workman at about 56 years.

The entire mischief appears to have been done by the conflicting entries in Ext. M-3 which is a letter from the Dy. Personnel Manager to the Manager Shampur-A colliery dated 12-5-1979. It will appear from Ext. M-3 that three workers were superannuated on attaining the age of 60 years as assessed by the original medical board but they appealed to the Appellate Medical Board Sanctoria for re-examination and it gives the finding of age of the three persons by the Appellate medical Board which also includes the assessment of age of the concerned workman. Item No. 2 is the entry regarding the concerned workman which shows that his age was assessed around 50 years but from the next para it appears that his age was assessed as 56 years. It is stated in the last para that at the age of Smt. Hubani Meihan and Shri Etwari Chamar is assessed as 50 years and 56 years respectively and fit for work they may be allowed to resume their duties, with immediate effect. Thus Ext. M-3 shows that in item No. 2 the age of the concerned workman was typed as 50 years whereas in the last para his age was typed as 56 years. The case of the management is that the Appellate Medical Board has assessed the age of the concerned workman as 56 years and that there was a typographical mistake in Ext. M-3 in item No. 2 where the age of the concerned workman has been typed as 50 years although in the last para the age has been correctly typed as 56 years in accordance with the findings of the Appellate Medical Board. In view of the fact that Ext. M-1 shows that the age of the concerned workman was assessed at about 56 years and the said fact finds stated in last para of Ext. M-3 as well, there appears to be a typographical mistake in item No. 2 against the name of the concerned workman where the age is stated to be 50 years.

The submission made on behalf of the management therefore appears to be correct that there was typographical mistake in Ext. M-3 against the name of the concerned workman where the age is stated as 50 years.

The case of the concerned workman is that the management had corrected the age of the concerned workman in the identity card and in the Form B Register in accordance with the age assessed by the Appellate medical Board. Ext. W-2 is the identity card of the concerned workman where the year of his birth was written as 1923 and the same has been penned through and on its back his age is recorded

as 50 years as vide the assessment of his age by letter dated 12-5-1975, Ext. M-3 is the letter dated 12-5-1979 on the basis of which the age has been corrected in identity card Ext. W-2. I have already discussed above about the typographical mistake in recording the age of the concerned workman in item No. 2 as 50 years. Ext. W-1 is the photo copy of Form B Register. Sl. No. 85 is the entry regarding the concerned workman where original year of birth was recorded as 1923 and the same was corrected as 50 years as per Dy. P.M.'s letter dated 12-5-1979. This correction of age in Form B Register is also made on the basis of Ext. M-3 regarding which I have already discussed. There is no independent document in support of the fact that the age of the concerned workman was fixed by the Appellate Medical Board as 50 years on 22-3-1979.

The only matter in dispute is whether the age of the concerned workman was assessed by the appellate medical board as 50 years or 56 years. It appears from Ext. M-1 that the age of the concerned workman was assessed as 56 years and the said age also finds noted in Ext. M-3 in the last para but through mistake that the age of the concerned workman was typed as 50 years in item No. 2 by the office of the Dy. P.M. It cannot therefore be said that the Appellate medical Board had not assessed the age of the concerned workman as 56 years because the very foundation on which the concerned workman has built his case also shows that the age of the concerned workman was assessed as 56 years. There is no case of the concerned workman that the age 56 years last para of Ext. M-3 is a typographical mistake for 50 years. I hold therefore that the Appellate Medical Board had assessed the age of the concerned workman as 56 years on 22-3-1979. The question regarding the tests which the Appellate medical Board applied in arriving at the age of the concerned workman are not available as the detailed tests are missing. The Doctor MW-1 has stated that the Board gives the tests for arriving at the conclusion regarding the assessment of age and he has also stated as to what could have been the tests applicable in assessment of age of the concerned workman. As however, the detailed paper regarding the test are not available, it cannot be said that the age of the concerned workman had not been assessed as 56 years. The documents on the record, namely, Ext. M-1 is of unpeachable character denoting the assessment of age of the concerned workman as 56 years and as the matter really in issue in this reference is as to what was the age assessed by the Appellate Medical Board, I think that the consideration of the tests applied in the assessment of age of the concerned workman is of not much importance.

Ext. M-9 is an application by the concerned workman to the Manager, Shampur-A colliery which shows that he had been served with a notice of superannuation vide letter dated 9th May, 1984 (Ext. M-8) and that as he had not attained the age of 60 years his superannuation was unjustified. It is thus accepted in this letter that the age of superannuation is 60 years. Now, calculating the age of superannuation of the concerned workman it will appear that he should have been superannuated with effect from 23-3-1983 but the concerned workman had continued to work till 8-6-1984 because of the typographical mistake of his age in Ext. M-3. In view of the above the concerned workman has rightly been superannuated with effect from 9-6-1984 he having already worked for a period beyond the date of his superannuation.

In the result I hold that the action of the management of Shampur-A colliery of M/s. Eastern Coalfields Ltd. superannuating the concerned workman Shri Etwari Chamar, Security Guard with effect from 9-6-1984 is justified and that he is entitled to no relief.

This is my Award.

9-10-1985.

I. N. SINHA, Presiding Officer.
[No. L-12012(361)/84-D.II(A)]
A. V. S. SARMA, Desk Officer.

नई दिल्ली, 28 अक्टूबर, 1985

कां० 5184.—औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में केन्द्रीय सरकारी, यूनियन बैंक आफ इंडिया, अम्बाला के प्रबंधन से सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मचारों के बीच, अनुबंध में निहित औद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार औद्योगिक अधिकरण, चंडीगढ़ के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 11-10-85 को प्राप्त हुआ था।

New Delhi, the 28th October, 1985

S.O. 5184.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Chandigarh as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the Union Bank of India, Ambala and their workmen, which was received by the Central Government on the 11th October, 1985.

ANNEXURE

BEFORE SHRI I. P. VASISHTI, PRESIDING OFFICER,
CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL,
CHANDIGARH

Case No. I. D. 170/81 (Delhi); 52 of 1984 (CHD)

PARTIES :

Employers in relation to the management of Union Bank of India.

AND

Their Workman : Sohan Singh.

APPEARANCES :

For the Management.—Shri Gopal Mahajan.

For the Workman.—Shri R. K. Gulati.

ACTIVITY : Banking

STATE : Haryana.

AWARD

Dated, the 4th of October, 1985

The Central Government, Ministry of Labour, in exercise of the powers conferred on them under Section 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947, per their Order No. L-42012/176/80-D.II (A) dated the 7th of November, 1981 read with S.O. No. S-11025(9)/84-D.IV (B) dated the 26th October, 1984, referred the following Industrial Dispute to this Tribunal for adjudication :—

“Whether the action of the management of Union Bank of India, Ambala, in imposing the penalty of Stoppage of two increments permanently and not paying the difference of wages pertaining to the suspension period in respect of Shri Sohan Singh, Peon-cum-Chowkidar is justified? If not to what relief is the workmen concerned entitled?”

2. Gist of the matter is that the petitioner was working in the subordinate staff of the Respd. Bank at their Ambala City Branch in October 1975 and was posted there as an armed Chowkidar on 11-10-1975. Due to paucity of staff he was asked to look after the assignment of Peon also because his appointment was primarily as a Peon-cum-Chowkidar. But the petitioner resented the proposition and was, thus, alleged to have refused to obey the orders. Similarly on 13-10-1975 also he was reported to have behaved in an unbecoming manner when at about 4-45 P.M. he left his charge after exchanging hot words with the Branch Accountant Shri R. N. Sharma and went home on the pretext that he was not allowed to avail of the lunch break on that day due to extra-assignment. He was, therefore, charge-sheeted and proceeded against departmentally. Shri Gursaran Singh was appointed as Inquiry Officer and was also empowered to take disciplinary action if required.

3. Controverting the allegations against him, the petitioner complained of victimisation on false, frivolous and trumped up charge. However on conclusion of Inquiry, he was held guilty and punished as indicated in the schedule of reference. Feeling aggrieved, the petitioner raised an issue through his Union and sought quashing of the impugned punishment, i.e. permanent stoppage of two increments and reduction in salary during the suspension period. Since the Management was found unresponsive despite the intervention of the A.L.C. (C) at the Conciliation stage hence the reference.

4. The parties were taken to trial and called upon to adduce evidence in support of their respective versions without feeling the necessity of framing any formal issue because the pleadings were found to be fully covered under the terms of reference. In support of his case, the petitioner examined himself whereas the Management felt contended with a few documents whose authenticity was not contested from the opposite side.

5. Although in his Claim Statement the petitioner had tried to assail the domestic proceedings on all conceivable grounds yet, during the course of his Cross-examination, he was fair enough to make certain admissions which go a long way to establish the propriety of the departmental inquiry by necessary implication. To be precise he admitted that he was served with an unambiguous charge sheet which he controverted and then participated in the inquiry proceedings alongwith his representatives of choice; more over he got due opportunity to rebutt the charges against him as also to project his own version. He further conceded that he had no grouse against the Inquiry Officer.

6. As a matter of fact, On his behalf only one point was raised before me to question the validity of the domestic proceedings and that, too, was confined to the exercise of the punishing powers by the Inquiry Officer. Elaborating his view point the learned representative of the petitioner submitted that according to the common case of the parties Shri Gursharan Singh was conferred with, and he did exercise the powers of both the Inquiry Officer as well the Punishing Authority; in his former capacity he held the petitioner guilty and as the Disciplinary Authority imposed the punishment. In a manner of speaking the petitioner got no fair opportunity to controvert the findings of the Inquiry Officer so as to claim the indulgence of the Punishing Authority on the question of sentence which, according to him, was violative of the rules of equity and fair play

7. Despite its seeming attraction the petitioner's submission failed to carry conviction with me. At the risk of repetition it may be pointed out that the Inquiry Officer, who also happened to be the Disciplinary Authority had no animus against him; and then, under the concept of Article 19 : 4 of the Bipartite Settlement the management was well within its province to confer such composite powers on a single authority. The only requirement was of the wide circulation of the proposition amongst the employees; which was duly done as should be evident from the circulars Ex. M-2 and M-9. And so far as the violation of any rule of equity or fair play is concerned the plea would not hold water in light of the ratio of D. C. Aggarwal Vs. Union of India 1983 (2) S.L.R. 94 and Sambhoo Nath Goyal Vs. Bank of Baroda 1984 (1) S.L.R. 212 (S.C.).

8. That directly confronts the Tribunal with the quantum of punishment which, on the face of it, appears to be a bit harsh and disproportionate to the established charges. As mentioned here-in-before the only allegations against the petitioner pertained to the domain of insubordination due to his outbursts on 11-10-1975 and 13-10-75. Of course he had no business to be abusive and use unparliamentary language towards his seniors, yet he had a plausible point in asking for written instructions for working as a peon, within the premises of a particular room, on 11-10-1975 when he was supposed to keep guard on the main entrance of the Bank as a sort of Santry. Similarly on 13-10-1975 he had urged to be relieved at about 4-45 P.M. instead of the normal time of 5-30 P.M. because he had to forego his lunch break due to assignment to extra duty. In the technical sense of it, he might be guilty of taking a unilateral decision and then showing temper on being questioned by

his seniors, but all the same, all by itself, these incidents were not of the nature to justify or even invite the penalty of cumulative loss of increments; after all such type of punishments carry their venom and strings throughout the service career of an employee, and some times even thereafter; because at the time of retirement the permanent loss of even a single increment may adversely effect the computation of gratuity and such other dues.

9. It may not be out of context to mention here that after this incident the petitioner appears to have mended his ways and that, perhaps, explains his promotion to the clerical cadre w.e.f. 1st January 1984. On behalf of the management it was vehemently argued that any indulgence on the point of punishment would be a case of mercy misplaced because as a logical consequence it could induce an element of indiscipline in a sensitive industry like Banking.

10. I am not impressed with the effort because agreeing to the proposition would tantamount to discard the reformative aspect of punishment. After all, on their own showing the management have granted promotion to the petitioner to the clerical cadre after this incident, there is no denying of their magnanimity but then it could not have been there had the petitioner not mended his ways. To be precise, the impugned punishment is certainly on the excessive side and calls for judicial interference to strike a balance.

11. No other point was raised before me and thus to sum up my aforesaid discussion on the limited available data, while sustaining the Management's action in its pith and substance I direct them to substitute the punishment to the simple loss of the increments. To be precise, as and when the petitioner's next increment fell due after the date of reference he would be fixed up at his normal graded salary on the assumption that there was no loss of increments during the intervening period. All the same there would be no interference in the quantum of sustenance allowance allowed to him during his suspension period because after all, the charges of misconduct, how so ever minor, had been duly established.

12. Award returned accordingly.

Chandigarh,

Dated : 4-10-1985.

I. P. VASISHTH, Presiding Officer
[No. I-12012/176/80-D.II (A)]

नई दिल्ली, 29 अक्टूबर, 1985

कां०अ०-5185 औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, के प्रबंधन से सम्बद्ध नियोक्ताओं और उनके कर्मचारियों के बीच, अनुबंध में निविष्ट औद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार औद्योगिक अधिकरण कानपुर के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 15-10-85 को प्राप्त हुआ था।

New Delhi, the 29th October, 1985

S.O. 5185.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal, Kanpur as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the Central Bank of India and their workmen, which was received by the Central Government on the 15th October, 1985.

ANNEXURE

BEFORE SHRI R. B. SRIVASTAVA, PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVERNMENT, INDUSTRIAL TRIBUNAL KANPUR

Industrial Dispute No. 164 of 1981

Reference No. I-12012/39/80-D.II (A) dated 30th May, 1981
In the matter of dispute between :

Shri S. C. Sharma, C/o The Secretary, Central Bank Employees Association, Regiment Road, Meerut,

AND

The Assistant Manager, Central Bank of India, 23-Vidhan Sabha Marg, Lucknow.

APPEARANCES :

Shri Tara Chandra representative—for the workman.

Shri S. Trivedi representative—for the management.

AWARD

1. The Central Government, Ministry of Labour, vide its Notification No. L-12012/39/80-D.II (A) dated 30th May, 1981 has referred the following dispute for adjudication :—

Whether the action of the management Central Bank of India, in relating to its Hapur Branch in stopping permanently, from 1977 two increments of Shri S. C. Sharma, Assistant Cashier-cum-Godown Keeper by way of punishment is justified? It not, to what relief is the workman concerned entitled?

2. The workman Shri S. C. Sharma was serving as Assistant Cashier-cum-Godown Keeper in the management bank Hapur Branch of the management and was also the Secretary of the Hapur Unit of the U. P. Bank's Employees Union. On 19-5-73 the branch manager of the management bank Bank Gulauthi Branch, issued the memo to the workman which is annexure W-1 with the statement of claim alleging that on 2-5-73, he had visited the said bank at about 2 p.m. and had adopted there in the branch rude behaviour objectionable conduct and used physical force. The workman replied the memo and ascertained that he had been on duty throughout the day on 2-5-73, meaning thereby that on 2-5-73 throughout the working hours he remained in his Hapur branch and did not go out on the said date and time of Gulauthi Branch of the Punjab National Bank, hence there was no question of indulging in the alleged act. The workman was served with another memo after considering his reply dated 21-5-73 alleging that he had left the office at 1 p.m. by taking keys of M/s. Avon Plastics and returned in the office at about 5.30 p.m. and at Punjab National Bank at Gulauthi he had discussion with the manager of PNB and behaved in indecent manner and used abusive language for him and also stopped the manager of the PNB and threatened him with dire consequences. He was called upon to explain within three days why disciplinary action may not be taken against him. The said memo is annexure W-2. The workman submitted the detailed explanation to this memo on 7-6-73 annexure 4 to the statement of claim. In this reply, the workman admitted having remained out from 1.30 p.m. to 5.30 p.m. under instructions from him to go to M/s. Avon Plastics Corporation delivered the goods and get godown rearranged and it was for all that he was absent from 1.30 p.m. to 5.30 p.m. He denied having gone to Gulauthi at PNB branch he consequently denied the allegations.

3. The management gave the workman third memo annexure W-5 to the statement of claim that the management had been informed by M/s. Avon Plastics Corporation that the workman secured letter addressed to the branch manager regarding his presence in the godown on 2-5-73 in connection with the delivery and rearranging godown and as that letter was addressed to the agent Central Bank of India, Hapur, it was the duty of the workman to have handed over the same to the branch manager which was not done so far. He was required to explain within three days. This memo is dated 21-6-73.

4. The workman replied this memo on 28-6-73 copy of which is annexure W-6 of the claim statement. In this the workman averred that the said letter was delivered to the agent on that very day and it was on the basis of that letter that the agent allowed him to mark over time for 2-5-73. Nothing further transpired for about 14 months when a charge sheet was issued to the workman on 9-8-74 (Annexure 7 of the claim statement) by Zonal Manager of the management bank at Lucknow wherein he was charged for riotous and disorderly behaviour and criminal trespass and that he had visited Punjab National Bank Gulauthi from Hapur

without taking prior permission of the branch manager. He was further intimated that the enquiry be held by Shri K. C. Katoch Divisional Manager, Agra at Hapur Branch and that the date and time of the enquiry will be intimated to him in due course. After about 18 months the Assistant Zonal Manager replaced the enquiry officer by Shri S. L. Gautam vide memo dated 7-4-76 (annexure W-9 of the claim statement). Shri S. L. Gautam commenced the enquiry on 1-6-76 but the workman did not attend the enquiry as allegedly a memo was issued by Hapur Branch Manager dated 31-5-76, that he had been informed that there would be no enquiry on 1-6-76. That memo of Hapur Branch dated 31-5-76 has not been filed. The enquiry was resumed on 16-7-76, jointly against the workman and another workman Shri Amar Bahadur. On that day only some documents were filed on behalf of the management and the enquiry was adjourned for 19-8-76. On 19-8-76 the management produced some more documents. After examination and cross examination of the witnesses produced by the management and the two workman, thereafter parties were required to adduce arguments of their respective cases. No arguments were addressed orally as both sides wanted to submit their arguments in writing consequently 21 days time was given to the management and seven days time to the workman after management has submitted its written arguments.

5. Before written arguments were submitted by the management they moved an application for permission to produce the officer incharge of the Punjab National Bank Gulauthi Branch whose whereabouts were not known previously. 22-9-76 was the date fixed for orders on that application. The application of the management after hearing the parties was allowed where upon workman and his representative decided not to take part in the proceedings as a mark of their protest against the unjust action of the enquiry officer. The new witness was none else but Shri D. P. Gupta the officer incharge of Punjab National Bank whom the alleged incident was alleged to have taken place on 2-5-73. As none participated on behalf of the workman the enquiry was closed ex parte. After obtaining the written arguments from the banks representative and workman representative the enquiry officer submitted his joint finding against the workman and Shri Amar Bahadur on 13-12-76, proposing the punishment of dismissal against workman Shri S. C. Sharma and asking him to show cause against the said proposed punishment by 24-12-76. On that date the workman appeared before the enquiry officer on which the enquiry officer passed his final orders punishing the workman for stoppage of two grade increments. Thereafter, the assistant Zonal Manager of the bank passed on the order of imposing upon the punishment on the workman on 28-1-77. The workman preferred an appeal on 14-1-77.

6. The first contention of the workman representative is that charge No. (i), did not fall under para 19.5 clause (c) and (j) of the binartile settlement. I agree with his contention partly that 19.5(c) will not apply in all case i.e. drunkenness or riotous behaviour or disorderly behaviour should committed on the premises of the bank. In the instant case, the alleged action, if any, took place not in the premises of the bank where workman was employed but at different place in a different bank but as regards clause 19.5(j) I do not agree that the same does not apply as that will amount to doing any act prejudicial to the bank's interest. Prejudice does not mean putting the bank to some financial loss or involving the bank in some financial loss but also any act tarnishing their name and image of the bank. Thus if any bank employee during office hours goes to another bank and indulge in riotous, disorderly and indecent behaviour or even assaults the officer there that will amount doing an act prejudicial to the interest of the bank. The words "or" at two places in clause (i) of 19.5 of the said settlement refers to three different types of misconduct and they are not interconnected or one depended upon the other. It is true that the management of Punjab National Bank could have filed a criminal case under section 323 I.P.C. or so on but leaving the bank premises during office hours and indulging in assault and disorderly and indecent behaviour with the officer or another bank at another place will tarnish the image of the bank, vis a vis its control over the employee during the office hours and will thus, tarnish the good name of the bank which can nothing be but an act prejudicial to the interest of bank.

7. The law Bal Mukund Versus State Industrial Court Indore 1979 Lab IC 737 referred does not apply to the present case.

8. Second charge that is leaving the Hapur for Gulauthi during office hours without prior permission of the agent will by itself amount to minor misconduct as given in para 19.7(a) of the bipartite settlement, but when considered on that account giving punishment solely on those charge the punishment should not have been stoppage of increments for more than six months.

9. Now coming to the point whether the appointment of the enquiry officer was invalid. Since the officer (enquiry) was appointed by Zonal Manager, Assistant Zonal Manager, could not have replaced the enquiry officer appointed by Zonal Manager. On this point my attention was drawn to para 19.14 of the Bipartite Settlement 1966 wherein it is laid down that the Chief Executive or the Principal Officer in India of the Bank or an alternate officer at Head Office or principal office appointed by him for the purposes shall decide which officers shall be empowered to hold enquiry and take disciplinary action in the case of each office/establishment.

10. It has been argued by the representative for the management that it is the head office which draws a penal of enquiry officers who can take disciplinary action and that the Zonal Manager or Assistant Zonal Manager, had no authority to appoint any one as enquiry officer for taking disciplinary action and it is from that penal that the name of Shri K. C. Katoch was taken and when for some reasons he could not be available to conduct the enquiry the other officer available from penal Shri Gupta was named as Enquiry Officer at his place. Thus this objection has too no force.

11. In the instant case, on the point of delay it can not be said that the workman in any way was prejudiced as he was never suspended nor his working of pay was affected. Thus the delay in this case can not be said to be denial reasonable opportunity to show cause which may amount to denial of justice.

12. The workman had to prove the charges. They did not do that what ever evidence available. Later when the person with whom misbehaviour taken place and who was assaulted could be available was allowed to be examined by the management. The workman should have participated in the enquiry and examined the witness to disprove the case and show that what ever he was deposing was not correct. Further he could have pressed for giving evidence in rebuttal as taking evidence if else amounted to reopening the case. The workman himself is to be blamed for not having participated in the enquiry and the enquiry officer was justified in concluding the proceeding at that stage ex parte.

13. Regarding joint enquiry, it can not be said that the workman in any way prejudiced, normally evidence was recorded together when common question of fact or law are involved in the enquiry of two similar matters unless prejudice is therein as shown, it can not be said that the enquiry is vitiated.

14. This court has not to evaluate the evidence given before the enquiry officer, this court can interfere only if the findings is perverse i.e. findings have been arrived at without any evidence on the point.

15. In the circumstances and for the reasons discussed above I see no reason to interfere with the enquiry and decide the preliminary issue that the enquiry against the workman is not vitiated as alleged and was fair and proper.

16. I have observed earlier that the findings of the enquiry officer amounted to gross misconduct under para 19.5 (j) of the Bipartite Settlement and thus the punishment of stoppage of two increment given in the circumstances of the case was fair and proper.

17. I, therefore, taking into consideration entire facts circumstances and evidence of the case, hold that the action of the management of Central Bank of India, in relation to

its Hapur Branch in stopping permanently from 1977 two increments of Shri S. C. Sharma Assistant Cashier-cum-Go down Keeper by way of punishment is justified. The result is that the workman is not entitled to any relief.

18. I, therefore, give my award accordingly.

19. Let requisite number of copies of this award be sent to the Central Government Ministry of Labour for publication.

Dated : 10-10-1985.

R. B. SRIVASTAVA, Presiding Officer

[No. L-12012/3980-D.II(A)]

N. K. VERMA, Desk Officer

नई दिल्ली, 28 अक्टूबर, 1985

कां.अ. 5186.—औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार बम्बई पत्तन न्याय के प्रबंधन से सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मचारियों के बीच, अनुबंध में निहित औद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार औद्योगिक अधिकरण, बम्बई के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 16 अक्टूबर, 1985 को प्राप्त हुआ था।

New Delhi, the 28th October, 1985

S.O. 5186.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal No. 1, Bombay as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the Trustees of the Port of Bombay and their workmen, which was received by the Central Government on the 16th October, 1985.

ANNEXURE

BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL NO. 1 AT BOMBAY

Reference No. CGIT-18 of 1984

PRESENT :

Shri Justice R. D. Tulpule Esqr., Presiding Officer.

PARTIES :

Employers in relation to the Trustees of the Port of Bombay;

AND

Their workmen.

APPEARANCES :

For the Management—Mr. Kaka, Advocate,

For the Union—Mr. Datar, representative.

INDUSTRY : Ports & Docks STATE : Maharashtra
Bombay, dated the 5th day of July, 1985

AWARD

This is a reference under Section 10 sub-section 2 of the Industrial Disputes Act which came to be made on the joint application by the parties and the issue referred to this Tribunal is as follows:—

“Do the Heavy Lift Crane Drivers of the Mobile Crane Section and Electrical Establishment of the Mechanical Engineering Department qualify for being brought under a piece-rate scheme? If not, are they entitled to any other relief, and, if so, in what manner and from what date?”

2. At the hearing of the reference on the last date, a part of the demand was settled and the parties filed consent terms with regard to Mobile Crane Section Drivers operating Heavy Lift Cranes. According to that settlement, they have been admitted to the benefits of Distribution of container allowance, on certain conditions which are to be found in the settlement itself. I accept that settlement and direct an award in terms of the settlement so far as Heavy Lift Crane

Drivers of the Mobile Crane Section are concerned. That leaves the case of Heavy Lift Crane Drivers in the Electrical Establishment of the Mechanical Engineering Department alone for consideration.

3. In making reference hereafter, the pleadings and/or documents produced in this case, this would be treated as a reference to Heavy Lift Crane Drivers in the Electrical Establishment only. The statement of claim and the written statement with reference to them only is being referred to.

4. The statement of claim on behalf of these Heavy Lift Crane Drivers is liked by the B.P.T. General Workers Union, of which they are members. It says that such workmen operate cranes which lift weights, according to them, ranging between 15 tonnes to 60 tonnes. They have also to carry out maintenance and repair work for which they are paid a special pay of Rs. 57. These heavy cranes "handled heavy packages of military equipments and other cargoes including containers when the containers started coming in large numbers." The union then refers to 1981 settlement by which container allowance was agreed to be paid at the rate of Rs. 500 as compensation for loss of piece-rate earnings. According to the union clause (ii) of paragraph (1) of that settlement provides that "workers who perform the duty of operation, repair maintenance of cranes etc. will be eligible for payment of the said compensation." It is its case, therefore, that these Heavy Lift Crane Drivers should also get container allowance with effect from 1-1-1981. It also relied upon Resolution 26 of the Indian Ports Association.

5. Further, according to the union, certain categories of workmen who are not covered by the settlement of the year 1981, such as Leading men, Chargemen, Technical Supervisors, Crane Supervisors, Driver-Mechanics, Electricians, Wiremen, Winders, Mazdoors, Nowgances, etc. who were not under the piece-rate scheme were brought under the 1981 settlement and were being paid this container allowance. It was, therefore, according to it discriminatory to deny these persons, brought under the settlement while deny it to the Heavy Lift Crane Drivers. It then referred to the genesis of this dispute and the resolution of Indian Ports Association and the stand taken by the employers in this behalf. It, therefore, contended that Heavy Lift Crane Drivers of the Electrical Establishment of the Mechanical Engineering Department should be brought under the piece-rate scheme and container allowance should be paid to them pending any such scheme.

6. It may be pointed out that the issue referred to the Tribunal specifies that the Tribunal should adjudicate whether these people, namely, Heavy Lift Crane Drivers in the Mobile Crane Section and the Electrical Establishment "qualify for being brought under a piece-rate scheme?" The issue also further requires to adjudicate, if they do not qualify for being brought under the piece rate scheme, whether they can be given any other relief and in what manner and from what date. It would be seen, therefore, that failing qualification of the crane drivers to the settlement of piece-rate scheme, the only other allowance which is claimed on their behalf and suggested is the container money sharing. That is claimed from 1-1-1981. The present dispute has to be viewed in this context.

7. The written statement of the Port Trust, to summarise it, states, that the Heavy Lift Crane Drivers on account of the difficulties in the nature of the work and the broad kind of work which they carry out and which is available in the Port Trust are not capable of being brought under a piece-rate scheme. Therefore, no piece rate scheme can be fixed for them. As regards the container allowance, it says that when cargo started coming at the port in greater quantities in containers instead of loose, all those workmen who were getting incentive for loading and unloading larger cargo than normal in a day stood to lose that incentive. Accordingly, they lost that piece-rate which they were getting. In order to compensate these workmen, therefore, an amount was collected from the shipping companies at the rate of Rs. 500 per set of workmen per shift. That was living with the Port Trust since the year 1973 but no distribution could take place of the moneys amongst the concerned workmen

who were eligible as the unions were not agreed on the question. Ultimately, an agreement was reached in 1981 and in accordance with that settlement, the amount was distributed. That settlement provided that this should be distributed amongst those who were covered by a piece rate scheme and those who were engaged in "(i) Crane repairs and maintenance staff in certain departments and sections and (ii) the labour employed by Clearing Agents and coming under the listed scheme of Bombay Dock Labour Board." Present workmen, according to it, do not fall under any of these categories.

8. As regards their work, it says that a piece-rate scheme can be worked out only where the work in excess of the datum or prescribed minimum quantum of work is turned out or capable of being turned out. There must be continuity of work and the work must be continuously available for being done. So far as Heavy Lift Crane Drivers are concerned, the case is that their work is intermittent and non-continuous and can not be brought under the piece-rate scheme. It further pointed out that these cranes handle only heavy loads. There is no knowing when a next heavy cargo would be available for being lifted. Hence it is not possible to fix any datum. Occasions of handling loads above 14 tonnes, namely that which is normally handled by heavy lift cranes are few and occasional. It also pointed out that there are only three such cranes which are run by 9 crane drivers operating in three shifts. Out of these, two cranes are used at the repair shops and only one is used for loading and unloading cargo. In other words, it could be only three drivers who could be brought under the scheme.

9. Its further contention is that the Indian Ports Association's resolutions are only recommendatory and not mandatory. The union's reliance upon the terms of settlement is misplaced. If the settlement is correctly read, then it will show that the concerned employees are not covered by it. The other employees about whom the union has made a grievance, in accordance with the terms of settlement itself were capable of being brought under the settlement, as in respect of them, either the applicable piece-rate scheme was urged upon in principle or discussion were going on for evolution of one in that behalf. It admitted that these Heavy Lift Crane Drivers do attend to repairs and maintenance. But it was pointed out that they look after only mechanical part thereof and not the electrical. Such staff which is covered by the settlement of 1981 and who are beneficiaries in the container money distribution are staff concerned with crane repairs and maintenance "employed in the Hydraulic Establishment, India Dock, Hydraulic Establishment, P & V Docks, Mobile Crane Section and Electrical Establishment, Southern Division (Crane Section)". The concerned employees though Heavy Crane Drivers, are not in the Crane Section of the Southern Division Electrical Establishment and they fall outside the categories covered by the settlement. The employer also pointed out that all that money which was collected, has been distributed among the concerned employees and that the Trust has no money to distribute to the employees, and therefore, there can be no question of paying these employees from 1-1-1981, even assuming that anything has to be paid to them.

10. The employer then referred to the contention of the union with regard to certain other employees engaged on "crane repairs and maintenance work in the Hydraulic Establishment, India Dock, Hydraulic Establishment, P & V Docks, Mobile Crane Section and Electrical Establishment, Southern Division (Crane Section)" and said that there is no discrimination. To that settlement, it says, besides the concerned union, two other unions were parties. It also pointed out that the existence of piece rate or incentive scheme differs from port to port and varies on account of geographical, historical and other reasons. The employer was to consider absorbing the Heavy Lift Crane Drivers in the distribution scheme of container money, provided the Heavy Lift Crane Drivers had agreed to operate mobile cranes, if they were required to do so. According to the employer, the union at one stage agreed to do this, but later, backed out. Therefore, it was not possible to include them for a share in the container money to be distributed.

11. It would thus be seen that the question which requires to be decided in the present reference is whether any piece rate scheme can be formulated for these Heavy Lift Crane Drivers and if not, whether they can be brought in as beneficiaries under the container money distribution scheme. Answer to the first question depends upon the nature of work, its ability to be fixed in terms of an incentive of piece rate scheme of work, actual availability of work and which can be performed by the concerned workmen. The scheme has to be such that upon its evolution or adoption, the workmen would be deriving benefit thereunder. It is no use devising any scheme which would be a dead letter or still born and cannot be beneficially taken advantage of by the workman in the absence of available work.

12. As regards the alternative case of share in the container money or allowance, the case of the employees must rest on the terms of the settlement and not otherwise. This will also have to be considered in the light of the historical reasons for the introduction of container money/allowance distribution scheme and the question whether the present concerned workmen are eligible to participate in the distribution.

13. When the reference opened for hearing, I asked the union representative whether they had any scheme formulated with regard to the introduction of piece-rate for the Heavy Lift Crane Drivers. I was informed that the union has in mind a scheme and that it would be placed on record. They went on to say at that stage how the piece-rate scheme should be drawn. Though that was so right up to the end, no scheme was either formulated or produced, and when I asked again the union representative at the end of the arguments as to whether they have any scheme, they expressed their inability and did not produce any.

14. It may be mentioned however, that on the 5th of July 1985, a memorandum jointly signed on behalf of the union and on behalf of the Port Trust was presented. That related to a part of the workman covered by the reference. By that memorandum, Heavy Lift Crane Drivers of the Mobile Crane Section were agreed to be extended the benefits of share in the container money on terms and conditions agreed therein by the employees thereupon. Since both parties have accepted and have agreed that out of the two sets of Heavy Crane Drivers (1) of the mobile crane section and (2) of the electrical establishment of mechanical engineering department, Heavy Lift Crane Drivers of the Mobile Crane section are now out of the purview of the reference, as a settlement has been reached in their case. I accept this signed memorandum and award in terms of the settlement, a share in the container money to these Heavy Lift Crane Drivers of the Mobile Crane Section in accordance with the understanding and agreement, as recorded in the memorandum dated 5th July, 1985, clauses 1 and 2. That leaves the case of the Heavy Lift Crane Drivers in the electrical establishment of the Mechanical Engineering Department.

15. The parties led evidence in the form of affidavits of two witnesses—Iyer on behalf of the management and one Shejwal on behalf of the union. They were also cross-examined. They also produced documents and letters exchanged between the union and Port Trust. I will firstly refer to the affidavits filed in this case and the cross-examination and evidence emerging therefrom.

16. Mr. Iyer, in his affidavit of the 16th of May, 1985 stated that there were only Heavy Lift Crane in the electrical establishment, with which alone we are now concerned. Of these, two are employed on the ship repair work at Hughes Dry Dock and Merewether Dry Dock and the third one alone is employed at the Jetty End on the Cargo Handling work. "The heavy lift crane at the Jetty end only handles heavy packages and military equipment and other heavy cargo, which work is very intermittent." Iyer was not cross-examined with regard to this statement of his. His cross-examination was directed towards the question whether the Heavy Crane Drivers do any repair work or maintenance work. Iyer is from C.M.E. Department, which has three wings (1) Hydraulic Establishment, (2) Electrical Establishment and (3) Mobile Crane Department. He says that he is fully conversant with

the Heavy Crane Drivers work, though in his cross-examination, he admitted that he has not worked in the Hydraulic section and has no experience thereof.

17. We are only concerned in this case with electrical establishment and Iyer's statement therefore, can be accepted as correct. He has referred to a statement which has been filed on behalf of the Port Trust. That statement, he says was prepared from the original record and is correct. I shall presently come to that statement.

18. Shejwal, in his evidence and in the affidavit, has stated very little of use. He has no doubt referred to the circumstance that the Heavy Lift Crane Drivers undertake maintenance and undertake comprehensive repair work. His claim to comprehensive repair work is disputed. He says he does that with the assistance of mechanics. He also claims that he performs the work of electrical section and attends to electrical work, without even waiting for the electrician. His evidence, however, is singularly lacking as regards the nature of work, the quantity and feasibility of a piece rate scheme, considering the amount of work done the norm which can be prescribed for a day's work and alternatively, also how it is connected with the container handling. Only thing, which he has stated is that there is discrimination between the employees of the Hydraulic Establishment and the Electrical Establishment though they do the same kind of work and "is connected with smooth working of container handling".

19. As regards the repair and maintenance work, which he does admittedly, Rs. 57 was paid as maintenance and repair allowance, for the purpose. In his cross-examination, he stated that one crane handles "military and other cargo also". That crane handles "not only heavy, but heavy and light cargo also". He denied the suggestion that it does not handle light cargo and handles only heavy cargo and military cargo.

20. Turning now to the statement which has been filed in the present case on behalf of the employer on 14th March 1985 and 17th January, 1985 that shows that so far as heavy lift cranes are concerned, the work is occasional and for days together there is no work at all. On other days when there is work, that is very little. For instance, in January, the first shift on the 11th January handled for the first time heavy lift cargo which occupied 4 hours out of a duty of 12 hours, and on 29th January, only 3-quarters of an hour. So far as the second shift is concerned, November month figures are still less. The maximum that can be seen, as number of hours worked for these heavy lift cranes is 7 in February on 18-2-1984, while on some occasions, there is no lifting of cargo at all for the second shift. In November for instance, the second shift did not do even a single hour's work, it will be seen, from the perusal of the work done for the number of hours in the year 1984 for the second shift, that generally the work was very little, extremely occasional and very slight. While for the first shift, there is some work, that is always intermittent and non-continuous and never for the entire shift period.

21. As against this, cranes employed in container handling appear to be not only busy, but have continuous work. This would be seen from the statement at pages 1-12 of 14th March 1985, relating to Tower Cranes employed at the Timber Pond for handling containers. The number of containers handled by them is mentioned against them, and is sometimes as many as 16 in a days. On an average, the containers handled is about 9, but on most occasions more than 7 per day. This would show that the container handling work is continuous, of a permanent nature and quantitatively sufficient, which is not so far as heavy cargo is concerned. That is the reason perhaps why no piece-rate scheme was devised for such a kind of work and the men employed on it. As no piece-rate Scheme can be evolved and has not been evolved and presented by the union for consideration, it seems to me that the answer to the first part of reference, namely, whether the heavy lift crane drivers of the electrical establishment can be brought on a piece rate scheme, has to be answered in the negative. Their work essentially being of a casual, intermittent and non-continuous unpredictable nature, it is not possible to devise and arrive at a norm of minimum work either per day

or per month and anything over and above fixed as qualifying for a piece rate. From the nature of work and the statement to which I have made a reference it does not appear to be predictable as to when the next piece of cargo (heavy) is going to arrive, and whether it is going to arrive at all in that month. When such cargo arrives, there is work. But, there is no knowing whether and when such cargo would be there for unloading.

22. It appears that the matter of fixing a scheme and devising a piece rate for this category of staff was under consideration for quite sometime and the circumstances or difficulty in devising any such scheme has been realised and the parties are aware of. The matter has been engaging attention since 1980, and if a scheme could have been usefully and profitably devised then the workmen or the employer would not have failed to devise one. The correspondence to which I shall presently make a reference makes a general demand and gives a number of reasons, excepting devising of the scheme, claiming allowance for these workmen. Further I find that the picture presented by either of the parties is one-sided. The union has filed copies of its letters, but not the replies received. On the other hand, the employer also to some extent guilty of the same practice. Initially, it appears that cargo weighing upto 5 tonnes only was considered eligible for evolving a piece-rate incentive scheme. That was later raised by the Government of India, by its letter dated the 26th June, 1980 to about 10 tonnes. A resolution came to be passed by the Indian Ports Association on the 22nd December 1983, recommending that "heavy lifts weighing over and above 10 tonnes should be reckoned as of 10 tonnes for the purpose of piece-rate payments". Three letters have been produced by the union addressed by it to the Port Trust dated 22nd February, 1983, and 19th August, 1983. It appears that some kind of incentive scheme is in operation in Madras, Calcutta and Cochin Ports. But, how it is operated and what is the workload and the quantity of work per day available for such workmen is not stated. Their comparative duties, emoluments, other allowances and service conditions are not known, nor any such material placed before me. The main argument in the letter dated 22nd February, 1983 seems to be that as most of the workmen concerned and also remotely concerned with handling of cargo in the port are covered by a piece-rate scheme, there is no reason "why the categories of workmen employed by the Port Trust for handling so-called heavy lift cargo and containers should be excluded from the purview of the piece-rate schemes." At one stage in the letter it was said that these crane drivers also handle a larger number of containers in the port. That does not seem to be correct and the handling of containers appears to be occasional. Lastly there is a reference to the evolution of a suitable piece-rate scheme "by mutual discussions before the end of this month, so that the concerned categories of employees would also be eligible for container compensation."

23. Letter dated 8th March, is a reply to the letter dated 3rd March, addressed to the union. But the letter has not been produced. The 8th March letter also contended that certain categories who were not covered by the piece rate scheme have been included subsequently to the settlement of the year 1981. The argument is that if this was done for persons totally unconnected, and unilaterally by the Port Trust, then, the union was unable to know why the "Administration cannot pay the compensation to the Heavy Lift Crane Drivers, Nawgances, Greasers and Mazdoors who have every right to claim it as they are actually handling the containers as team."

24. The 19th August, 1983 letter is more confrontational than supplying any senews to the demand.

25. The management's stand in this behalf is clarified in the letter dated 26th December, 1983 and also in some of the other letters produced by them, to which I shall presently refer. The Secretary of the Port Trust writes that "Since the work performed by the Heavy Lift Crane Drivers of the Mobile Crane Section by itself is not such as to enable their induction to a piece-rate incentive scheme, it was suggested to you that since the Heavy Lift Crane Drivers of the Mobile Crane Section are capable of operating mobile crane, tractors, forklifts, platform trucks, etc. having themselves come from the ranks of mobile crane drivers, Heavy Lift Crane Drivers could be brought under a piece-rate/incentive scheme only if they were agreeable to function "as mobile crane

drivers. Then it was said it will make it possible to bring them to the benefit of the container scheme. It was mentioned that was exactly what has been done in the case of Heavy Crane Drivers of the Mobile Crane Section.

26. In the union's letter of 30th September, 1982, the difficulties of drawing up of a scheme for the Heavy Lift Crane Drivers is appreciated, but the claim is more for container money sharing than for any incentive scheme and is advanced on the basis of equity. The consistent stand of the administration is revealed in the letter dated 5th October that "by the very nature of their operations, the heavy lift crane drivers fall outside the arrangement of incentive payment".

27. The suggestion on the part of the management that Heavy Lift Crane Drivers agree to do the work of Mobile Crane Drivers was firmly turned down by the union and it said in its letter dated the 29th June, 1984 that the Heavy Lift Crane Drivers "are not at all agreeable to work as Mobile Crane Driver Grade-I at any time. In other words, the Heavy Lift Crane Drivers are not at all agreeable to denigrate themselves for the purpose of receiving the Container Allowance when certain employees who are not even distantly connected with the Piece Rate Scheme are being paid the Container Allowance".

28. In this connection a reference has to be made to the 1981 settlement to which all the unions were parties, including B.P.T. General Workers Union, which is a party in the present dispute B.P.T. Employees' Union and Transport & Dock Workers Union. The agreement is produced at S. No. 2 of the documents produced by the union. It says that this container money sharing scheme was applied to three classes of workers—firstly those who are "eligible for piece rate/premium scheme, as on 1st January, 1981". (2) Crane repairs and maintenance staff employed in certain establishments mentioned therein, which includes the electrical establishment of the Mechanical Engineering Department, with which department we are concerned and lastly (3) Labour employed by clearing Agents and coming under the listed scheme of Bombay Dock Labour Board. The inclusion of the categories 2 and 3, it is clarified in the agreement itself, is being made on the basis that "a piece rate/incentive scheme for these categories has either been accepted in principle or are under discussion between the parties concerned." In the face of this, it really passes ones comprehension as to how the union can complain about payment of container money to crane repair and maintenance staff of the Hydraulic Establishment and others listed in clause (ii) of item 1 of the settlement. The question as to how the container money should be paid is a subject of settlement between the three unions and the management. The only way of entry into that sharing is via fixation of piece rate or incentive scheme either accepted or duly evolved and agreed. Even without other unions agreeing to it, if a category of workmen are brought under piece-rate scheme, after the settlement, they could be brought in by virtue of clause 2 of the settlement, which permits new categories becoming eligible for participation whenever "they are brought under a piece-rate/incentive scheme." I have already held that it is not possible to fix or evolve any piece-rate or incentive scheme for the Heavy Lift Crane Drivers. The answer to the claim therefore is against them, even if they were occasionally handling containers. During the course of arguments, though it was generally admitted and conceded that only heavy cargo is generally lifted by these crane drivers (rL—?g SHRD LR DL jetty end, sometimes containers are also handled, but that is on rare occasions. Besides, it seems to me that it will be useless to evolve any piece-rate scheme for such work for the simple reason that any such scheme will be totally unworkable in the present state of affairs, as nobody would become eligible to any piece-rate or incentive, when even the normal day or minimum work is not required of this category of workmen.

29. The union's argument seems to be mainly that the heavy lift crane drivers also do repairs and maintenance work. Such workmen in the hydraulic establishment, Indira Dock, Mobile Crane Section, etc., are being paid container allowance, though they do not even go near the container. Nevertheless, it is quite clear, apart from the circumstances that the union itself had admitted that they are covered

in terms of clause 1 of the agreement, that their work is essentially connected and vitally concerned with the cranes which are instrumental for unloading and loading cargo. It is vital and necessary that cranes are maintained in good repair and order so that more cargo can be unloaded and a piece rate wage and incentive earned. Unless, therefore, the crane repair and maintenance staff pull their share, it would not be possible for the unloading and loading workmen to earn an incentive and to load/unload the cargo. They were therefore either properly covered or considered eligible for a piece rate scheme and hence presumably included in this. In the circumstances I do not think that the General Union can make any grievance or say that the Heavy Lift Crane Drivers are discriminated against, as they have also to handle some part of the maintenance or repair work of the heavy cranes. For these reasons, it must be held and answered, though unfortunately, that Heavy Lift Crane Drivers are not entitled to any other relief and particularly to share in the container money claimed. They are also not entitled to be brought under any piece-rate scheme.

R. D. TULPUL, Presiding Officer

[No. L-31013/5/84-D. IV(A)]

K. J. DYVA PRASAD, Desk Officer

नई दिल्ली, 31 अक्टूबर, 1985

कां० 5187—औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार द्वारा एण्ड नेचुरल गैस कमीशन के प्रबंधन से सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मचारों के बीच अनुबंध में निहित औद्योगिक विवाद में औद्योगिक अधिकरण हैदराबाद के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 11 अक्टूबर, 1985 को प्राप्त हुआ था।

New Delhi, the 31st October, 1985

S.O. 5187.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Industrial Tribunal, Hyderabad as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Oil and Natural Gas Commission and their workmen, which was received by the Central Government on the 14th October, 1985.

ANNEXURE 'A'

BEFORE SHRI G. S. BAROT, PRESIDING OFFICER,
INDUSTRIAL TRIBUNAL (CENTRAL) AT AHMEDABAD
Reference (ITC) No. 8 of 1981

ADJUDICATION

BETWEEN

Management of Oil and Natural Gas Commission,
Ahmedabad

—First Party

AND

The workman employed under it
In the matter of timings of shift bus.

—Second Party

STATE : Gujarat

INDUSTRY: Oil & Gas Industry

AWARD

This industrial dispute between the Management of Oil and Natural Gas Commission, Ahmedabad and the workmen employed under it has been referred to me for adjudication under Section 7A and Section 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947, by the Central Government, Ministry of Labour Order No. L-30011/7/80-D.IIIB, dated 14th May 1981. The dispute which is referred to this Tribunal for adjudication is stated in the Schedule to the order of reference and it reads:

"Whether the demand of ONGC Rigman and Topman Association Ahmedabad as mentioned in Annexure 'A' is justified? If so, what relief and from what date the employees working in the field are entitled?"

ANNEXURE 'A'

1. That the field staff should wait for two hours over and above the fixed time of arrival of the shift but at restrictive destination.
2. That if the shift bus does not reach the respective destination within two hours, the employees may go home and they will be marked present on the said date.
3. That if the shift bus carrying passengers from site reaches the destination beyond thirty minutes than prescribed time they should be paid overtime allowance as per the existing rules."

2. Before this reference can be heard and finally disposed of, the Chairman of ONGC R and T Association, Ahmedabad Branch, has filed the purshis Ex. 10 which states that cause of action of the above matter does not exist at present on account of completion of drilling at that particular point and further on account of improvement in plying of shift vehicles in time, therefore, it is submitted that the matter may please be allowed to be withdrawn and Union does not press for the demand and withdraw the same. As the demands have been withdrawn the reference is disposed of accordingly. No order as to costs.

Ahmedabad.

Date: 30th September, 1985.

G. S. BAROT, Presiding Officer

[No. L-30011/7/80-D.III (B)y

कां० 5188—औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार गुजरात मिनरल कारपोरेशन लिमिटेड, के प्रबंधन से सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मचारों के बीच अनुबंध में निहित औद्योगिक विवाद में औद्योगिक अधिकरण, अहमदाबाद के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 11 अक्टूबर, 1985 को प्राप्त हुआ था।

S.O. 5188.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Industrial Tribunal, Ahmedabad as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Gujarat Mineral Development Corporation and their workmen, which was received by the Central Government on the 14th October, 1985.

ANNEXURE 'A'

BEFORE SHRI G. S. BAROT, PRESIDING OFFICER,
INDUSTRIAL TRIBUNAL (CENTRAL) AT
AHMEDABAD

Reference (ITC) No. 2 of 1983

ADJUDICATION

BETWEEN

Management of Gujarat Mineral Development Corporation,
Ahmedabad.

AND

The workmen employed under it.

In the matter of increase in wages in respect of the employees of Silica Mines of Gujarat.

STATE: Gujarat

INDUSTRY: Mining

AWARD

This industrial dispute between the Management of Gujarat Mineral Development Corporation, Ahmedabad and the workmen employed under it has been referred to me for adjudication as a Presiding Officer under Section 7A and Clause (d) of sub-section (1) of Section 10 of the Industrial Disputes Act, 1947 by the Central Government Order, Ministry of Labour and Rehabilitation Department's No. L-29011/29/81-D.III (B), dated 3-3-1983.

2. The dispute relates to a single demand which is as under:—

“Whether the demand of Major Mahajan Thangadh for increase in wages in respect of the employees of Silica Mines of Gujarat Minerals Development Corporation Limited, Vavli as mentioned in Annexure A is justified? If so, to what relief and from what date the workmen are entitled?”

ANNEXURE ‘A’

Demand for increase in wages

1. Unskilled Rs. 7.00 per day;
2. Semi skilled Rs. 8.00 per day.
3. Skilled Rs. 10.00 per day.”

3. After the dispute was referred to me a notice for filing statement of claim was given to the Secretary, Major Mahajan Thangadh (in short ‘the Union’) with an instruction to deliver one copy to Gujarat Mineral Development Corporation Ltd., Ahmedabad on or before 16-6-1983. But no statement of claim filed. Therefor the Union was served with a notice that the matter is fixed for hearing on 19-8-1983 but nobody on behalf of the Union remained present on that date. So another notice dated 20-8-1983 was given by Regd. A.D. to the Union informing it that the matter was fixed on 25-10-1983. Ex. 2 is the acknowledgement by the Union. On that date also no one appeared. Then another notice dated 26-10-1983 was sent by Regd. A.D. which was received by the Union vide Ex. 3. In reply to that notice Shri Rasigbhai Mehta General Secretary of the Union requested this Tribunal by his letter dated 18-11-1983 to give another date for hearing as he was busy with some High Court matter. Then another notice was sent by Regd. A.D. fixing hearing on 14-9-1984 and the said notice was received by the Union vide acknowledgement slip Ex. 4. On 14-9-1984 also nobody remained present on behalf of the Union so a final notice was sent by Regd. A.D. informing it that if it did not remain present on 23-11-1984 and file statement of claim, the matter will be proceeded ex-parte. This notice was received by the Union vide acknowledgement slip Ex. 5. In spite of several notices, the Union remained absent all throughout. Not only that but also it did not care to file even the statement of claim. The representative of Gujarat Mineral Development Corporation used to remain present. Hence, it appears that the Union is not interested in the demands made by it. The reference is, therefore, dismissed for want of prosecution. No order as to costs.

Ahmedabad.

Date: 4th October, 1985.

G. S. BAROT, Presiding Officer.

[No. L-29011/29/81-D.II(B)]

कां०आ० 5189—औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार, सिंगरैनी कोलरीज कम्पनी लिमिटेड, रामगुंडम डिविजन-2, ब्रह्मचर गोंदवारी के प्रबंधन से सम्बन्धित विवादों और उनके कर्मचारियों के बीच अनुबंध में निहित औद्योगिक विवाद में औद्योगिक अधिकरण, आन्ध्र प्रदेश, हैदराबाद के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 14 अक्टूबर, 1985 को प्राप्त हुआ था।

S.O. 5189.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947) the Central Government hereby publishes the award of the Industrial Tribunal, Andhra Pradesh, Hyderabad-500001 as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Singareni Collieries Company Limited, Ramagundam Division-II, Post Office Godawari and their workmen, which was received by the Central Government on the 14th October, 1985.

ANNEXURE ‘A’

BEFORE THE INDUSTRIAL TRIBUNAL (C) ANDHRA PRADESH AT HYDERABAD

PRESENT:

Sri J. Venugopala Rao,
Industrial Tribunal.

Dated the Seventeenth day of September, Nineteen hundred and eighty-five.

Industrial Dispute No. 40 of 1985

BETWEEN

The workmen of M/s Singareni Collieries Company Limited, Ramagundam Division-II, P.O. Godavarikhani, Karimnagar Dist. (A.P.)

Petitioner

AND

The Management of M/s Singareni Collieries Company Limited, Ramagundam Division-II, P.O. Godavarikhani, Karimnagar Dist. (A.P.)

...Petitioner

APPEARANCES:

Workmen not present.

Sri K. Srinivasa Murthy, Miss G. Sudha, Sri H. K. Saigal, Advocates for the Management.

AWARD

The Government of India, Ministry of Labour, New Delhi vide reference No. L-21011/1/85-D.II.B, dated 31.5.1985, referred and Industrial Dispute existing between the employees in relation to the Management of M/s. Singareni Collieries Company Limited, Ramagundam Division-II, Post offices: Godavarikhani, Karimnagar (A.P.) and their workmen in respect of the matter specified in the schedule hereto annexed under Clause (d) of Sub-Section (1) of Section 10 of the Industrial Disputes Act, 1947 (Act No. 14/1947) to this Industrial Tribunal constituted under Section 7(A) of the said Act, with these specification that this Tribunal shall submit its Award within a period of 6 months in accordance with sub-section 2(A) of Section 10 of the said act, for adjudication.

“Whether the management of M/s Singareni Collieries Company Limited, Ramagundam Division-II, P.O. Godavarikhani, District Karimnagar (A.P.) are justified in denying confirmation as Rope Splicer (Cat. V) and payment of officiating allowance to S/Shri Avula Mogalla and Padala Rajajiah, Trammers and Gudla Ramaswamy, Hauler Khalasi of GDK 6A Incline? If not, to what relief are the are the workmen concerned entitled?”

Soon after the receipt of the reference, notices were issued to the parties. The workmen were directed to file their Claims Statement on or before 6-7-1985, while serving a copy of it on the opposite side. On 6-7-1985 when the case was called, the workmen and their representative were absent. No Claims Statement was filed. Sri H. K. Saigal, Advocate on behalf of the Management present and sought time for filing Vakalat. Time was extended for filing Claims Statement till 24-7-1985. On 24-7-1985, the workers union sent a telegramme requesting to postpone the I.D. to 14-8-1985, so time was extended till 14-8-1985. On 14-8-1985, General Secretary of workers union Sri Durgajiah was present and time was extended for filing claims statement till 17-9-1985. On 17-9-1985 when the case was called the workmen and their representative called absent. No representation was made on their behalf. S/Shri K. Srinivasa Murthy, H. K. Saigal and Kum. G. Sudha Advocates filed Vakalat on behalf of the Management. Sri Saigal the Learned Advocate on behalf of the Management submitted that the matter is compromised by the workmen and the Management, and filed the compromised dated 21-8-1985, praying this Tribunal

to pass an Award in terms of the compromise. When questioned by the Court about the presence of the worker and his representative for recording the compromise, Sri H.K. Saigal, Advocate on behalf of the Management submitted that the matter is already settled. The workers representative and the Management representative signed the compromise and prayed to record the compromise and pass an award in terms of the compromise. Since the worker and his representative are not present before me, and considering the statement of the learned Advocate for the Management, I accept the same to be true and correct and the terms of the compromise are recorded. When the workmen and their representative are not present, it is presumed that the matter is settled out of Court. In view of the above an Award is passed in terms of the compromise and a copy of the compromise is enclosed to the Award.

Given under my hand and the seal of this Court this the 17th day of September, 1985.

J. VENUGOPALA RAO, Industrial Tribunal
Appendix of Evidence

NIL
[No. L-21011/1/85-D.III(B)]

BEFORE THE INDUSTRIAL TRIBUNAL (CENTRAL)
HYDERABAD

In the matter of I.D. 40/85

Between the workmen S.C. Engineering Workers Union
AND

The Management, S. C. Company Limited, Godavarikhani

.....Respondent
.....Petitioner

The Government of India referred the following dispute for reference, the Schedule of which is extracted hereunder:

SCHEDULE

"Whether the Management of M/s Singareni Collieries Company Ltd. Ramagundam Division-II, Post Office Godavarikhani, Dt. Karimnagar (AP) are justified in denying confirmation as Rope Splicer (Cat. V) and payment of Officiating Allowance to S/Sri Avula Mogali and Padala Rajaiah, Trammers and Gudla Ramaswamy, Hauley, Khalasi of Gdk 6A Inc? If not, to what relief are the workmen concerned entitled."

The Management contended that there is already one Rope Splicer, Cat-V in 1st Shift and two Rope Strikers in Cat-III in 2nd and 3rd Shifts at Gdk. No. 6A Incline as is the case with other mines. The workmen in dispute who were already enjoying Cat-IV were allowed to work as Strikers as and when necessary. Since the workmen are already enjoying Cat. IV which is one Category higher, the question of any promotion has not arisen.

The Union pointed out that the workmen would be satisfied if their designation is changed as Rope Striker in Cat-III and they are prepared for reduced Cat-III, since it is appropriate Category of Rope Strikers.

The Management agreed to consider the workmen as Rope Strikers in Category-III in view of the requirement in Gdk. 6B Incline which is a part of the same mine. The same will be given effect to from 1st September 1985.

Since the dispute is thus resolved, the Union agreed to withdraw the dispute from the Tribunal. Both the parties requested the Tribunal to pass an Award in ID 40/85 in terms of the above understanding.

This is in full and final settlement of the issue in dispute. Representing the Management.

V. P. MEHTA, General Manager,
Ramagundam Divn.-I.

V. GOPALA SASTRI, Dy. C.P.M. RG I.
S. MOHSIN, ALI, Dy. PM., RG-I
Dt: 21-8-1985.

Witnesses;
V. C. N. MURTHY, Steno Dy PM (P) RG
M. SRINIVASA, GK Gr. II, O-DyPM(P)RG

Representing the workmen:
J. DURGAIAH General Secy. Singareni Mine and
Eng. Workers Union
GDK

CH. NARAYANA REDDY, Secy. SMEWU, GDK.

कां० प्र० 5190.—औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1957 का 14) की धारा 17 के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार अग्निगुण्डाला लीड प्रोजेक्ट और हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, बन्दासा मॉड के प्रबंधन में सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मचारों के बीच अनुबंध में निर्दिष्ट औद्योगिक विवाद में औद्योगिक अधिकरण, अहमदाबाद के पंचाट की प्रकाशन करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 15 अक्टूबर, 1985 को प्राप्त हुआ था।

S.O. 5190.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Industrial Tribunal, Andhra Pradesh, Ahmedabad, as shown in the Annexure, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Agnigundala Lead Project, Hindustan Zinc Limited, Bandalamottu and their workmen, which was received by the Central Government on the 15th October, 1985.

ANNEXURE

BEFORE THE INDUSTRIAL TRIBUNAL (CENTRAL)
ANDHRA PRADESH, HYDERABAD

Present :

Shri J. Venugopala Rao, Industrial Tribunal.

Dated the Ninth September, Nineteen Hundred and eighty five

Industrial Dispute No. 36 of 84

BETWEEN

The Workmen of Agnigundala Lead Project, Hindustan Zinc Ltd., Bandalamottu, Guntur District (A.P.)
.....Petitioner

AND

The Management of Agnigundala Lead Project, Hindustan Zinc Ltd., Bandalamottu, Guntur District (A.P.)
.....Respondent

APPEARANCES :

Shri C. Suryanarayana, Advocate for the workmen.

S/Sri Srinivasa Murthy, H. K. Saiga and Kumari G. Sudha, Advocates for the Management.

AWARD

The Government of India, Ministry of Labour and Rehabilitation by Order No. L-29012/58/83-D. III(B) dated the 3rd May, 1984, referred an Industrial Dispute existing between the Employers in relation to the Management of Agnigundala Lead Project, Hindustan Zinc Limited, Bandalamottu and their workmen in respect of the matters specified in the

schedule hereto annexed under Section 7A read with clause (d) of Sub-Section 1 of Section 10 of the I.D. Act, 1947 for adjudication the following issues :—

"Whether the action of the management of Agnigundala Lead Project, Hindustan Zinc Ltd., Bandalamottu, in awarding the punishment of discharge to Sri M. Venkateswarlu, Driller-cum-Blaster is justified? If not, to what relief is the workman concerned entitled?"

Soon after the receipt of the reference it was registered as I.D. No. 36/84. The workmen were directed to file their claim Statement on 1-8-1984, while serving a copy on the opposite side. The workmen filed their claims statement on 17-6-85 and the Management filed its counter on 18-7-1985 and the matter was posted for enquiry from time to time. The workmen have raised a preliminary objection on 2-2-1985 about maintainability of the reference. Exs. W1 and M1 were marked by consent. The dispute was adjourned to 23-2-1985 for filing documents and for evidence if any. On 23-2-1985, Ex. M2 was marked by consent and the dispute was adjourned to 6-3-1985 for filing documents if any and evidence by either side. From 6-3-1985 the dispute was adjourned to 11-4-1985; "from 11-4-1985 to 4-5-1985", and from 4-5-1985 to 6-6-1985. The workmen filed M.P. No. 7/85 on 2-2-1985 raising preliminary objection. The management filed counter to it. The matter was contested and argued at length by the parties on 2-8-1985 and reserved for orders. This Tribunal by its detailed order dated 9-9-1985 in M.P. No. 7/85 held that the reference is bad. In view of the above orders, I hold that the reference is bad and it is terminated. A copy of the order passed by this Tribunal is annexed to this Award.

Given under my hand and the seal of this Tribunal this the 9th day of September, 1985.

V. VENUGOPALA RAO

Appendix of evidence

NIL

J. VENUGOPALA RAO, Industrial Tribunal
BEFORE THE INDUSTRIAL TRIBUNAL (CENTRAL)
AT HYDERABAD

Present :

Sri J. Venugopala Rao, Industrial Tribunal.

Industrial Dispute No. 36 of 1984

BETWEEN :

The Workmen of Agnigundala Lead Project, Hindustan Zinc Ltd., Bandalamottu, Guntur District (A.P.)
.....Petitioner.

AND

The Management of Agnigundala Lead Project, Hindustan Zinc Ltd., Bandalamottu, Guntur District (A.P.)

APPEARANCES :

.....Respondent

Shri C. Suryanarayana, President, All India Telegraph Engineering Employees' Union Line Staff & Class IV, Andhra Circle and Advocate for the workmen.
Sarvasri K. Srinivasa Murthy, H. K. Saigal and Kumari G. Sudha, Advocates for the Management.

ORDER

A preliminary objection (M.P. No. 7/85) is taken by the Workmen Counsel contending that a settlement was reached on 25-8-1983 between the Management Agnigundala Lead Project on one hand and Hindustan Zinc Workers Union representing the workmen of the said Project on the other when the Assistant Labour Commissioner (Central) Vijayawada presided over the said settlement. According to the workers counsel it is agreed to award to Sri M. Venkateswarlu, Driller-cum-Blaster a punishment other than dismissal, discharge or removal from service, as such, the Management could not have validly requested for reference of the matter.

It is their case that the workman never requested for such reference. Therefore the reference made to this Tribunal in this matter is not liable for adjudication and it is incompetent reference. Therefore the workers counsel contended that to hold that there is no industrial dispute and to declare that the matter referred for adjudication is not liable for adjudication.

2. On the other hand the Management contended that the workmen concerned cannot question the validity of the reference and that the High Court was pleased to dismiss the Writ Petition No. 7820/83 filed by the workman and the matter was referred for adjudication to this Tribunal. Further it is pointed out that there is no settlement entered into between the Management and the Workers Union and defined under Section 2(p) of the I.D. Act. According to them unless there is a valid settlement it cannot be said that Central Government cannot make a reference. It is also pointed out that the appeal on behalf of the Management should be heard. Chairman-cum-Managing Director is situated at Udaipur and the Officers who had discussions with the workers who expressed their opinion cannot bind the appellate authority with their views. It is pointed out that the appellate authority is an independent one and it cannot be dictated by its subordinate staff as what to do and how to dispose of the appeal. Therefore the matter is properly referred for adjudication.

3. The point for consideration now is whether there is settlement reached between the Management of Agnigundala Lead Project on one hand and Hindustan Zinc Workers Union represented by workmen with in the meaning of Section 2(p) of the I.D. Act or not?

4. The admitted facts are as follows. On 5-12-1982 there was an alleged incident involving M. Venkateswarlu and one M. K. Murthy, Assistant Engineer, Mining at the main gate at the Agnigundala Lead Project premises. On 5-12-1982 it is said that the Manager, Mines placed M. Venkateswarlu under suspension and domestic enquiry was conducted and superintendent, Mines by his order dated 6-3-1983 dismissed the said Venkateswarlu from service. It is said that the Trade Union sponsored the cause of Venkateswarlu and raised an industrial dispute. It is said that after protracted efforts a settlement was arrived at as shown in the annexure stating that there was a strike from 9-3-1983 in the said project and the Management informed the Assistant Labour Commissioner Central about the possibility of resolving the issue and requested the said conciliation officer to visit the Mines and then the said Assistant Commissioner of Labour visited the Mines as a result of which the following understanding is reached on 25-3-1983.

1. The Union regretted for what has happened w.e.f. 9-3-1983 and both the Union and Management condemned violence from any corner.

2. Since Shri M. Venkateswarlu, Driller-cum-Blaster Assistant, has not exhausted the provision of appeal, it is agreed that Mr. Venkateswarlu will appeal to the Chairman-cum-Managing Director which in turn will be forwarded by the Superintendent of Mines for decision within 15 days. The Management has agreed to award punishment other than dismissal, discharge or removal from service.

3. The Union will call off the strike which commenced on 9th March, 1983 with immediate effect.

4. Such of those employees who have got leave may apply for leave for the period of their absence from 9-3-1983 and Management will sanction the same in case if they are entitled for any leave. In all other cases, the employees will be treated as on leave without pay.

5. In view of this understanding, the employee who filed a case in the court of Munsif-Magistrate, Viukonda and the Management which filed a suit for vacation of injunction order in the Court of the Subordinate Judge, Narasaraopet, will withdraw the cases.

6. No disciplinary action will be taken against the workers who are on strike for their absence.

It is signed by Sri R. M. Sinha and others for the Management and Ch. L. Kanta Rao and others for the workers in the presence of Assistant Labour Commissioner (Central), Vijayawada who also signed it.

5. The relevant point which is the matter of preliminary objection is this "The Management has agreed to award punishment other than dismissal, discharge or removal from service." From this it is contended that there is a settlement as contemplated under Section 2(p) of the I.D. Act and the said worker M. Venkateswarlu should be awarded any other punishment other than dismissal, discharge or removal from service and therefore the action of the management in awarding the punishment of discharge whether justified as referred to this Tribunal under reference is not liable for adjudication, as there cannot be such discharge basing upon the said understanding arrived in the presence of conciliation officer. It is admitted that the workers filed a Writ Petition W.P. No. 7820/83 in the High Court of Andhra Pradesh questioning the alleged violation of the settlement. The Honourable High Court was pleased to dismiss the same and referred the matter to this Tribunal. The High Court observed as follows :

"Once a reference is made, the proper forum to settle the dispute is the very same Tribunal before whom a reference is pending and the petitioner is free to raise this objection and the Tribunal is bound to enquire the same".

Hence it is observed there in W.P. 7820/83 that the petition fails and dismissed. Under Section 2(p) of the I.D. Act every settlement is arrangement or agreement, but every arrangement or agreement is not settlement. Agreement or arrangement will not be a settlement merely because the parties to the dispute choose to call it a settlement and the arrangement or agreement is incorporated in a memorandum of settlement signed by the parties, it must decide some part of the dispute or some matter in dispute or decided to resolve or effect the dispute in some manner or other or provide for some act or for bearance in relation to the dispute on the part of the party or parties to the dispute. In *Indian Tobacco Company Ltd., v. Govt. of West Bengal* [1971 (1) I.L.J. page 89]. The Act contemplates two types of settlement i.e., a settlement arrived at in the course of conciliation proceedings and (2) a written agreement between the employer and the workmen arrived at otherwise than in the course of conciliation proceedings. In the case of settlement arrived at in the course of conciliation proceedings nothing more needs to be done either by the employer or by the workmen to invest the documents with the attributes of a settlement; but, in the case of the settlement arrived at otherwise than in the course of conciliation proceedings, some further steps are necessary to invest with the attributes of settlement in terms of the Act. These stages are 1) the agreement is to be signed by the parties in such manner as may be prescribed in the rules and 2) a copy of the agreement is to be sent to an officer authorised in this behalf by the appropriate Government and the conciliation officer. Unless these steps are taken, any by-partite agreement signed between the parties will not be a valid settlement under the Act. In *Tata Chemicals Ltd. v. Their workmen* (1978 LIC page 637) and *New Standard Engineering Company Ltd. v. Abhayankar* (1978 LIC page 712). *Jagtrakhan Collieries vs. Industrial Tribunal* (1975), I.L.J. 163(S.C.).

6. Before the introduction of the Amending Act of 1956 it was held that a private settlement or agreement did not bring to an end an industrial dispute so as to disentitle the appropriate Government to make a reference of such dispute. However, subsequent to amendment, even a private agreement amounts to a settlement if the requirements of the definition clause are met. "Settlement" as defined in the Act makes it impossible that an agreement by acquiescence and without writing being signed could come into existence between the parties. See *Cooper Engineering Ltd. vs. D. M. Aney* (1971), LLJ 613. A record note of discussions is not a settlement in *AIR India Cabin Crew Association v. AIR India* [1981 (II) LLJ, Page 306].

7. In the instant case annexure enclosed to this objection memo would show that these minutes of discussions were held in the presence of the Conciliation Officer and Conciliation Officer (Labour Commissioner Central Government) and he is also a party to the said discussions and the understandings finally reached. A careful perusal of the entire annexure which is filed by workers is not disputed to be arrived at by the management representatives. But it is contended stating that such an understanding cannot be reached by the Officers nullifying the Appellate Authority namely Chairman-cum-Managing Director's right to decide the appeal. It is a matter for the Chairman-cum-Managing Director to question his subordinates how they arrived at such an understanding on 25-3-1983 without his consent or tacit approval. But the authority who suspended the worker and the authority who is also party to the very enquiry proceedings against the worker were parties to these discussions and understandings arrived at and it is done and arrived at in the course of the conciliation proceedings before the Conciliation Officer (Central). So it is a settlement practically arrived at in the course of conciliation proceedings and nothing more is needed to be done either by the employer or by the workmen to invest the document with the attributes of settlement, it comes within the scope of Section 2(p) of the I.D. Act. The settlement affects the rights and obligations of the employer and his workmen and a clear understanding of what constitutes a valid settlement is arrived at. Therefore, a careful perusal of the annexure would show that the understanding finally reached on 25-3-1983 is an arrangement arrived at in a conciliation proceedings and therefore it binds the Management and it cannot go back. The Management has agreed before the Conciliation Officer by its representatives signing it that they are prepared to award punishment other than dismissal, discharge or removal from service to the said M. Venkateswarlu, Driller-cum-Blaster of the Agnigudafa Lead Project. The Managements representatives should not have agreed that M. Venkateswarlu would appeal to the Chairman Managing Director, which in turn will be forwarded by the Superintendent of Mines and that the award of punishment will be other than dismissal, discharge or removal from service without the Chairman's tacit consent. They are responsible officers of the management. It must be seen that this understanding was reached on 25-3-1983. The strike of workers was going on in fact from 9-3-1983 and the failure report was sent by the Conciliation Officer on 18-3-1983. At that stage on 25-3-1983 the Management "requested" that Assistant Commissioner of Labour (Central) for resolving the issues including the reinstatement of M. Venkateswarlu, Driller-cum-Blaster". Therefore Clause 2 of the understanding which is signed by both sides in the presence of the Conciliation Officer is an arrangement arrived at in the conciliation proceedings within the meaning of Section 2(p) of the I.D. Act and it is a settlement. The arguments of the Management that the settlement should be entered into in a prescribed form as per the rules and forms will arrive in the case of written agreement between the employer and workman arrived at otherwise than in the course of a conciliation proceedings. In the instant case the parties concerned to the dispute discussed about the reinstatement of M. Venkateswarlu also and the arrangement was arrived at in the course of the conciliation proceedings before the authorised officer. Therefore, it had all the requirements of a "settlement" within the meaning of Section 2(p) of the I.D. Act. Thus on a careful consideration of the entire matter, I hold that the Central Government reference awarding punishment of discharge to M. Venkateswarlu Driller-cum-Blaster by the Management is not justified and there is no necessity of such a reference and I further held that the Management is bound by the Settlement arrived at under Section 2(p) of the I.D. Act and the question of discharge or dismissal or removal from service of M. Venkateswarlu Driller-cum-Blaster by the Chairman-cum-Managing Director or whoever it may be representing the Management did not arise. The Management is bound by the settlement. This arrangement which became a settlement as contemplated under Section 2(p) of the I.D. Act since the Superintendent of Mines, the Manager of the Mines, Senior Engineer, Mining the Administrative Officer were the signatories for the Management and they held

discussions about the reinstatement of M. Venkateswarlu and signed the arrangement dated 25-3-1983 after protracted discussions from 9-3-1983 onwards for about 17 days. If they had not obtained the prior permission of the Chairman-cum-Managing Director for arriving at for such a settlement having invited the workers for such discussions along with conciliation officer. It is a serious matter of indiscipline against them by the Chairman-cum-Managing Director. But it cannot be said that it had no ingredients of the settlement or that the said settlement virtually written down the effect-iveness of the appeal before the Appellate authority i.e., Chairman-cum-Managing Director. Any settlement or arrangement is a process of settling points in dispute between the contesting parties so as to effect their rights and obligations to some extent for industrial peace. The arrangement dated 25-3-1983 is a clear settlement arrived at in the course of conciliation proceedings and therefore the Management cannot go back. It is not a settlement arrived at as a result of fraud, misrepresentation or undue influence. It is not even contended to that effect before me. Hence the reference is bad and not maintainable and the settlement is binding upon the Management. Even now the Chairman-cum-Managing Director may apply his mind to award a punishment other than dismissal, discharge or removal from service on M. Venkateswarlu. Driller-cum-Blaster as per the understanding arrived at on 25-3-1983 and discharge order passed against the said worker is illegal. The reference is therefore bad and rejected and terminated and the objection of the Workers Council in M.P. No. 7/85 is upheld.

Dictated to the Stenographer, transcribed by him, corrected by me and pronounced in the open Court, this the 9th day of September, 1985.

Sd/-
Industrial Tribunal

APPENDIX OF EVIDENCE

Witness examined For the Management
for the workmen. —NIL—

— NIL —

Documents marked for the Workmen

1. Ex. W.1 By consent.—True Copy of the High Court order in WP No. 7820/83 dt. 15-11-1983 of High Court of judicature of Andhra Pradesh at Hyderabad.

Documents marked for the Management

1. Ex. M1 By Consent.—Memorandum of dismissal dt. 6-3-83.
2. Ex. M2 By Consent.—Standing orders for the workmen employed in Agnigundala Lead Project under the control of Hindustan Zinc Limited.

By Consent.

J. VENUGOPALA RAO, Industrial Tribunal
[No. L-29012/58/85-D.II(B)]
R. GUPTA, Desk Officer

नई दिल्ली, 1 नवम्बर, 1985

कां० 5191—औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 17 के अनुसूचन में, केन्द्रीय सरकार द्विचक्रित रेलवे मैनेजर वेस्टर्न रेलवे के प्रबंधन में सम्बद्ध नियोजकों और उनके कर्मचारों के बीच अनुबंध में निहित औद्योगिक विवाद में केन्द्रीय सरकार औद्योगिक अधिकरण, नं० 2 बम्बई के पंचाट को प्रकाशित करती है, जो केन्द्रीय सरकार को 15-10-85 को प्राप्त हुआ था।

New Delhi, the 1st November, 1985

S.O. 5191—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the award of the Central Government Industrial Tribunal-2, Bombay, as shown in the Annexure in the industrial dispute between the employers in relation to the Divisional Railway Manager, Western Railway, Rajkot and their workmen, which was received by the Central Government on the 15th October, 1985.

ANNEXURE

BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL
TRIBUNAL NO. 2, BOMBAY
CAMP : AHMEDABAD

Reference No. CGIT-2/54 of 1985

PRESENT :

Shri M. A. Deshpande, Presiding Officer.

PARTIES :

Employers in relation to the management of Divisional
Railway Manager, Western Railway, Rajkot

AND

Their workmen.

APPEARANCES :

For the Employers—Shri P. R. Kuttu, A.P.O. Western
Railway, Rajkot.

For the Workmen—Shri B. K. Sharma, Branch Secretary,
Pachim Railway Karmachari Parishad.

INDUSTRY : Railways

STATE : Gujarat

Ahmedabad dated the 23rd September, 1985

AWARD

By their order No. L-41011(33)/84-D.II(B) dated 2-8-1985 the following dispute has been referred for adjudication under Section 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947 :—

“Whether the action of the Railway Administration, Rajkot Division in not paying the wages for duty period from 1-4-1984 to 28-4-1984 to Shri Dursingh and 12 others is justified? If not, to what relief are the workmen entitled?”

2. As the order of reference stands the dispute relates to wages for the period from 1-4-1984 to 28-4-1984 during which period it is alleged that S/Shri Dursingh and 12 others had actually worked but received no wages despite demand from time to time.

3. In the statement of claim the workmen have detailed the facts leading to the present dispute and as already stated it centres around the fact of non-payment of wages for the relevant period.

4. Today on behalf of the Railway, the Divisional Railway Manager (Establishment) Rajkot has filed a ‘precipi’ whereby it is stated that the wages as demanded shall be paid to the workmen and suitable steps have also been taken to arrange the payment to the parties concerned. In view of this writing the workmen are getting the relief as claimed by them.

5. The only apprehension of the Union is that there may be further delay in making the payment, to guard against which, in the award I am passing on the strength of the writing I am adding a clause that the payment of wages shall be made by the Railways within a period of 20 days from the date of this Award lest the amount shall carry interest at 9 per cent from the date of order of reference till the payment.

Award accordingly.

M. A. DESHPANDE, Presiding Officer
[No. L41011/33/84-D.II(B)]
HARI SINGH, Desk Officer

